



होसिल रहा तीन

अनुवादक : योगेन्द्र चौधरी

# हासिल रहा तीन

विमल मित्र



गणित का पहाड़। आंखों के आसू का पहाड़ हो सकता है तो गणित का पहाड़ नहीं हो सकता क्या ? कम से कम रणवीर को तो यही प्रतीत होता है। इतने-इतने रुपयों का हिसाब करते-करते पहाड़ के किस कोने में वह पछाड़ खाकर गिर पड़ता है कि उसे कोई होगा ही नहीं रहता। तब लाघों रुपये उस पर छलांग लगाकर कूद पड़ते हैं। रुपयों की लहरों में तब वह डूबने-उतराने लगता है।

एक हिसाब ज्यों ही खत्म होता है कि दूसरा हिसाब उसके सर पर आकर सवार हो जाता है। तब उसकी साँसें धुटने लगती हैं।

उस दिन उसी तरह कुछेक बाउचर आकर उसके सर पर सवार हो गए। रणवीर उस वक्त नाश्ता करने जा रहा था।

मैनेजर ने कहा, “नहीं ; इसकी जरूरत आज ही है...”

रुपयों की राशि पर दृष्टि पड़ते ही रणवीर चौंक पड़ा। सबको खत्म करने में कम से कम पांच-छह घण्टे लगेंगे। किन्तु दिन हिसाब करते-करते ही उसके पिता ने आखिरी साँस ली थी। आदमी के जीवन में हिसाब का कोई अंत है ! दण्ड, पल, दिन, क्षण, मुहूर्त। हर दण्ड, हर पल रणवीर का पिता हिसाब किया करता था : पाप का हिसाब, पुण्य का हिसाब, लेन और देन का हिसाब। हर रोज वह हिसाब से खर्च किया करता था। पिता को हमेशा यही भय बना रहता था कि आय की बनिस्वत कही व्यय की राशि स्यादा न हो जाए। लेकिन वह जितना ही हिसाब करता हिसाब के तल-प्रदेश में उतना ही खो जाता करता था।

याद है, बहुत बार आधी रात में रणवीर को नींद जब टूट जाती तो वह अपने बाप को फर्श पर बँठा, लालटेन की रोशनी में हिसाब के घाते में खोना हुआ पाता।

मां को गुस्सा हो आता । बोलती, 'इतना तुम क्या हिसाब करते हो ?' बाबूजी कहते, 'हिसाब बगैर किए कहीं काम चल सकता है ! तुम लोग इतने-इतने प्राणी हो, खाओगे क्या ?'

इस पर मां कुछ नहीं कहती थी । वह मन ही मन हंसती थी ।

बाबूजी समझ जाते थे और कहते थे, 'अभी बात तुम्हारी समझ में नहीं आ रही है । जब मैं मर जाऊंगा तब समझोगी...'

दुनिया के दूसरे-दूसरे आदमी जब आराम के साथ मौज से जीवन जीते थे तब बाबूजी हिसाब में तल्लीन रहते थे : एक के बाद दो, दो के बाद तीन, तीन के बाद चार । मगर रणवीर ने कभी ऐसा नहीं पाया कि बाबूजी का हिसाब मिल गया हो । बाबूजी का हिसाब हालांकि कभी मिलता नहीं था लेकिन मिलाने के लिए वह प्राणपण से कितनी ही कोशिशें करते थे !

बाबूजी बीच-बीच में ऊबकर मां से कहते थे, 'जानती हो, कल हिसाब नहीं मिला...'

जिस तरह बाबूजी का हिसाब नहीं मिलता था, मां का हिसाब भी कभी मिलता था ? मां का भी अपना एक हिसाब था । छुटपन से बड़े होने तक मां को भी बहुत सारा हिसाब-किताब करना पड़ा है । मां ने हिसाब करके किसी दिन इसकी चाह की थी कि बड़े घर में उसकी शादी होगी, एक बड़े परिवार की वह गृहिणी होगी, विध्यात सन्तान की मां बनेगी ।

लेकिन मां का सारा हिसाब कब गड्ढमड हो गया, क्यों गड्ढमड हो गया, इसकी जानकारी खुद मां को भी नहीं है । फिर भी वह मन ही मन जिन्दगी-भर हिसाब-किताब में ही डूबी रही ।

एकाएक मैनेजर आकर उपस्थित हुआ ।

"कहो बस, कितना कर चुके ? हरीअप, हरीअप...क्या सोच रहे हो ?"

फर्श पर मोटा गलीचा बिछा है । मैनेजर के पैरों की आहट कानों में पहुंच नहीं पाई थी । अगर पहुंचती तो वह सावधान हो जाता । फिर भी जल्दबाजी करने से ही क्या हिसाब मिल जायेगा ? मैनेजर का अपना हिसाब क्या मिल चुका है ? रणवीर के बाप का हिसाब नहीं मिला, मां के साथ भी यही बात रही । हो सकता है रणवीर को स्वयं का हिसाब भी न मिले । रणवीर जिस मुहल्ले में रहता है उस, नीलमणि हालदार लेन, के बाशिन्दों में से किसी

का हिसाब मिला है !

रणवीर फिर से हिसाब करने बैठ गया । गणित का पहाड़ । आंघों के आंगू का जबकि पहाड़ हो सकता है तो गणित का पहाड़ नहीं हो सकता ? इतने रूपों का हिसाब-किताब करते-करते रणवीर के सर पर लाखों रुपये छलांग लगाने लगे । तब वह रूपों की लहरों में डूबने-उतराने लगा । पांच साते पैंतीस, पैंतीस का पांच, हासिल रहा तीन...

सबमुच नीलमणि हालदार लेन के तमाम बागिन्दे हिसाबी हैं, घास तोर से उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के तीनमंजिले के बागिन्दे । पहली मंजिल पर भवदुलाल अपने बाल-बच्चे, पत्नी और सास के साथ रहता है । दूसरी मंजिल पर हिमाशु सरकार अपनी पत्नी, पुत्र और पुत्रवधू के साथ और तीसरी मंजिल पर हरिपद चक्रवर्ती ।

हर कोई हिसाब के साथ चलता है । जन्म से मृत्यु तक जीवन को हिसाब के बाड़े के अन्दर चारों तरफ से बांधकर रखना चाहता है । और यह क्या सिर्फ़ उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के बागिन्दे ही चाहते हैं ? इस मकान का मालिक भी तो हिसाबी ही है । मकान-मालिक भी हिसाब करता है : पांच साते पैंतीस, पैंतीस का पांच, हासिल रहा तीन...

दरअसल ईश्वरप्रसाद बनडनिया इस मकान का मालिक है । आदिकाल से लेकर अनन्तकाल तक वह इस मकान का मालिक बना रहेगा । उममें कोई उलट-फेर नहीं होने जा रहा है । कम से कम इन तीनों किरायेदारों का यही मत है । कब ईश्वरप्रसाद बनडनिया ने यह मकान बनवाया था, उसका हिसाब किसी को भी मानूम नहीं है । जब कलकत्ता कॉरपोरेशन नहीं बना था, शायद उससे भी पहले का यह मकान है । हो सकता है उसके बाद का हो । लेकिन उस हिसाब के खाते को कौन देखने जाता है, कौन सरे-जमीन तहकीकात करने जाता है । इतना वस्तु किसके पास है ? इससे तो बेहतर है कि बीते दिनों के पापों को दूर करो, जिससे अधिक लाभ हो ।

बीते दिनों के पापों को दूर करने के लिए ही राधा बुआ मकान



मंजिले से बाहर निकली थी। सुबह नल पर 'गंगा-स्नान' करने के बाद रास्ते पर ज्यों ही पांव रखने जा रही थी कि सामने सर्वनाश आकर खड़ा हो गया। थोड़ा और आगे बढ़ते ही दुबारा नहाना पड़ता।

विलकुल दरवाजे के ऊपर ही कई जूठे केले के पत्ते और मिट्टी के टूटे प्याले पड़े थे।

यह दृश्य देखते ही राधा बुझा चिहुंक उठी, "ओ नेड़ी, नेड़ी..."

भवदुलाल उस समय सोकर जगा था और अखबार पर आंखें दौड़ा रहा था। किस मिनेमाघर में कौन-सी तस्वीर चल रही है, उसकी सूची मन-ही-मन स्थिर कर रहा था। अचानक सास की पुकार सुनते ही चंचल हो उठा।

राधा बुझा की बेटी उस वक्त विस्तर से उठने-उठने को थी। मां की पुकार सुनते ही उठने जा रही थी। भवदुलाल ने कहा, "उफ, सुबह-सुबह तुम्हारी मां का शोर-शरावा शुरु हो गया।"

उसके बाद अपनी पत्नी की ओर देखता हुआ बोला, "तुम्हें उठने की जरूरत नहीं, मैं देखने जा रहा हूँ..."

इतना कहकर तहमद संभालकर गांठ कसता हुआ कमरे से बाहर निकल पड़ा। सोने के कमरे के सामने छोटा-सा आंगन है। आंगन का तीन-चौथाई हिस्सा कोयले-उपलों से भरा है। उसी के बीच ईंट से घिरे एक स्थान में थोड़ी-सी मिट्टी डालकर तुलसी का विरवा रोपा गया है। असल में उस स्थान को सास ने तुलसी के विरवे के लिए ही तैयार किया था। मगर धीरे-धीरे कई मिर्च के पांघे रोप दिए थे। उसके बाद भी जब जगह बच गई तो उसमें लौकी की बेल लगा दी थी। लौकी की वह बेल बढ़ते-बढ़ते खंडहरनुमा दीवार पर चढ़ गई थी। बाहरी आदमी जिससे लौकी की फुनगी तोड़ न ले इसके लिए राधा बुझा ने आंगन के बीच एक मचान बनाया था। उस बेल में लौकी नहीं फलती थी परन्तु पत्ते उगते थे। पत्तों की भरमार की वजह से आंगन की रोशनी और हवा रुक गई थी और आंगन में गन्दगी रात-दिन जमती जा रही थी। बुझा की कारतूत से आंगन में कोई जम जाने के कारण चलना-फिरना मुश्किल हो गया था। एक बार पांव फिसल जाने के कारण नेड़ी को तीन महीने तक खाट पर पड़ा रहना पड़ा था। विधाता को जितना क्रोध है वह राधा बुझा की लड़की पर ही है। लड़की शरीर से हड्डी-कट्टी है। हर साल बच्चा पैदा

करती है, देखकर यह कोई कह नहीं सकता है ।

यह तो एक परेशानी हुई । उस पर सास की बाजें । सास की बाजें बात के यत्राय जैसे तीर हों । भोर होते न होते तीर छोड़ना शुरू कर देती है ।

“क्या हुआ मां ? क्या हुआ ?”

राधा बुआ ने दामाद को आते देखकर अपनी जवान में तीखापन लाकर कहा, “अभागों की अबल तो देखो, अपनी ही बांछों से देख लो । अभागों की और हमरी जगह नहीं मिली, मेरे मकान के मामने ही जूठन, मछली का कांटा और चोइयां फेंक दी हैं । अब मैं क्या करूं, बेटा ?”

भवदुलाल ने भी देखा । सवा चार फुट की गली है । उसमें अगर जूठन और कांटे पड़े हो तो आदमी जाए तो कैसे !

“आपने छू लिया क्या ?” भवदुलाल ने कहा ।

राधा बुआ बोली, “मानूम नहीं, बेटा, हुआ है या नहीं, याद नहीं है । फिर भी मन में जबकि खटका पैदा हो गया तो कपड़ा फीच लेना ही बेहतर रहेगा...”

भवदुलाल ने कहा, “एक बार तो आप नहा चुकी हैं...”

“सो क्या अभी नहायी हूं ? वह तो सवेरे चार बजे हो । चार बजे नहा-घोकर, पूजा-पाठ करके निकल रही थी । अब बताओ तो सही, किम ग्रह के चक्कर में फंम गई !”

“किसने फेंका है ?” भवदुलाल ने पूछा ।

राधा बुआ बोली, “और कौन फेंकेगा. ? यह मरानर पाकिस्तानियों की करतूत है ।”

भवदुलाल समझ गया, ‘पाकिस्तानी’ का अर्थ हुआ तीमरी मंजिल का किरायेदार हरिपद बाबू । हरिन्द चक्रवर्ती ।

“सारा दोष मकान-मालिक का है, वह हरामी कहां-कहां से गंवारों को लाकर इस मकान में घुमाता है और परेशानी डीनी पडती है हम लोगों को । मैं तो तुम्हें संबडों बार कह चुकी हूं, भव, कि मकान-मालिक से एक बार जाकर कहो कि भले आदमी के मुहल्ले में पाकिस्तानियों को क्यों बसाये हुए हो ! जिन लोगों की शुद्ध-अशुद्ध का ज्ञान नहीं, उन लोगों के साथ रहने से किसी का जात-धर्म कही टिक सकता है ?”

मंजिलि ने बाहर निकली थी। सुबह नल पर 'गंगा-स्नान' करने के बाद रास्ते पर ज्यों ही पांव रखने जा रही थी कि सामने सर्वनाश आकर खड़ा हो गया। थोड़ा और आगे बढ़ते ही दुवारा नहाना पड़ता।

बिलकुल दरवाजे के ऊपर ही कई जूटे कले के पत्ते और मिट्टी के टूटे प्याले पड़े थे।

यह दृश्य देखते ही राधा बुआ चिहंक उठी, "ओ नेड़ी, नेड़ी..."

भवदुलाल उस समय सोकर जगा था और अखबार पर आंखें दौड़ा रहा था। किन्न गिनेगाधर में कौन-सी तस्वीर चल रही है, उसकी सूची मन-ही-मन स्थिर कर रहा था। अचानक सास की पुकार सुनते ही चंचल हो उठा।

राधा बुआ की बेटी उस वकत विस्तर से उठने-उठने को थी। मां की पुकार सुनते ही उठने जा रही थी। भवदुलाल ने कहा, "उफ, सुबह-सुबह तुम्हारी मां का गोर-गरावा शुरू हो गया।"

उसके बाद अपनी पत्नी की ओर देखता हुआ बोला, "तुम्हें उठने की जरूरत नहीं, मैं देखने जा रहा हूँ..."

इतना कहकर तहमद संभालकर गांठ कसता हुआ कमरे से बाहर निकल गया। सोने के कमरे के सामने छोटा-सा आंगन है। आंगन का तीन-चौथाई हिस्सा कोयले-उपलों से भरा है। उसी के बीच ईंट से घिरे एक स्थान में थोड़ी-सी मिट्टी डालकर तुलसी का विरवा रोपा गया है। असल में उस स्थान को माग ने तुलसी के विरवे के लिए ही तैयार किया था। मगर धीरे-धीरे कई मिर्च के पोधे रोप दिए थे। उसके बाद भी जब जगह बच गई तो उसमें लौकी की बेल लगा दी थी। लौकी की वह बेल बढ़ते-बढ़ते खंडहरनुमा दीवार पर चढ़ गई थी। बाहरी आदमी जितने लौकी की फुनगी तोड़ न ले इसके लिए राधा बुआ ने आंगन के बीच एक मचान बनाया था। उस बेल में लौकी नहीं फलती थी परन्तु पत्ते उगते थे। पत्तों की भरमार की वजह से आंगन की रोशनी और हवा रुक गई थी और आंगन में गन्दगी रात-दिन जमती जा रही थी। बुआ की फरतूत से आंगन में काई जम जाने के कारण चलना-फिरना मुश्किल हो गया था। एक बार पांव फिसल जाने के कारण नेड़ी को तीन महीने तक घाट पर पड़ा रहना पड़ा था। विघाता को जितना क्रोध है वह राधा बुआ की लड़की पर ही है। लड़की शरीर से हड्डी-कट्टी है। हर साल बच्चा पैदा

करती है, देखकर यह कोई कह नहीं सकता है।

यह तो एक परेशानी हुई। उस पर सास की बातें। मास की बातें यात के  
घमाय जैसे तीर हों। मोर होते न होते तीर छोड़ना शुरू कर देती है।

“क्या हुआ मा ? क्या हुआ ?”

राधा बुआ ने दामाद को आते देखकर अपनी जवान में तीखापन लाकर  
कहा, “अभागों की अबल तो देखो, अपनी ही आंखों से देख लो। अभागों को  
और दूसरी जगह नहीं मिली, मेरे मकान के सामने ही जूठन, मछली का काटा  
और चोड़ियां फेंक दी हैं। अब मैं क्या करूं, बेटा ?”

भवदुलाल ने भी देखा। सवा चार फुट की गली है। उममें अगर जूठन  
और फांटे पड़े हो तो आदमी जाए तो कैसे !

“आपने छू लिया क्या ?” भवदुलाल ने कहा।

राधा बुआ बोली, “मात्रम नहीं, बेटा, छुआ है या नहीं, याद नहीं है।  
फिर भी मन में जबकि घटका पैदा हो गया तो कपड़ा फीच लेना ही बेहतर  
रहेगा...”

भवदुलाल ने कहा, “एक बार तो आप नहा चुकी हैं...”

“सो क्या अभी नहायी हू ? वह तो सबेरे चार बजे ही। चार बजे नहा-  
धोकर, पूजा-पाठ करके निकल रही थी। अब बताओ तो सही, किम यह के  
चक्कर में फंम गई !”

“किसने फेंका है ?” भवदुलाल ने पूछा।

राधा बुआ बोली, “और कौन फेंकेगा ? यह मरामर पाकिस्तानियों की  
करतूत है।”

भवदुलाल समझ गया, ‘पाकिस्तानी’ का अर्थ हुआ तीमरी मंजिल का  
किरायेदार हरिपद बाबू। हरिपद चक्रवर्ती।

“सारा दोष मकान-मालिक का है, वह हरामी कहा-कहा से गंवारी को  
लाकर इस मकान में घुमाना है और परेशानी डोनी पड़ती है हम लोगों को।  
मैं तो तुम्हें सैरुओं वार कह चुकी हूँ, भय, कि मकान-मालिक से एक वार जाकर  
कहो कि भले आदमी के मुहल्ले में पाकिस्तानियों को क्यों बसाये हुए हो ! जिन-  
लोगों को शुद्ध-अशुद्ध का ज्ञान नहीं, उन लोगों के साथ रहने से बिघी का  
ग्रमं कहीं टिक सकता है ?”

भवदुलाल ने कोई जवाब न दिया। ज्यादा बोलने से तीसरी मंजिल में रहने वालों के कान में बातों की भनक पहुंचेगी और फिर झगड़े की शुरुआत हो जायेगी। और जैसे ही झगड़े की शुरुआत होगी, हो-हल्ला, शोरगुल के चलते कोए और चील तक पास नहीं फटकेंगे।

भवदुलाल जल्दी-जल्दी घर के अन्दर चला आया। उसके बाल-बच्चे उस वक्त भी फर्श पर बिछे विस्तर पर बेतरतीब ढंग से लेटे थे। इसके बाद झोली लेकर बाजार जाना है। उसकी पत्नी उस वक्त लेटी हुई देह मरोड़ रही थी।

भवदुलाल ने कहा, "बाजार जा रहा हूँ, वहाँ से क्या-क्या लाना है?"

नीरजा ने कोई उत्तर नहीं दिया।

"क्यों जी, तुमने तो कुछ बताया ही नहीं। आज तुम्हारी तबीयत कैसी है?"

इस पर भी नीरजा चुपचाप पड़ी रही।

"अगर तुम बताओगी नहीं तो मैं समझूँ कैसे? मुझे डाक्टर से सब कुछ बताना जो पड़ेगा।"

फिर भी नीरजा चुप की चुप पड़ी रही, अपने बदन को एक बार मरोड़कर बोली, "बाप रे, अब सहा नहीं जाता..."

इसके बाद वह फिर से करवट बदलकर लेट गई। भवदुलाल तब तक कमीज पहन चुका था। इसके बाद भेज की दरवाजा खोलकर उसने मनीवंग को अपनी जेब के हवाले किया। अचानक ऊपर से शंखध्वनि आने लगी। हरि बाबू के घर में शंख बज रहा था। उसकी लड़की की शादी हो रही है। तो उस लड़की की भी आखिर शादी हो ही गई!...

"ओह, तुम यहां आ चुके हो! ए भव, जाकर देखो तो कौन आया है!"

सिर झुकाए ज्योंही आंगन के पार पहुंचा, दरवाजे पर बगल में छाता दबाए मृष्टिघर को पाया।

"क्यों मृष्टिघर, तुम इस वक्त?"

मृष्टिघर एक अजीब प्राणी है। उसके चेहरे पर हर क्षण हंसी तैरती रहती है। आज के जमाने में जिनमें क्रोध नाम की चीज का अस्तित्व नहीं है। मृष्टिघर वैसे ही विरल प्राणियों में से एक है। बड़ा ही विनयी, बड़ा ही मृभापी। सीधा-सादा और परोपकारी।

“जी, एक काम से आया हूँ।”

“मानूम है, तुम काम के आदमी हो, काम रहे बिना तुम नहीं आते हो।” भवदुलाल ने कहा, “किराया—किराया लेने आए हो ? भगर अबकी मैं किराया नहीं चुकाऊंगा, भाई जान, यह तुम्हें कहे देता हूँ। पहले तुम्हारे मालिक को इस बात का फंमला करना पड़ेगा तब मैं किराया चुकाऊंगा...”

उंगली से जूठे केले के पत्तों के ढेर की ओर इशारा करती हुई राधा बुआ धोली, “यह देखो, जो प्रत्यक्ष ई उससे प्रमाण की क्या जरूरत, तुम अब नकार नहीं सकते हो। देखो, अपनी आंख से देख लो, लोग-बाग ऐसे मे कैसे आना-जाना करें...?”

अब जैसे मृष्टिघर की नजर उधर गई हो।

उसने कहा, “ओह राम-राम, यह तो केले के जूठे पत्ते पड़े हैं !”

“हां-हां, ठीक से देख लो, सखुए का पत्ता नहीं है, न चांस का और न ही अरबी का—केले के जूठे पत्ते हैं, हां केले के। और अगर तुम्हारी आंखों में चर्बी छा गई हो तो अपने मालिक को बुलाकर दिखा दो...”

भवदुलाल अब तक चुप खड़ा था। बोला, “हां, अभागे मकान-मालिक को लाकर दिखा दो।”

मृष्टिघर ने कहा, “इतना विगड क्यों रही है, बुआजी ! मालिक ने तो कहा ही है कि वे किसी दिन आएंगे। हो सकता है कि आज ही आएँ।”

भवदुलाल बोला, “आयेगा ? तुम्हारा मालिक आ रहा है ?”

धुशी में भवदुलाल क्या करे, उसकी समझ में नहीं आया। बोला, “सच-मुच मृष्टिघर, आ रहा है ?”

“हां; यही बात तो कहने के लिए मैं आया हूँ, मेहमान जी ! बुधवार को मालिक की पिट्ठी मिली है। लिखा है : आज तीसरे पहर कलकत्ता आ रहा हूँ।”

फिर भी भवदुलाल को जैसे उसकी बातों पर विश्वास न हुआ हो। धुशी के मारे भवदुलाल की आंखें अधमुंदी-सी हो गयीं। चालीस सालों में पत्राचार कर रहा है, लेकिन आज तक इस मकान के मालिक ईश्वरप्रसाद बनदनियां का चेहरा किसी ने देखा नहीं है।

राधा बुआ लेकिन दुनियादारी में पट्ट है—अपने दामाद भवदुलाल से भी

वधिक पट्ट। इतने दिनों से दामाद की गृहस्थी में आकर वास कर रही है। कितनी ही बार रसीदघर की मरम्मत कराने को कहा है, कितनी ही बार आंगन की काई से फिसलकर भरते-भरते बची है, कितनी ही बार दोमंजिले के बरामदे को दरकी छत से विस्तर पर गंदा पानी गिर चुका है, कितनी ही बार पाखाने की सीढ़ी पर फिसल जाने के कारण टांग मुस्क चुकी है, कितनी ही बार सृष्टिघर को भला-बुरा मुना चुतो है। सृष्टिघर से जब-जब कहा है, उसने बताया है कि अबकी मालिक आ रहे हैं।

लेकिन मालिक कभी नहीं आया।

यहां तक कि इस मकान के किरायेदारों ने ईश्वरप्रसाद इनडनियां का चेहरा तक नहीं देखा है, हालांकि वे ठीक वक्त पर किराया देते आए हैं। सृष्टिघर वक्त पर ही रसीद लेकर हाथिर हो जाता है। रसीद पर दस्तखत बना रहता है।

किरायेदार पूछते, “क्यों जी सृष्टिघर, तुम्हारे मालिक तो खूब आए ?”

सृष्टिघर हमेशा यही कहता, “मालिक आयेंगे। मालिक बहुत सारे कामों में फंसे रहते हैं। मालिक कितना काम करें, वावूजी ! अकेले आदमी ठहरे। अबकी मालिक बहुत इंसट में फंस गए हैं, कभी मद्रास जा रहे हैं तो कभी दिल्ली और कभी बंबई...”

ये बातें कोई नयी नहीं हैं। इस मकान के तीनों मंजिल के किरायेदार ये बातें हमेशा से सुनते आ रहे हैं। इन बातों से राधा बुआ को भुलाया नहीं जा सकता है।

राधा बुआ बोली, “मानती हूँ, मकान-मालिक जहन्नुम चला गया, मगर तुम किसलिए हो ? तुम अपनी आंखों से यह सब अनर्थ नहीं देख रहे हो ? मैं भीगे कपड़े से बुआ नहाऊँ और मरूँ ? वेशक यह पाकिस्तानियों की ही करतूत है—तीनमंजिले के पाकिस्तानियों की...”

सृष्टिघर ने कहा, “आहिस्ता से बोलिए, बुआजी, उन लोगों के कान में भनक पहुंचेगी। उनके घर में आज शादी है।”

“क्या कहा ? आहिस्ता से बोलूँ ? क्यों ? तुम्हारे घर में किरायेदार हूँ तो इसका मतलब यह नहीं कि मैंने चोरी की है। मैं क्या तुम्हारे मालिक का दिया खाती हूँ ? मैं तो अपने दामाद की बात तक नहीं मानती हूँ। दामाद

सामने ही खड़ा है, पूछकर देख लो न ! मैं अगर उचित बात कहूँ तो इसमें किसी से डरने की क्या बात है ? दूसरों के घर में लड़की की शादी नहीं होती है ? वह शादी है या निकाह—यह क्या मुझे मालूम नहीं ?”

मृष्टिधर भारी मुनीबत में फँस गया ।

“अजी ओ मृष्टिधर, मृष्टिधर !”

ऊपर से पता नहीं, किसने पुकारा । मृष्टिधर को मानूम है कि किस मंजिल से कौन उसे पुकार रहा है । मृष्टिधर जल्दी-जल्दी जाने की कोशिश कर रहा था । “बलू, बुआजी !” उसने कहा, “ऊपर से कोई भुला रहा है चतूँ...”

“जाने का मतलब ? तुम जा नहीं सकते । पहले इसका फैसला कर दो, फिर जाना । पहले बता जाओ कि इन जूठे पत्तों को कौन फेंकेगा ? यह तो कोई अच्छी बात नहीं है । हम लोग भी तो किराया देते हैं ! कोई मुफ्त में नहीं रहते हैं ।”

“अब किराया मत देना, भव,” राधा बुआ बोली, “देखना है कि हरामजादा मकान-मालिक हमारा क्या कर लेता है !”

मृष्टिधर ने कहा, “बुआजी, मैं तो कह ही रहा हूँ कि आज मालिक आ रहे हैं । वे आकर हरेक की बात सुनेंगे । आपकी छन से पानी गिरता है, यह देखेंगे; आपन में एक नाली बनवा देंगे, जो-जो करते का है, सब करा देंगे ।”

“मालिक की बातें बाद में होंगी । पहले यह तो बताओ, इन जूठे पत्तों का क्या होगा ?”

मृष्टिधर ने कहा, “यही बात कहने तो ऊपर जा रहा हूँ, बुआजी !”

“तुम पर यकीन नहीं किया जा सकता है, भैया,” राधा बुआ बोली, “तुम जाओगे तो लौटकर नहीं आओगे । मैं तुम्हारे नच-नच पहचानती हूँ । तुम्हें अभी फैसला करके ही जाना है...”

अचानक एक छोटी-सी लड़की दीड़ती हुई वहाँ आई ।

“ए मृष्टिधर, जरा ऊपर चलो, बाबूजी तुम्हें बुला रहे हैं ।”

“चलता हूँ, दिटिया !” इतना कहकर मृष्टिधर जब बुआवाज उठे तो राधा बुआ ने आगे बढ़कर रास्ता रोक दिया । बाली, “बा नो नो नो... जवाब देते जाओ ।”

मृष्टिधर को जब कोई जवाब न मूझा तो छंटी लड़की



पूछा, "भुन्नी, तुम लोगों ने जूठे पत्ते नीचे क्यों फेंक दिए हैं ? सामने सड़क पर कूड़ादान का टीन है, वहां नहीं फेंक सकती हो ?"

उस छोटी लड़की के छोटे होने से क्या होगा ! बोली, "हम लोगों ने फेंका है, यह तुमसे किसने कहा ?"

राधा बुआ तैयार थी ही। बोली, "तुम लोगों ने नहीं फेंका है तो क्या भूत-प्रेत फेंकने आए ? अब हम लोग भी तुम्हारे घर में पाखाना फेंकेगे, तब पता चलेगा।"

"ए सृष्टिघर, सृष्टिघर..."

छोटी लड़की ने अब ऊपर की ओर मुंह किए चिल्लाते हुए कहा, "देखिए न वाबूजी, सृष्टिघर आना नहीं चाहता है।"

भवदुलाल ने कहा, "आप चली आइए, मां ! मैं मेहतर बुलाकर साफ करा लूंगा। उन लोगों से बेकार में झगड़ा करने से कोई फायदा नहीं है। आइए, चली आइए..."

बचानक अन्दर से नीरजा की कराह सुनाई पड़ी, "मां, ओ मां..."

"बाप रे, यह तो नेड़ी की आवाज है !" इतना कहकर ज्योंही वह अन्दर गयी, अवाक् रह गई। फिर चिल्लाकर पुकारा, "ए भव, सर्वनाश हो गया ! जल्दी लाओ, जल्दी... ए भव..."

भवदुलाल अब नहीं रुका। एक ही दौड़ में आंगन के अन्दर आया और वहां का दृश्य देखते ही हतप्रभ हो उठा। देखा, नीरजा काई-भरे आंगन में गिरकर कराह रही है। उसका एक पैर नल की ओर है और सिर वरामदे की ओर। जूड़ा खुलकर छितर गया है।

तभी राधा बुआ ने नेड़ी के चेहरे की ओर झुककर पूछा, "ओ नेड़ी, क्या हुआ चिटिया ? कैसे गिर पड़ी ? मैंने उस दिन भव से कहा था, नीरजा औरत है, किसी भी दिन लहू-लुहान हो सकती है। अब हो गई न ! नेड़ी, बे-नेड़ी..."

उसके बाद भवदुलाल की ओर ताकती हुई बोली, "खड़े-खड़े क्या देख रहे हो, बेटा ? अंबिका डाक्टर को बुला लाओ ! पता नहीं, कौन-सा सर्वनाश हुआ।"

भवदुलाल अब खड़ा नहीं रहा, तहमर पहने ही डाक्टर के घर की ओर

दौड़ पड़ा। पर से निकलकर रास्ते पर आते ही देखा, एक ठेले पर भरपूर बांस लदा है। साथ में साज-सज्जा करने वाले आदमी हैं।

देखकर भवदुलाल धगल से जा रहा था, मगर जा नहीं सका।

तीसरी मंजिल का हरिपद चक्रवर्ती हंसता हुआ भवदुलाल की तरफ आया। हरिपद चक्रवर्ती सबके सामने हंसने वाला व्यक्ति नहीं है। जो हंसता नहीं है, उसे देखकर डरने की बात ही है! हरिपद चक्रवर्ती को हंसते हुए देखकर भवदुलाल सहम गया।

“आज जया की शादी है। आज शाम।”

और उमने भवदुलाल की तरफ एक निमंत्रण पत्र बढ़ा दिया।

“ज़रूर आइएगा। मेरा सगा-संबंधी कोई नहीं है आप ही लोगों पर मुझे भरोसा है।”

भवदुलाल की समझ में न आया कि क्या कहे।

हरिपद चक्रवर्ती ने फिर कहना शुरू किया, “बहुत ही जल्दी शादी तय हो गई, साहब, यही वजह है कि पहले सूचना नहीं दे सका। दामाद मन के लायक मिल गया है, इसके अलावा लड़की तो अभी-अभी सत्रह साल की हुई है। आप लोग खड़े होकर शादी करा दें। आपको मानूम ही है कि मैं अकेला आदमी ठहरा, मेरा अपना कोई नहीं है।”

बात सुनते-सुनते भवदुलाल के मन में हुआ कि हरिपद चक्रवर्ती के गाल पर तड़ाकू से एक थप्पड़ जमा दे। यह कोई शादी है भला! न तो किसीने ऐसी दुलहन देखी है और न ऐसा दुलहा ही। भयकर साजिश है।

उस लड़के की बात ही भवदुलाल को बार-बार याद आने लगी। लड़के ने रोते-रोते कहा था, ‘मेरी कोई गलती नहीं है, सर। मैं गरीब आदमी हूँ, मेरे पिताजी कैसर के मरीज हैं, मेरी बहन पोलियो की निकार है। आप लोग कुछ छोड़ दें। मुझे दामा कर दें। मैं इस मुहल्ले में फिर कभी पैर नहीं रखूँगा—’

“अच्छा, तो फिर चलूँ, भवदुलाल बाबू।”

हरिपद चक्रवर्ती चला गया। भवदुलाल की आंखें एक बार झपट गईं। इस आदमी की तकदीर अच्छी है। बंसी लटकी की भी बल्लू जैसी हो गई। चाहे शादी जैसे भी हो, लेकिन उमरी मांग में वह निश्चय ही सक्ता है, बनारसी साड़ी भी पहनाए, ही सक्ता है।

विनिमय होगा, कोहबर सजाया जाएगा। हो सकता है सब कुछ वैसे ही हो, जैसे कि हर विवाह-शादी के मौके पर होता है। किसी चीज को छोड़ा नहीं जाएगा।

ईश्वरप्रसाद ढनढनियां की कुल संपत्ति यह मकान ही नहीं है। इस मकान के किरायेदारों के लिए ईश्वरप्रसाद ढनढनियां को चिन्ता नहीं है। ईश्वरप्रसाद के और भी बहुत-से मकान हैं, और भी जायदाद है। कोई कहता है, ईश्वर-प्रसाद करोड़पति है और कोई कहता है अरवपति—मल्टी-मिलिनायर। दर-असल ईश्वरप्रसाद कौन है, किसी किरायेदार ने उसे नहीं देखा है। वह कभी दिल्ली में रहता है, कभी मद्रास में और कभी बंबई में। फिर कभी लंदन, पेरिस और न्यूयार्क में। समूची दुनिया में उसका कारोबार फैला है। अकेले तमाम कारखार की देखभाल नहीं कर पाता है इसलिए उसने आदमी और दलाल रसे हैं। सृष्टिधर उसी कोटि का एक व्यक्ति है। कालीघाट के इस मकान की देखरेख और किराये की वसूली के लिए ही सृष्टिधर उस किस्म का एक दलाल है।

सृष्टिधर कहता, “मुझसे क्यों कह रही हैं, बुआजी, मैं तो नौकर ठहरा, मालिक आयेंगे तो उन्हीं से कहिएगा...”

राधा बुआ भी उसी किस्म की है। वह कहती, “तुम्हारे मालिक के चेहरे पर झाड़ू माहं! तुम्हारे मालिक के हाथों में वेशुमार काम हैं तो इससे हमें क्या? हम लोग कितने सुख से रह रहे हैं, यह क्या तुम्हारा मालिक एक बार आकर देख नहीं सकता?”

भवदुलाल कहता, “अरे भैया, हम आज हैं, कल नहीं रहेंगे, तुम्हारे मालिक का मकान उसी का रहेगा, हम लोग उसकी जायदाद में हिस्सा बंटाने तो नहीं जा रहे हैं!”

परन्तु सृष्टिधर किसी की बात से गुस्से में नहीं आता है। वह निरासक्त की तरह हंस देता है। कहां किसके रसोईघर की चाल से अन्दर पानी टपकता है, किसके आंगन में काई जम गई है, किसकी दीवार से रेत झड़ गई है, किसके नल में पानी नहीं आ रहा है, किसकी नाली में कूड़ा-कचरा जम गया है—

दौड़ पड़ा। घर से निकलकर रास्ते पर आते ही देखा, एक ठेले पर भरपूर बाल लदा है। साथ में साज-सज्जा करने वाले आदमी हैं।

देखकर भवदुलाल बगल से जा रहा था, मगर जा नहीं सका।

सीसरी मंजिल का हरिपद चक्रवर्ती हंसता हुआ भवदुलाल की तरफ आया। हरिपद चक्रवर्ती सबके सामने हंसने वाला व्यक्ति नहीं है। जो हंसता नहीं है, उसे देखकर डरने की बात ही है! हरिपद चक्रवर्ती को हंसते हुए देखकर भवदुलाल सहम गया।

“आज जया की शादी है। आज शाम।”

और उसने भवदुलाल की तरफ एक निमंत्रण पत्र बढ़ा दिया।

“डरू आइएगा। मेरा सगा-संबंधी कोई नहीं है आप ही लोगो पर मुझे भरोसा है।”

भवदुलाल की समझ में न आया कि क्या कहे।

हरिपद चक्रवर्ती ने फिर कहना शुरू किया, “बहुत ही जल्दी शादी तय हो गई, साहब, यही वजह है कि पहले सूचना नहीं दे सका। दामाद मन के लायक मिल गया है, इसके अलावा लड़की तो अभी-अभी सत्रह साल की हुई है। आप लोग खड़े होकर शादी करा दें। आपको मानूँ ही है कि मैं अकेला आदमी ठहरा, मेरा अपना कोई नहीं है।”

बाग मुनते-मुनते भवदुलाल के मन में हुआ कि हरिपद चक्रवर्ती के गाल पर तड़ाकू से एक पप्पड़ जमा दे। यह कोई शादी है भला! न तो कितनी ऐसी दुलहन देखी है और न ऐसा दुलहा ही। भयंकर साजिश है!

उस लड़के की बात ही भवदुलाल को बार-बार याद आने लगी। लड़के ने रोते-रोते कहा था, ‘मेरी कोई गलती नहीं है, सर! मैं गरीब आदमी हूँ, मेरे पिताजी कंठर के मरीज हैं, मेरी बहन पोलियो की शिकार है। आप लोग मुझे छोड़ दें। मुझे धमा कर दें। मैं इस मुहल्ले में फिर कभी पैर नहीं रखूँगा...’

“अच्छा, तो फिर चलूँ, भवदुलाल वाबू...”

हरिपद चक्रवर्ती चला गया। भवदुलाल की बाँवें एक बार उस तरफ बढ़ीं। इस आदमी की तकदीर अच्छी है। वंती लड़की की भी अन्ततः शादी हो गई। चाहे शादी जैसे भी हो, लेकिन उसकी माँग में वह सिद्ध भरेगा तो। हो सकता है, बनारसी शादी भी पहनाए, हो सकता है शंख भी बजाए; दृष्टि-

विनिमय होगा, कोहबर सजाया जाएगा। हो सकता है सब कुछ वैसे ही हो, जैसा कि हर विवाह-शादी के मौके पर होता है। किसी चीज को छोड़ा नहीं जाएगा...

ईश्वरप्रसाद ढनढनियां की कुल संपत्ति यह मकान ही नहीं है। इस मकान के किरायेदारों के लिए ईश्वरप्रसाद ढनढनियां को चिन्ता नहीं है। ईश्वरप्रसाद के और भी बहुत-से मकान हैं, और भी जायदाद है। कोई कहता है, ईश्वर-प्रसाद करोड़पति है और कोई कहता है अरवपति—मल्टी-मिलिनायर। दर-असल ईश्वरप्रसाद कौन है, किसी किरायेदार ने उसे नहीं देखा है। वह कभी दिल्ली में रहता है, कभी मद्रास में और कभी बंबई में। फिर कभी लंदन, पेरिस और न्यूयार्क में। समूची दुनिया में उसका कारोबार फैला है। अकेले तमाम कारबार की देखभाल नहीं कर पाता है इसलिए उसने आदमी और दलाल रखे हैं। सृष्टिधर उसी कोटि का एक व्यक्ति है। कालीघाट के इस मकान की देखरेख और किराये की वसूली के लिए ही सृष्टिधर उस किस्म का एक दलाल है।

सृष्टिधर कहता, "मुझसे क्यों कह रही हैं, बुआजी, मैं तो नौकर ठहरा, मालिक आये तो उन्हीं से कहिएगा..."

राधा बुआ भी उसी किस्म की है। वह कहती, "तुम्हारे मालिक के चेहरे पर झाड़ू मारूं ! तुम्हारे मालिक के हाथों में वेगुमार काम हैं तो इससे हमें क्या ? हम लोग कितने मुख से रह रहे हैं, यह क्या तुम्हारा मालिक एक बार वाकर देख नहीं सकता ?"

भवदुलाल कहता, "अरे भैया, हम आज हैं, कल नहीं रहेंगे, तुम्हारे मालिक का मकान उसी का रहेगा, हम लोग उसकी जायदाद में हिस्सा बंटाने तो नहीं जा रहे हैं !"

परन्तु सृष्टिधर किसी की बात से गुस्से में नहीं आता है। वह निरासक्त की तरह हंस देता है। कहां किसके रसोईघर की चाल से अन्दर पानी टपकता है, किसके आंगन में काई जम गई है, किसकी दीवार से रेत झड़ गई है, किसके नल में पानी नहीं आ रहा है, किसकी नाली में कूड़ा-कचरा जम गया है—

सब कुछ सृष्टिधर ध्यान से देखता है। सभी को सांतवना देता रहता है। कहता है, "अहा-हा ! सचमुच आप लोगों को षड़ी ही तकलीफ होती है..."

हरिपद चक्रवर्ती तीसरी मंजिल का किरायेदार है। पाकिस्तान बनने के बहुत पहले से ही इस मकान में है। लगभग तीन पुरखों से इस मकान में रहता आया है। लेकिन पाकिस्तान बन जाने के बाद से ही राधा बुआ बर्गरह ने उसके साथ एक विशेषण लगा दिया है। दोप में दोप इतना ही है कि वे लोग वारिणाल के आदि-बाशिन्दे हैं।

सृष्टिधर कहता था, "ठहरिए, अबकी मालिक आ जायें तो उन्हें एक बार यहा ले आऊंगा। आप लोगों में से जिनको जो कुछ कहना है, कहिएगा।"

हरिपद चक्रवर्ती कहता था, "तुम्हारे मालिक यहां क्यों आयेंगे, सृष्टिधर ? वे ठहरे बड़े आदमी—करोड़पति ! वे भला गरीबों का दुख क्यों समझेंगे ?"

"नहीं-नहीं; क्या कह रहे हैं आप ! मेरे मालिक बड़े ही सीधे-सादे हैं। दया का अवतार समझिए। कितना ही दान-दान करते रहते हैं।"

हरिपद चक्रवर्ती कहता था, "सो दया के अवतार रहे ! हम लोगों का दुःख कोई नहीं समझेगा, सृष्टिधर ! हमें सिर्फ तुम्ही पर भरोसा है।"

सृष्टिधर कहता था, "नहीं-नहीं; अबकी देखिएगा, मालिक को जबरन यहां ले आऊंगा।"

इसी तरह सृष्टिधर हर बार सभी को भरोसा दिया करता था। परंतु मालिक कभी नहीं आया। आने का उसे वक्त नहीं मिला। अंततः पहली मंजिल के भयदुलाल ने एक बार छुद्र कारीगर बुलाकर रसोईघर की चाल की मरम्मत करा ली थी, आंगन में जमी कार्डब्लिचिंग पाउडर से साफ करा ली थी और ऊपर से गिराये हुए केले के पत्तों को मेहतर बुलाकर राखदान में डलवा दिया था। अन्ततः तीसरी मंजिल के हरिपद चक्रवर्ती ने भी राज-मिस्त्री की खुशामद-बुरामद कर दीवार में यानू का पलस्तर करा लिया था, नल के कारीगर को बुलाकर नल ठीक करा लिया था और मेहतर बुलाकर नाली के कूड़े-कचरे को कूड़ेदान में फेंकवाने का इन्तजाम किया था।

"मां, सृष्टिधर को बुला साईं हूं।"

"अजो ओ सृष्टिधर, तुम्हारे कारनामे भी अजीब हैं !"

वह मकान रास्ते पर सिर ऊंचा किये पड़ा है। मकान की बाहरी दीवार

में हो सकता है किसी जमाने में पलस्तर हो, मगर अब उसका निशान तक नहीं है। छत के कंगूरे पर पीपल के कई पीधों की जड़ें अड़्डा जमाए हुए हैं। सीढ़ी की रेलिंग टूटी हुई है। संमल-संमलकर ऊपर जाना पड़ता है। जरा-सा भी असावधान रहे तो आदमी एकवारगी पहली मंजिल के पाखाने की छत पर जा गिरे। हरिपद बाबू बहुत दिनों से मृष्टिधर को कह रहे हैं। दूसरी मंजिल के हिमांशु बाबू ने भी कहा है। हिमांशु बाबू बूढ़े आदमी हैं। वह कहते, 'मैं बलड-प्रेणार का गरीब हूँ, मृष्टिधर, किसी दिन हड्डियां टूट जायेंगी और पाखाने की छत पर मरी हुई हालत में पाया जाऊंगा। अपने मालिक से कहकर कोई रास्ता निकालो, मृष्टिधर!'

मृष्टिधर कहता, 'और कुछ दिनों के लिए धीरज रखें, मौसाजी, मालिक सब ठीक-ठाक करा देंगे।'

हिमांशु बाबू कहते, 'अब कब ठीक कराएगा, मृष्टिधर? मेरे मरने के बाद ठीक कराएगा?'

मृष्टिधर आश्चर्य में आकर कहता, 'छि: छि:, आप क्या कह रहे हैं, मौसाजी! इस तरह की मनहूस बातें कान से सुनने से भी पाप होता है।'

इतना कहकर वह उंगलियों से अपने कानों के सुराखों को बंद कर लेता था। उसके बाद उंगलियों को हटाकर कहता, 'आप जैसे आदमी जब तक धरती पर हैं, अभी तक हम लोगों की भलाई है, मौसाजी! आप लोगों के जाते ही सब कुछ घेरे में बदल जाएगा, तब हम लोगों के लिए जीना एक समस्या हो जाएगा।'

मृष्टिधर की बातें बड़ी मीठी हुआ करती हैं। दुनिया में जो भी मृष्टिधर से बातचीत करेगा, उसकी बात सुनकर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। लेकिन बस इतना ही! बात बनाने में मृष्टिधर को कोई पछाड़ नहीं सकता। ईश्वर-प्रसाद बनचनियां इतने दिनों से इस मकान का जो मालिक बनकर बैठा हुआ है, इसका श्रेय मृष्टिधर को ही है।

जीना चढ़ते-चढ़ते धींच रास्ते में ही मृष्टिधर ने कहा, "मौसीजी, मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ।"

हिमांशु बाबू ने कहा था, 'मैं बूढ़ा आदमी हूँ, ज्यादा दिनों तक नहीं टिकूंगा। मकान के हकदार तुम्हीं लोग रहोगे। सगता मकान मिल जायेगा तो मैं चला जाऊंगा। फिर तुम मकान की मरम्मत क्यों नहीं करा रहे हो?'

मृष्टिधर ने कहा था, 'मरम्मत कराऊंगा, मौसाजी! अबकी मरम्मत

कराऊंगा। मालिक ज्यों ही आयेंगे, उन्हें यहां ले आऊंगा। मालिक को अपनी आंखों से सब दिखाऊंगा।'

'तुम दिखाने लगे और तुम्हारे मालिक ही यहां आने लगे...'

मौसीजी रसोईघर से बाहर निकली और अपने सामने मृष्टिघर को पाते ही प्रोध से भभक उठी।

बोली, "कब से तुम्हें पुकार रही हूं! अब तक तुम नीचे क्या कर रहे थे? किस-किस से बातचीत कर रहे थे? लगता है जैसे वे लोग हमसे ज्यादा किराया देते हैं। उन लोगों को तुम निकालकर बाहर क्यों नहीं करते? तीस रुपया किराया देंगे और आज दिखाएंगे! तुम लोग इसी के लायक हो। हम लोग क्योंकि हर महीने पहली तारीख को ही किराया चुका देते हैं, इसलिए तुम यहां धूक तक फेंकने नहीं आते हो..."

मृष्टिघर विनम्रता से झुककर गद्गद स्वर में बोला, "बेटे पर इतना गुस्सा क्यों कर रही हैं, मौसीजी! मैं तो मौसाजी को देखने ही आ रहा था। सुनने में आया है कि उन्हें फिर से दिल का दौरा पड गया है।"

मौसीजी बोली, "अपनी चिकनी-चुपडी बातें छोड़ो, मृष्टिघर। मैं तुम्हें राई-रती पहचानती हूं। राधा बुआ से मिलकर अभी तुम किसे कोस रहे थे? किसकी घजियां उड़ा रहे थे? सोचते हो, मैं ऊपर से कुछ सुन ही नहीं पाती हूं? मैं बहरी हूं? फिर से कहे देती हूं, अगर किसी दिन हमारे नाम से चुगली करेगी तो कूड़ेदान का कचरा फेंकवा दूंगी।"

मृष्टिघर ने कहा, "आप लोगों के बारे में कहा कोई बातचीत हो रही थी!"

"झूठी बात मत बोलो, मृष्टिघर," मौसीजी ने कहा, "तुम्हारी जीभ गल जाएगी।"

"सच कह रहा हूं, मौसीजी, आपके बारे में कोई बात नहीं हो रही थी।"

"फिर झूठ बोलते हो? तो क्या मैंने 'कान' के बदले 'घान' सुना?"

उसके बाद कमरे के सामने जाकर पुकारा, "अजी ओ, सुनते हो, मृष्टिघर क्या कहता है, सुनो! मैंने अपने कानों से सुना कि राधा बुआ हमारी निंदा कर रही है और मृष्टिघर कहता है कि नहीं..."

हिमाचु बाबू बोले, "मृष्टिघर कहां है? उसे यहां बुलाओ, बुलाओ तो..."

मौसीजी ने बाहर आकर पुकारा, "कहां हो जी. मृष्टिघर. अ... बाबू,



मालिक तुम्हें बुला रहे हैं।”

सृष्टिधर ने कहा, “मौसाजी को आप तंग करने क्यों गईं ? अभी वे बीमार हैं।”

अन्दर से बुलाहट आई, “कहाँ हो भाई, सृष्टिधर ?”

“आया मौसाजी, आज आप कैसे हैं ?”

हिमांशु बावू लेटे हुए थे। जल्दी-जल्दी उठकर बैठ गये। बोले, “तुम्हारे मालिक के अत्याचार से मैं कहीं चंगा रह सकता हूँ ? आलतू-फालतू बातें छोड़ो। नीचे का किरायेदार अब तक हमारे खिलाफ क्या-क्या कह रहा था ? हम लोगों ने उनके सिर पर गंदगी फेंकी है ? हमें कोई दूसरा आदमी नहीं मिला कि चुन-चुनकर उनके सिर पर गंदगी फेंकी ? गंदगी फेंकने के लिए हमने पांच रुपये तनखाह पर मेहतर रखा है, मालूम है ?”

मौसाजी सामने ही खड़ी थीं। बोलीं, “मैं तो तुमसे कहती ही आई हूँ कि सृष्टिधर को जैसा तुम सोचते हो, वैसा नहीं है। नंवरी शतान है। तुम्हीं कहा करते थे, ‘ऐसी बात नहीं है, सृष्टिधर भला आदमी है, उसका मालिक ही बुरा है। सृष्टिधर करे तो क्या करे !’ अब लो, समझो।”

सृष्टिधर ने कहा, “नहीं मौसाजी, काली माता की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, मैंने कुछ भी नहीं कहा है।”

“फिर तुम्हारी मौसाजी बना-बनाकर कह रही हैं ?”

बगल के कमरे में उस समय विजय विस्तर पर नींद की बांधों में खोया था। नयी शादी करने के बाद से विजय देर से सोकर उठता है। पत्नी नलघर में थी।

अचानक बगल के कमरे में बहस-मुवाहिसा होते देखकर दौड़ता हुआ वह इस कमरे के अन्दर आया। बोला, “बाबूजी, आप फिर चिल्ला रहे हैं ?”

हिमांशु बाबू ने कहा, “चिल्लाऊंगा नहीं तो क्या मुंह सीकर रहूँ ? मुहल्ले के आदमी आकर गाली दे जायें और मैं बूढ़ा आदमी खामोश पड़ा रहूँ ? तुम लोगों का ध्यान तो कहीं है नहीं, सिर्फ अड्डेवाजी करते हो और खेल देखते रहते हो...”

विजय ने सृष्टिधर की ओर देखते हुए कहा, “देख रहे हो न, बाबूजी बीमार हैं। ऐसे वक्त में कोई किराया मांगने आता है ?”

सृष्टिधर ने कहा, “हुजूर, मैं किराया मांगने नहीं आया हूँ। मौसाजी ने

बुला भेजा, इसीलिए...”

“पहले तुम कमरे से बाहर जाओ। बाहर...”

मां बोली, “तुम उसे बाहर क्यों निकाल रहे हो? मैं उसे फँसला करने के लिए बुला लाई और तुम...”

तब विजय ने मृष्टिघर को ठेलना शुरू कर दिया था। “तुम पहले कमरे के बाहर जाओ, कमरे के बाहर से बात करो।”

“उसे बाहर निकाल देने से क्या फायदा होगा?” हिमांशु बाबू बोले, “तुम लोगों के अत्याचार से, लगता है, शांति से मरना भी मुश्किल है।...अजी ओ, ज़रा पानी दो तो...”

हिमांशु बाबू बिस्तर पर बैठे-बैठे हाँफने लगे।

परंतु उम दाण हिमांशु बाबू की बातचीत किमी के कान में नहीं पहुँची। उधर विजय जितनी तीखी आवाज़ में चिल्ला रहा था, भीतीभी उतनी ही तीखी आवाज़ में चिल्ला रही थीं।

विजय ने कहा, “इतने दिनों से हम कुछ नहीं कहते हैं, इसीलिए न! उन लोगों के घर की चिल्ली हमारे रसोईघर में घुसकर मछली खा जाती है। हमने इसके लिए कुछ कहा है? और तुम यह जो कहते हो कि हमने उनके सिर पर गंदगी फेंकी है, सो गंदगी पर क्या हमारा नाम लिखा है, जो कहेगी कि हमने ही फेंकी है? हम मकान में सिर्फ हमी लोग रहते हैं? तीसरी मंजिल पर आदमी नहीं रहते? वे गंदगी फेंकना नहीं जानते हैं या उनके मकान में गंदगी जमा नहीं होती है...?”

मां ने भी लड़के की बात पर हमी भरी। बोली, “हमने फिर भी पांच रुपये तनखाह पर मेहतर रखा है। तीसरी मंजिल के बांगलों ने हम लोगों की तरह मेहतर रखा है?”

हिमांशु बाबू फिर से चिल्ला पड़े, “अजी ओ, मुनती हो...मेरी छाती कँसी-कँसी तो कर रही है...”

नयी बहू का नहाना-धोना खरम हो चुका था। नलघर के दरवाजे टूटे हुए हैं। यानी बेआबरू हैं। बहुत दिन पहले के बने हैं। पता नहीं, कौन-सी लकड़ी है! हो सकता है कि ईश्वरप्रसाद बनडनियां को भी मानूम न हो। दीमक लग

जाने के कारण बहुत दिनों से नाकाम हो गए हैं। उसी हालत में हमेशा आवरू बचायी जा रही है। परंतु विजय की शादी के बाद कुछ इन्तज़ाम किया गया। नलघर में जाने के बाद नयी बहू के ध्यान में एकाएक आया कि अन्दर जाने से किसी की भी इज़्जत सुरक्षित नहीं रह सकती है।

नयी बहू ने कहा था, "तुम लोगों का वायरूम कैसा है जी ! मैं वहां नहाने नहीं जाऊंगी।"

"अब ज़्यादा दिन इस मकान में रहना नहीं है। बालीगंज मुहल्ले में एक नया फ्लैट लूंगा।" विजय ने कहा था।

सो जब होगा, तब होगा। इसके पहले तो काम चलना चाहिए। मगर दरवाज़ों की कौन मरम्मत करायेगा ? वढ़ई कहां मिलेगा ? विजय ने एक दिन सृष्टिधर को पकड़ा था, "हमारे वायरूम के दरवाज़े टूट गए हैं, मरम्मत नहीं करा दोगे ?"

सृष्टिधर ने कहा था, "करा दूंगा भैया, किसी दिन वढ़ई बुलाकर ठीक करा दूंगा। तीसरी मंजिल का आंगन टूट गया है, सीमेंट मंगाकर उसे ठीक करा दूंगा। उन लोगों के रसोईघर की टाली टूट गई है और पानी चूला है, उसे भी ठीक करा दूंगा। फिर आपके वायरूम के दरवाज़े और ऊपर की रेलिंग..."

सृष्टिधर की मरम्मत कराने वाली चीज़ों की सूची खासी लंबी है : दीवार का पलस्तर, कमरे का फर्श, आंगन की सीढ़ी, रसोईघर की छत, रेलिंग तथा और भी बहुत कुछ। उसका हिसाब उसे ज़वानी याद है। लेकिन मरम्मत कौन कराएगा ?—किरायेदार या मकान-मालिक ?

सृष्टिधर कहता, "मेरे मालिक ही सब करा देंगे, हुज़ूर ! आप लोग चुपचाप बैठकर देखें कि मालिक क्या-क्या कराते हैं। अबकी मालिक आएंगे तो सब ठीक करा देंगे।"

फिर भी चालीस-पचास साल से सिर्फ नाम का ही उल्लेख होता रहा है और मरम्मत नहीं हो रही है। दीवार का पलस्तर, रसोईघर की छत, कमरे का फर्श, आंगन की सीढ़ी, जीने की रेलिंग, वायरूम के दरवाज़े—सभी चीज़ें जैसी पहले थीं अब भी वैसी ही हैं। चालीस-पचास सालों से मरम्मत न होने की वजह से और भी पुरानी होती जा रही हैं, और भी टूट-फूट रही हैं, और भी अधिक जर्जर होती जा रही हैं।

अंत में झल्लाकर विजय एक दिन बाजार से टीन का एक टुकड़ा खरीदकर ले आया, साथ-साथ कांटिया भी ।

उस क्षण उसका बेहरा बिलकुल उतरा हुआ था ।

“इस पट्टे मकान-मालिक से कुछ भी नहीं होगा । खुद अपना हाथ लगाना होगा ।”

और वह हथौड़े से टीन के टुकड़े को सपाट करने लगा । हथौड़े की धोट से दन-दन आवाज होने लगी । पहली मंजिल के भवदुलाल से लेकर तीसरी मंजिल के हरिपद चक्रवर्ती तक दौड़े-दौड़े आये ।

“क्या हो रहा है ? इतनी आवाज किस चीज की हो रही है, सरकार साहब ?”

विजय तब भी हथौड़े से चीट किए जा रहा था ।

रसोईघर के अन्दर से मां दौड़ी-दौड़ी आई और बोली, “अरे विजय, तीसरी मंजिल का बांगाल घमकियां दे रहा है ।”

विजय बोला, “घमकियां देने दो । अपने घर में मैं दरवाजे की मरम्मत कर रहा हूँ, इसमें किसी को दखल देने की क्या जरूरत ?”

“ये लोग दरवाजे के सामने आकर खड़े हैं और तुम्हें बुला रहे हैं ।” मां ने कहा ।

“बुलाने दो ।” विजय ने कहा, “मैं क्या उन लोगों का नौकर हूँ ?”

तब भवदुलाल बाहर से पुकार रहा था, “अरे भाई, अन्दर कौन है ? कौन आवाज कर रहा है ?”

विजय अब खुद को रोक नहीं सका । हाथ में हथौड़ा धामे सीधे सदर दरवाजे के पास चला आया ।

“कौन ?”

“मैं पहली मंजिल में रहता हूँ, ऊपर इतनी आवाज क्यों कर रहे हैं ? मेरे घर में मेरी पत्नी का एडवांस स्टेज चल रहा है...”

तीसरी मंजिल के हरिपदबाबू बोले, “घड़ाम-घड़ाम आवाज करने से लोगों को क्या असुविधा नहीं हो रही है ? बंद कीजिए, अब आवाज करना बंद कीजिए ।”

“आवाज नहीं करूँ, इसके मानी ? आपके हुक्म से ?”

हरिपद चक्रवर्ती जवानी के दिनों में भयंकर दुःसा... किसी जमाने में

वारिशाल में लाठी-छुरा चलाया करते थे। उनका शरीर भी गटा हुआ है। उन्होंने कहा, “आपके बाबूजी कहां हैं—हिमांशु बाबू ?”

“बाबूजी चाहे कहीं रहें। मैं आवाज़ करूंगा, मेरी मर्जी, आप लोग रोकने वाले कौन होते हैं ?”

एक युवक के मुंह से ऐसी बातें सुनते ही भवदुलाल का तेवर चढ़ गया। यही कुछ दिन पहले उसने इस युवक को हाफपैट पहनकर स्कूल जाते देखा है और इसी बीच अब यह ‘योग्य’ हो गया !

“तुम हिमांशु बाबू के लड़के हो न ? तुम्हारा नाम विजय है न ?”

विजय ने कहा, “देखिए, ‘विजय-विजय’ मत कीजिए। आप लोगों को आगाह किये देता हूं। जो कहना है झटपट कहिए और रास्ता नापिए।”

हरिपद चक्रवर्ती ने भवदुलाल के चेहरे की ओर देखा। उसके बाद बोले, “देखा न जनाव, आजकल के लड़के कितने इंपटिनेंट हो गए हैं। मेरा लड़का होता तो मैं दिखा देता...”

वात समाप्त होने के पहले ही विजय बरस पड़ा, “चुप रहिए, ‘इंपटिनेंट’ शब्द जवान पर मत लाइए। हम भी अंग्रेजी जानते हैं। इस मकान में सबके सब हैगर्ड किरायेदार आकर जम गए हैं। जाइए, अपनी लड़की को जाकर भालिए...”

भवदुलाल ने शान्त स्वर में कहा, “उन्होंने कोई अनुचित तो नहीं कहा है, भैया ?”

मगर विजय के बोलने के पहले ही हरिपद बाबू ने कहा, “क्या कहा ? ... मेरी लड़की के बारे में क्या कहा ?”

विजय के हाथ में उस वक्त भी हथौड़ा था। सीना तानकर बोला, “हां, आपकी लड़की की ही बात कह रहा था। इतनी बड़ी बेहया लड़की आपने अपने घर में रख छोड़ी है। शादी करा नहीं पाते हैं तो घर से क्यों निकलने देते हैं ? घर में रोककर रख नहीं पाते ?”

हरिपद बाबू क्रोध से कांपने लगे।

“अरे छोकरे, तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम मेरी जयन्ती पर कलंक लगाओ ?”

विजय बोला, “जो देखा है, कह दिया। हम लोग कोई अंधे नहीं हैं।”

“खबरदार ! हमारी जयन्ती के बारे में अब अगर कुछ बोले कि...”

जातचित के दौरान ही विजय हथौड़ा लिए एक पग आगे बढ़ आया ।

“मैं कहूँ तो दोप,” उसने कहा, “मुहल्ले के लोगो की जबान आप बन्द कर सकते हैं ? वे लोग तो डिठोरा पीट रहे हैं ।”

“फिर जबान खोल रहे हो ? फिर ?”

“बहूँगा तो क्या कर लीजिएगा ?” विजय ने कहा, “मारिएगा ? मारकर देघिए न । देखूँ, आपके बदन में कितनी ताकत है !”

इतना कहकर विजय ने हथौड़े को ऊपर की ओर उठाया और सामने की ओर बढ़ आया ।

लेकिन तभी मां सिर पर घूँघट डाले आगे बढ़ आई । लड़के को कसकर पकड़ा और बोली, “बेटा, तुम नीच आदमी से झगड़ा क्यों करते हो ?”

विजय तब मां के हाथ से छुटकारा पाने की कोशिश कर रहा था । उसने कहा, “छोड़ो, मुझे छोड़ दो, मेरे घर पर आकर ये लोग मुझे बेइश्जत करेंगे और मैं मुह सीकर पड़ा रहूँ ? छोड़ो...”

मा ने बेटे को नहीं छोड़ा । बोली, “किसकी लड़की, किसके लडके के साथ सँर-सपाटा करती है, किसके साथ रात गुजारती है—इसके लिए तुम्हें फिर क्यों ? तुम उसके कौन होते हो ? समझेगी लड़की और समझेगा उसका बाप । तुम नाहक ही सरदरं मोल क्यों लेते हो ?”

विजय ने कहा, “फिर मुहल्ले के लडके मुझसे कहने क्यों आते हैं ? चूँकि हम एक ही मकान के किरायेदार हैं इसीलिए कहते हैं न ! यही वजह है कि मैं तुमसे कहा करता हूँ कि इस मकान को छोड़ दो और चलकर भले आदमियों के मुहल्ले में मकान किराये पर लेकर रहो ।”

“सो चलो,” मां बोली, “मैं जाने से तुम्हें मना करती हूँ ? या कि यह कहती हूँ कि इस घर में बड़ा ही सुख मिल रहा है ? चलो, नाहक दिमाग मत खराब करो । चलो...”

इतना कहकर मा अपने लड़के को खींचती हुई अन्दर ले गई, फिर भव-दुलाल और हरिपद चक्रवर्ती के सामने ही घड़ाम से दरवाजे बन्द कर सिटकनी चढ़ा दी ।

“देधी न हिमांगु बाबू के लड़के की करतूत !”

हरिपद चक्रवर्ती ने भी भवदुलाल बाबू के चेहरे पर आंखें टिका दी । भव-

दुलाल ने कहा, “आप लोग क्योंकि प्रोटेस्ट नहीं करते हैं इसीलिए इन लोगों का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ गया है।”

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, “यह सब असल में मकान-मालिक की ड्यूटी है, साहब ! मकान-मालिक अगर वैसा होता तो हमारे लिए चिन्ता की क्या बात थी ! आप सृष्टिधर से क्यों नहीं कहते हैं ? सृष्टिधर आता है तो हम सभी उससे सलीके से पेश आते हैं । हमारी यही गलती है । हम लोग जेंटलमैन का भाव दिखाते हैं...”

भवदुलाल अब खड़ा नहीं रहा।

पीछे से हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, “मुनिए भवदुलाल बाबू, और एक बात सुनते जाइए।”

भवदुलाल टूटी सीढ़ियां उतरते-उतरते ठिठककर खड़ा हो गया। “क्या ?” उसने पूछा।

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, “आपसे एक बात कहना भूल गया। अपनी नौकरानी से जरा कह दें कि जूठे वरतन मली राख दरवाजे के सामने न फेंका करे।”

“क्या कहते हैं, साहब ? मेरी नौकरानी जूठी राख दरवाजे के सामने फेंकती है ? हर्गिज नहीं, ऐसा हो ही नहीं सकता। मेरी सास इन सबों के बारे में बड़ी पर्टिकुलर रहा करती है। वह जरूर ही किसी दूसरे मकान की नौकरानी है।”

“आप यह कहिएगा तो मैं कैसे मान लूं ?” हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, अपनी आंखों से देखा है।”

“हो नहीं सकता ! आपने गलत देखा है। यह हो ही नहीं सकता है हरिपद चक्रवर्ती भी कम न थे। उन्होंने कहा, “फिर भी आप कहते हो ही नहीं सकता। फिर तो मुझे अपनी आंखों पर ही अविश्वास करना है मैं क्या आपकी नौकरानी को पहचानता नहीं ?”

भवदुलाल को गुस्सा हो आया, “देखिए, जो-सो मत बकि पाकिस्तानियों की तरह गन्दे नहीं रहते हैं। मेरी सास इन सब पर पर्टिकुलर रहती है।”

हरिपद चक्रवर्ती बोले, “हम घटिया लोगों की तरह अपनी बड़ाई

से नहीं करते।”

“जवान संभालकर घातचीत कीजिए, जनाब,” भवदुलाल ने कहा, “कहे देता हूँ।”

“यकीन न हो तो अभी चलिए, घर के सामने चलकर दिखा देता हूँ। अभी तक वहां झोंगा मछली की चोइयां गिरी हुई हैं, अभी तक साफ नहीं किया गया है।” हरिपद चक्रवर्ती ने कहा।

“झोंगा मछली !”

“हां,” हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, “झोंगा मछली की चोइयां ! सड़ी झोंगा मछली की बदनू फँल रही है, मकियाय भिनमना रही हैं।”

“देखिए, झूठ मत बोलिए। आज मेरे घर पर झोंगा मछली आभी ही नहीं है। पता लगाइए, हो सकता है कि आपकी नौकरानी ही ने फँका हो।”

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, “जनाब, हम लोग आप जैसे घटिया लोगों की तरह सड़ी झोंगा मछली के भक्त नहीं हैं। हमारे यहां आज हिलसा मछली आयी है। छुद मैंने बारह रुपये किलो की दर से हिलसा मछली खरीदी है।”

भवदुलाल ने कहा, “आप किसको पैसे की गरमी दिखा रहे हैं ? पैसे की गरमी दिखानी ही है तो किसी दूसरे को दिखाइए। यहां कोई फायदा नहीं होगा।”

“पैसे की गरमी मैं दिखा रहा हूँ या आप ?” हरिपद चक्रवर्ती ने कहा।

“आप जबरदस्ती झगड़ा करना चाहें तो मैं लाचार हूँ। मैंने आपकी तरह कब कहा कि किस दर की कितनी मछली खरीदी है ?”

“फिर आपने क्यों कहा कि आपकी नौकरानी ने रास्ते के सामने मछली नहीं फेंकी है ?”

भवदुलाल को देर हो रही थी। बोला, “जाइए-जाइए, मैं आप से तर्क करना नहीं चाहता। मेरे पास इतना बक्त नहीं है। अगर बड़प्पन ही दिखाना है तो बालीगंज में किराये का मकान लेकर रहिए। यहां साठ रुपये किराये के मकान में मरने के लिए क्यों पड़े हैं ?”

इतना कह चुकने के बाद भवदुलाल वहां रुका नहीं, जल्दी-जल्दी कमजोर खीने को तय करता हुआ नीचे उतरा और घर के अन्दर घुस गया।



ईश्वरप्रसाद इनदुनियां संभवतः ईश्वर की तरह ही अदृश्य रहता है। अन्यथा इतने-इतने लोगों से जब भेंट-मुलाकात होती है तो उससे क्यों नहीं होते ? भवदुलाल दिख पड़ता है, हिमांशु बाबू दिख पड़ते हैं, हरिपद चक्रवर्ती भी दिख पड़ते हैं। राधा बुआ जो मुहल्ले-मुहल्ले में अपनी और पराई बातों का बखान किये चलती है वह तो दिख ही जाती है, मगर उसकी लड़की नेड़ी, जो हर साल बच्चे जनती है और हांफती रहती है, वह भी यदा-कदा दिख जाती है। कभी-कभी वह बच्चे को गोद में लिए गली के नुककड़ पर आकर खड़ी होती है। घर में रहते-रहते जब ऊबने लगती है, तब कपड़ा पहने बाहरी दुनिया को देखने लगती है।

अब तीसरी मंजिल के हरिपद बाबू या हरिपद चक्रवर्ती की बात लीजिए। बाप जी तोड़ मेहनत करने पर एक बहुत बड़े कुनवे का खर्च चलाता है। सुबह उठते ही लड़कों को पढ़ाने किसी मुहल्ले की ओर निकल जाता है। वहां से लौटते ही दो कौर जल्दी-जल्दी निगलकर दफ्तर की ओर दौड़ लगाता है। फिर दफ्तर से सीधे अपने छात्रों के मकान की तरफ चल देता है। एक के बाद दूसरे छात्र के मकान में जाता है। कैसे सूर्य अस्त हो जाता है, इसका पता उसे नहीं चलता।

घर आते ही हड़बड़ाता हुआ कमरे में घुस जाता है। वहां उसे अपने पलंग पर सिनेमा की ढेर सारी पत्र-पत्रिकाएं मिलतीं। पूछता, "ये सब क्या हैं जी ?"

पत्नी कहती, "आंख से तो देख ही रहे हो कि यह सब क्या है, फिर बक-बक क्या करते हो ?"

इतनी देर के बाद हरिपद को होश आया। वह गौर से अपनी पत्नी की ओर ताकने लगा। आज तेवर चढ़ा हुआ लगता है।

"क्या बात है ? क्या हुआ है आज ?"

पुष्प बोली, "क्या हुआ है, यह दूसरी मंजिल के किरायेदार से पूछकर देखो।"

"दूसरी मंजिल के किरायेदार ने क्या किया ? फिर गाली-गलौज किया है ?"

पुष्प बोली, "कहे देती हूं, कल ही तुम्हें दूसरा मकान ठीक करना है, वरना मैं खुदकुशी कर लूंगी।"

पुष्प की ये बातें कोई नयी नहीं हैं। मकान की वायत ही उसने तीस साल के दरमिमान तीस हजार बार खुदकुशी करने की इच्छा जाहिर की है। हर बार उसने हरिपद से घर बदलने को कहा है और हर बार आत्महत्या की धमकी दी है। हरिपद के लिए यह आम तौर से कोई नयापन नहीं रखता है। इसके लिए हरिपद कभी घबराहट महसूस नहीं करता है। इसके अलावा जिसे गुबहू से शर्म तक जी तोड़ परिश्रम करके जीवन जीना पड़ता है, उसके लिए इन सुच्छ बातों से परेशान होना कोई मानी नहीं रखता।

इन बातों पर बिना ध्यान दिए हरिपद पत्र-पत्रिकाओं को उलट-पुलटकर देखने लगा। हर पन्ने पर नंगी तस्वीरें थीं।

“यह सब घर में कौन ले आया? कौन खरीदता है?”

पुष्प बोली, “कौन खरीदता है, यह जानने से तुम्हें कौन-सा पायदा होगा? कोई तुम्हारे पैसे से तो खरीद नहीं रहा है?”

हरिपद की गुस्सा हो आया, “मैं घर का मालिक हूँ। मैं यह नहीं जान सकता हूँ कि लड़के-बच्चे क्या करते हैं?”

पुष्प बोली, “जानकर तुम बड़ा ही उपकार करोगे! दूसरे मकान का आदमी आकर तुम्हारी औरत का जब अपमान कर जाता है, उस समय तुम्हारा ध्यान खिचता है? कहां कौन सिनेमा की पत्र-पत्रिकाएं खरीदकर पैसा बरबाद करता है, उसी तरफ तुम्हारा ध्यान है? पढ़ा है तो अच्छा किया है, खरीदा है तो ठीक किया है...”

“किसने तुम्हारा अपमान किया है, बताओ। बर्गर बतायें मैं कैसे जानूंगा?”

पुष्प बोली, “तुमसे कहकर क्या होगा? तुम्हें कहना या पेड़-पौधों से कहना एक जैसा है। मुझ पर जैसा जोर-जुल्म करते हो, उन लोगों पर करो तो समझू।”

“किसने क्या कहा?—राधा बुआ ने? या हिमाशु बाबू की औरत ने?”

पुष्प बोली, “बुप रहो। मुझसे बात मत करो। छाना ढंकर रख दिया है, धाकर सो रहो। तुमसे मैं बक-बक नहीं कर सकूंगी।”

इसके बाद बात करना ब्यर्थ था। हरिपद ने नल के पास जाकर मुह-हाथ धोया और छाने के लिए रसोईघर में पहुंचा।

“हरिपद बाबू!”

हरिपद बाबू ने तब तक घाली में हाथ नहीं डाला था। वहीं से बिल्लाकर

पूछा, "कौन ?"

हरिपद को आवाज़ पहचानी जैसी लगी । जल्दी-जल्दी भोजन को फिर से ढंक दिया । दरवाज़े की सिटकनी खोलते ही देखा—सामने हिमांशु वावू खड़े हैं । बगल में उनका लड़का है ।

"आपकी लड़की कहां है ? अपनी लड़की को एक वार बुलाइए ।"

हरिपद आश्चर्यचकित हो गया । "मेरी लड़की ? जयन्ती ?" उसने पूछा ।

"हां-हां; एक वार उसको पुकारिए न । विजय को आपकी लड़की ने क्या कहा है, इसका मुकाबला बामने-सामने हो जाये ।"

"मेरी लड़की ने ? आपके लड़के से कहा है ? क्या कहा है ?"

हिमांशु वावू बोले, "सो सब अपनी लड़की के मुंह से ही सुन लीजिएगा ।"

"मगर बात क्या है ? मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा है । मैं अभी-अभी घर आया हूं । अब तक खाना नहीं खाया है । खाने बंठा ही था कि उठकर चला आया ।"

"सो आप खाना खाने जाइए । अपनी लड़की को बुलवा दें । वस, इसी से हो जायेगा ।"

"अपनी लड़की को ? खैर, देखता हूं..."

इतना कहकर हरिपद अन्दर आया । पुष्प उस वक्त विस्तर पर पीठ के बल लेटी हुई थी ।

हरिपद बोला, "अजी ओ, सुनती हो, जया कहां है ? जयन्ती ?"

पुष्प जैसी की तैसी लेटी रही । बात का कोई उत्तर नहीं दिया ।

हरिपद ने सोचा, उसकी पत्नी शायद सो गयी है । देह झकझोरकर पुकारा, "अजी ओ, सुनती हो, दूसरी मंजिल के हिमांशु वावू आये हैं । उनके साथ उनका लड़का है । जयन्ती को बुलाने को कहते हैं । वह कहां है ?"

"उफ, तंग मत करो । जयन्ती कहां है, इसका मुझे क्या पता ? क्यों बुला रहे हैं ?"

हरिपद बोला, "इतनी रात तक वह कहां रहती है ? अब तक घर क्यों नहीं वापस आयी ?"

पुष्प ने एक भी बात का उत्तर न दिया । उसी तरह नींद का स्वांग रचकर लेटी रही ।

“भारी विपत्ति है !” हरिपद बोला, “अभी मैं हिमांगु बाबू से जाकर क्या कहूँ, बताओ तो सही ! भारी परेशानी है । रात का साठे नौ बज गया । अब तक क्यों नहीं लौटी है ? वह कहां जाती है ? सिनेमा देखने गयी है ?”

पुण्य बोली, “कान के मामने भन-भन भन-भन मत करो । अच्छा नहीं लग रहा है । तुम्हारी लड़की कहा गयी है, यह बात वही जानती है !”

“फिर अगर मैं जाकर यही खान कहूँ तो उचित जंचता है ? बताओ तो, वे लोग क्या सोचेंगे । रात दस बजने जा रहा है । इतनी बड़ी लड़की अब तक घर वापस नहीं आयी है ।”

तभी जयन्ती जीने में लीमरी मंजिल की ओर आ रही थी । आते ही अपने सामने दूसरी मंजिल के किरायेदारों को देखकर चकित हो गयी ।

हिमांगु बाबू को शुरू में घबराहट महसूस हुई । एक तो दो सौ साठ प्लड प्रेशर है, उसपर डायबेटीज ! इतनी रात तक वहम करने से चीनी की मात्रा में वृद्धि हो जायेगी ।

शुरू में जयन्ती ने ही बात छेड़ी, “किसे खोज रहे हैं ?”

हिमांगु बाबू ने कहा, “लो, आ ही गई । तुम्हें ही खोजने आया था । तुम्हें ‘तुम’ कहकर संबोधित कर रहा हूँ, कुछ अन्यथा न लेना । तुम्हें मैंने जनमते देपा है ।”

जयन्ती ने उसी तरह जवाब दिया, “इतनी बहानेबाजी की क्या जरूरत ? क्या कहना चाहते हैं, कहिए !”

हिमांगु बाबू ने ऐसी आशा न की थी । कुछ भी हो, है तो उनकी लड़की की हमउम्र ! इतनी घान ! बोले, “मेरे लड़के में तुमने क्या कहा है, बेटी ? लड़के को मैं साथ लिए आया हूँ । तुम्हारे सामने ही मुकाबला हो जाए ।”

जयन्ती की आंखें विजय पर गयी । उसके बाद बोली, “आपके लड़के ने क्या कहा है, यही कहिए न !”

हिमांगु बाबू ने कहा, “अरे, तुम छुप क्यों हो ? उसने तुम्हें क्या कहा है, कहो न !”

विजय बोला, “मैंने तो आपको बताया ही है, बाबूजी ! मुझे गाली-गलीज किया है ।”

हिमांगु बाबू संतुष्ट नहीं हुए । बोले, “क्या गाली-गलीज किया है ?”

“सूअर का वच्चा’ कहा है ।” विजय ने बताया ।

हिमांशु बाबू ने जयन्ती की ओर देखते हुए कहा, “छिः छिः बिटिया, तुमने यह बात कही है ?”

जयन्ती बोली, “आपके लड़के ने मेरे फ्रैंड का इनसल्ट क्यों किया ?”

“तुम्हारे फ्रैंड का इनसल्ट किया है ? तुम्हारा फ्रैंड कौन है ?”

जयन्ती बोली, “अपने लड़के से ही पूछ लीजिए न ! आपका लड़का कोई अंधा नहीं है, उसे सब मालूम है ।”

हिमांशु बाबू ने विजय की ओर मुड़कर कहा, “तुमने इसके फ्रैंड को वेइज्जत किया था ? मुझसे यह क्यों नहीं बताया ?”

विजय बोला, “इसी ने अपने फ्रैंड के सामने पहले मेरा इनसल्ट किया था ।”

जयन्ती बोली, “मैंने पहले वेइज्जत किया है ? झूठ कहीं का !”

विजय चिल्ला उठा, “खबरदार, झूठ मत बोलो ! फिर मैं सब कुछ कह दूंगा । यह मत सोचना कि मुझे कुछ भी मालूम नहीं है । आनन्द राय के साथ तुम रात कहां गुजारती हो, यह भी बता दूंगा...”

जयन्ती क्रोध से तिलमिला उठी । “शटअप...!” उसने कहा ।

हिमांशु बाबू ने देखा, मामला पेचीदा होता जा रहा है । बोले, “तुम लोग चुप रहो । बेकार गुस्से में आ रहे हो ! ठंडे दिमाग से बातचीत करो । आनन्द राय कौन है ?”

“आनन्द राय मेरा फ्रैंड है ।” जयन्ती ने कहा, “विजय उसके पास मेरे खिलाफ शिकायत क्यों करता है ! मैं चाहे जहां और जिस किसी के साथ सैर-सपाटा करूं, इससे आपके लड़के को ईर्ष्या क्यों होती है ?”

तब तक हरिपद आ चुका था । अपनी लड़की के गले की आवाज सुनते ही अन्दर से दौड़ा-दौड़ा आया । आते ही वहां की स्थिति देखकर ठिठक गया । लड़की की ओर ताकता हुआ बोला, “तुम्हें लौटने में इतनी देर क्यों हुई ?”

हिमांशु बाबू ने कहा, “यही बात मैं कह रहा था, हरिपद बाबू । अपने लड़के से मुकाबला करा रहा था । आपकी लड़की ने मेरे लड़के को सूअर का वच्चा कहकर गाली दी है ।”

जयन्ती फुफकार उठी, “कहा है तो ठीक किया है ! पहले तो सिर्फ सूअर का

बच्चा ही कहा है, अब अगर मेरे फ्रैंड का इनसल्ट करेगा तो हरामी का बच्चा कहकर गाली दूंगी।”

हिमांशु बाबू बोले, “देखा न हरिपद बाबू, आपने देखा न ! आपने अपने कान से ही सब सुना।”

हरिपद बोला, “ए जयन्ती, तुम क्या बक रही हो ?”

जयन्ती ने अपने बाप की तरफ मुड़कर कहा, “आप छुप रहिए, बाबूजी, मैंने जो अच्छा सोचा, सो कहा है। गली-रास्ते में यह मेरा पीछा करता रहता है, मालूम है !”

“तुम्हारा पीछा करता है ?”

“हां, मेरा पीछा करता है। मैं बस पर चढ़ती हूं तो यह भी मेरे पीछे-पीछे बस पर चढ़ता है। ट्राम पर चढ़ती हूं तो मेरे पीछे-पीछे ट्राम पर चढ़ता है।”

हिमांशु बाबू ने कहा, “मेरा लड़का तुम्हारा पीछा करते हुए ट्राम पर चढ़ता है ? उसको क्या कोई काम नहीं है कि तुम्हारा पीछा करता चले ? मेरा लड़का सवेरे भात खाकर कॉलेज जाता है और रात में घर वापस आता है।”

“सचमुच कॉलेज जाता है या कॉलेज का नाम बताकर सिनेमा देखने जाता है, इसकी खोज-गबर आपने ली है ?”

“उनका लड़का कॉलेज जाए या जहन्नुम में जाए, इसके लिए तुमको चिन्ता क्यों है ? तुम अपना काम देखो।” हरिपद ने कहा।

अब हिमांशु बाबू अपने लड़के की ओर मुड़कर बोले, “क्यों, तुम चुर क्यों हो ? बताओ, तुम कॉलेज जाते हो या सिनेमा ?”

विजय बोला, “मैं कॉलेज जाता हूँ या नहीं जाता हूँ—इसकी कैफियत मैं इसे नहीं देने जा रहा हूँ। पहले यह बताए कि मुझे गली-गलौज क्यों किया !”

हरिपद बोला, “नहीं, यह कहने से नहीं चलेगा। मेरी लड़की योही गली-गलौज नहीं कर सकती है। तुमने कुछ किया है, जरूर ही उसका पीछा किया है।”

विजय ने कहा, “आपकी कंटेक्टरलेस लड़की का पीछा करूं, मैं ऐसा फुलिया नहीं हूँ।”

“क्या कहा ?” गुम्मे में हरिपद सीना तानकर आगे बढ़ आया।

“बाबूजी, आप छुप रहिए, मैं इन मज्जा खगाती हूँ...”

इतना कहकर जयन्ती आगे बढ़ी और अपने पैर का चप्पल उतारकर विजय के मुंह की ओर जोर से फेंका। पर वह चप्पल जाकर हिमांशु बाबू के मुंह पर लंगा। हिमांशु बाबू वगल में ही खड़े थे। इस तरह की घटना घटित होगी, हिमांशु बाबू ने यह सोचा तक न था।

“क्या कर रही हो, जया ? क्या कर रही हो ?”

हरिपद बाबू का कलेजा थरथराने लगा। लेकिन इसके पहले ही विजय ने एक कांड कर डाला। वह शेर की तरह जयन्ती की गरदन पर कूद पड़ा। उसके बाद वाल पकड़कर घसीटते हुए ज़मीन पर बिठा दिया और बोला, “मेरे बाबूजी को जूते से मारोगी ? मेरे बाबूजी का इनसल्ट करोगी ?”

हिमांशु बाबू तब घटना की आकस्मिकता से आश्चर्य में खोये हुए थे। लेकिन हरिपद बाबू इस कांड को देखकर खामोश नहीं रह पाए। सामने छलांग लगाकर विजय को खींच-खांचकर छुड़ा लेना चाहा। “इतनी हिम्मत ! मेरी लड़की पर हाथ उठाओगे ?”

उस तंग सीढ़ी पर एक भयंकर कांड घटित होने लगा। बाहर शोरगुल सुनकर हरिपद बाबू की पत्नी अपने को रोक नहीं सकी। पुष्प के फानों में सब कुछ पहुंच रहा था। जब वेहद शोरगुल होने लगा, वह सबके सामने आकर उपस्थित हुई। आकर लड़की का हाथ पकड़ा और बोली, “हरामज़ादी लड़की, नीच आदमियों से नीच की तरह झगड़ रही हो ! तुम्हें शर्म नहीं आती ? वे लोग तो नीच हैं ही, इसके चलते हम भी नीचता पर उतर आए ? चलो...”

और वह लड़की को खींचती हुई घर के अन्दर ले आई। उसके बाद हरिपद बाबू को भी पुकारा, “तुम मुंह बाये क्यों खड़े हो ? कमीतों का चेहरा देख रहे हो ? चले आओ...”

इतना कहकर उसने हरिपद बाबू के एक हाथ को पकड़कर जोर से खींचा और भीतर ले गई। उसके बाद सदर दरवाज़े को धड़ाम से बन्द कर सिटकनी लगा दी।

इस किस्म की घटना इस मकान के लिए कोई नई बात नहीं है। पचास-साठ

सालों से इस उनतीस बटे तीन बटे छह नंबर के नीलमणि हालदार लेन के मकान में यही होता आ रहा है ।

नीलमणि हालदार लेन कब बनी है, पता नहीं । विभिन्न मकान की कब्र देघने से पता चलता है कि यह उसके पहले ही बन चुका है ।

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन । इस मकान की ईमारत-प्रसाद बनवनिया ने कब खरीदा था, जिस तरह उंगें खुद इस बात का पता नहीं है, उसी तरह नीलमणि हालदार लेन के बाशिन्दों को भी मालूम नहीं है । कहने का मकसद है कि एक हाथ से दूसरे हाथ में जाय, दूसरा किसी ने कभी देखा तक नहीं है । मकान पहले जंगल था, बाद में ही बसा हुआ रहा । आगे कोई दूसरा आदमी महीने के पहले हाने में थाया करता था, बाद में मृष्टिघर आने लगा ।

एक दिन सुबेरे-सबेरे आकर मृष्टिघर हरेक के नाम में नोटिस दे लाया ।

एकमंजिले के भवदुलाल ने दरवाजा खोलने ही गुछा, "कौन ?"

बाहर से जवाब आया, "मैं हूँ ।"

"अरे, तुम कौन हो, यही बताओ न ! 'मैं' का कोई नाम नहीं है ?"

"मैं मृष्टिघर हूँ ।"

भवदुलाल ने ज्योंही दरवाजा खोला, मृष्टिघर ने धाने चेंद्रे पर भाग्य मुसकराहट लाकर नोटिस आगे बढ़ा दिया—'मैंने धाने में यही इनाम दे दिया, दूबूर !"



सृष्टिधर हूँ—ईश्वरप्रसाद ढनढनियां का कर्मचारी ।”

यह नोटिस लेकर सृष्टिधर जमाना पहले आया था । कब किस तारीख में आया था, किसी को भी याद नहीं है । शास्त्र में ईश्वर के दूत के शुभागमन की बातों का उल्लेख है । यह भी ठीक वैसा ही है । सृष्टिधर ईश्वरप्रसाद ढनढनियां का दूत है । वह दूत आदिकाल से नोटिस लेकर इस मुहल्ले में आ रहा है—उनतीसवटे तीनवटे छह नीलमणि हालदार लेन के वाशिन्दों को नोटिस देने आता है और रुपया लेकर चला जाता है । महीने के बाद महीने, साल के बाद साल गुजर जाते हैं और जन्म, मृत्यु और विवाह का साक्षी यह सृष्टिधर रह जाता है । एकमंजिले के भवदुलाल के मकाने में कभी सन्तान जन्म लेती है, दोमंजिले के हिमांशु वावू के मकान में बीमारी का ऐसा आक्रमण होता है कि अब मरे तब मरे और तीनमंजिले के हरिपद चक्रवर्ती के मकान में विवाह की शंखध्वनि गूँज उठती है । हरेक का साक्षी है यह सृष्टिधर—ईश्वर का जीवन्त दूत !

उस दिन सड़क पर एकाएक जयन्ती से मुलाकात हो गई ।

शुरू में हिमांशु वावू का लड़का पहचान नहीं सका । उसे ठीक सड़क नहीं कहा जा सकता है । सड़क होती तो विजय पहचान ही लेता । गैस की रोशनी या विजली के खंभे के नीचे चेहरा पहचानने में कठिनाई नहीं होती है । इधर चौरंगी से शुरू करके उधर एलगिन रोड के मोड़ तक—पूरव की तरफ के फुट-पाथ तक—जितनी दूर जाया जाए, किसी-न-किसी से मुलाकात होगी ही । कोई किसी लैंपपोस्ट के नीचे खड़ा है । कोई सड़क के बस-ड्राम की ओर चुपचाप ताकता हुआ खड़ा है । मुद्रा ऐसी होती है जैसे किसी के इन्तज़ार में खड़ा हो । शुरू में तुम उससे कुछ भी बात न करो । तुम भी दसेक हाथ फासले पर खड़े हो जाओ । फिर बीच-बीच में लड़की की ओर ताको । देखोगे, वह भी तुम्हारी ओर ताक रही है ।

इस तरह बहुत देर तक ताक-झांक के बाद तुम फासले को कम कर दो । लगभग पांच गज के फासले तक बढ़कर चले आओ । तब वह लड़की या तो उत्तर की तरफ या दक्षिण की तरफ चलना शुरू कर देगी ।

तब तुम पीछे-पीछे चलो ।

विजय ने जेब से सिगरेट निकालकर जलाई ।

देखा, वह लड़की भवानीपुर की तरफ जाने लगी ।

विजय भी चलने लगा ।

बिलकुल निकट आ जाने पर उस लड़की ने मुह घुमाकर देखा । किन्तु देघते ही चींक पड़ी ।

“तुम ?”

और कुछ देर होती तो दोनों व्यक्ति दो दिशाओं में गायब हो जाने । मगर ऐसा नहीं हुआ ।

जयन्ती ने उछलकर विजय की कमीज के कॉलर को पकड़ लिया ।

“भागकर कहां जाओगे ?”

विजय उस क्षण हतप्रभ-सा हो गया था । क्या कहे, समझ में नहीं आया ।

“क्यों, चुप क्यों हो ? लड़की का पीछा करते हो ? मालूम है, अभी तुम्हें पुलिस से पकड़वा सकती हूं ।”

पुलिस का नाम मृगतें ही विजय और ज़ादा घबरा गया । तब तब उधर सड़क के लोग तमाशा देखने के लिए इकट्ठे हो गए थे ।

“क्या हुआ, ब्रिटिया ? इसने क्या किया ?”

जयन्ती बोली, “देखिए न, मैं सड़क से जा रही हूं और वह मेरा पीछा किए चल रहा है । पीछे से आकर मुझे पुकार रहा था ।”

एक आदमी भीड़ को ठेलकर आगे बढ़ आया और बोला, “हटिए, मैं देघता हूं...”

और उसने विजय के बालों को पकड़कर घींचा, “बताओ, तुम कौन हो ? बताओ, तुम क्यों इसके पीछे-पीछे चल रहे थे और क्यों इसे पुकार रहे थे ? कहो, तुम्हारा मतलब क्या है ?”

विजय अपराधी की तरह इतने-इतने आदमियों के बीच सिर झुकाए घड़ा रहा ।

“आप इसका गला छोड़ दें, हम लोग इसकी खातिर करते हैं ।”

इतना कहकर एक व्यक्ति ने जयन्ती को हट जाने के लिए कहा । जयन्ती ने कहा, “रोज-रोज यह मेरा पीछा करता है ।”

उस आदमी ने विजय के गाल पर तडाकू से एक तमाचा जमाकर उसे जमीन पर पटक देना चाहा । लेकिन बगल के आदमी की देह से टकरा जाने के

कारण विजय ने अपने-आपको थोड़ा संभाल लिया ।

“बताओ साले, जवाब दो, खामोश रहोगे तो मारते-मारते खत्म कर दूंगा । क्यों पीछा किया था ?”

विजय ने किसी तरह जवाब दिया, “मैंने पीछा नहीं किया था ।”

“स्साले, फिर झूठ बोलता है ?”

इतना कहकर फिर से एक झापड़ लगाया ।

उस वक्त जयन्ती की आंखों से आंसू टपक रहे थे । ये आंसू विजय के अपमान से नहीं, बल्कि इतने-इतने आदमियों के धिक्कार और अजनबियों की सहृदयता के कारण टपक रहे थे ।

“देखिए, मैं भले घर की लड़की हूँ । इन लोगों की शैतानी से सड़क पर चलना तक मुश्किल हो गया है ।”

“रोइए मत, बहनजी ! हम इसे सही रास्ते पर ला देते हैं । स्साले, तेरे घर में मां-बहन नहीं है ? स्साले, तेरे घर में बहू-बेटी नहीं है ? भले घर की लड़कियों का पीछा करता है ?”

तब सरदर्द से विजय की हालत बदतर थी ।

“भेरे बाल छोड़ दें । बड़ा दर्द हो रहा है । छोड़िए...”

“स्साले तेरे बाल छोड़ दूंगा ? तेरा सर मुंडाकर उसपर मट्ठा डालूंगा, तब छोड़ूंगा । अभी क्या हुआ है !”

एक भले आदमी ने कहा, “छोड़ दीजिए साहब, इतना हंगामा करने के बजाय इसे पुलिस के सिपुर्द कर दीजिए, झंझट खत्म हो जायेगी ।”

“पुलिस के सिपुर्द क्यों कर दूँ, साहब ? पुलिस के सिपुर्द कर देने से पुलिस इसे सजा देगी ? आज की पुलिस क्या पहले की जैसी पुलिस है ?”

जयन्ती बोली, “अब इसको मत मारिए । छोड़ दीजिए, मुझे डर लग रहा है ।”

एक नेता किस्म का आदमी आगे बढ़ आया और बोला, “आप बेवजह क्यों डर रही हैं ? हम लोग हैं, आपके लिए डरने की क्या बात है ?”

“सड़क पर अगर मुझे फिर से अपमानित करे ?”

“इसका मतलब ? पट्टे को ऐसा सबक सिखाऊंगा कि जिन्दगी में फिर किसी का पीछा करने की हिम्मत नहीं करेगा । आप बेफिक्र रहिए, मैं खुद आपको घर

पहुँचा दूंगा।”

“नहीं, नहीं; आपको तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं।”

आदमी बोला, “तकलीफ की क्या बात? यह तो हमारा कर्तव्य है।”

एक दूसरा आदमी बोला, “नहीं-नहीं; आप ऐसा मत कहें। मैं आपको टैक्सी से घर पहुँचा दूंगा। चलिए...”

एक तीसरे आदमी ने आगे बढ़कर कहा, “आप यहां पड़ी क्यों हैं? इधर ये लोग संभालेंगे। चलिए, इन कमीनों की बात में मत रहें। चलिए...”

उस आदमी ने जयन्ती का हाथ पकड़कर खींचा।

उधर से एक आदमी ने कड़ा, “आप कौन हैं, साहब? आपको इतनी गरज क्यों? हम लोगों की बात में आप क्यों दखलन्दाजी कर रहे हैं?”

“चुप रहिए, आपका मतलब मैं समझता हूँ। एक हेल्पलेस लेडी के लिए आप लोग ही क्यों सरदर्द मोल ले रहे हैं?”

उसके बाद जयन्ती की ओर मुड़कर बोला, “चलिए, मैं खुद आपको आपके मकान में पहुँचा दूँ।”

लेकिन अचानक एक कांड घटित हो गया।

एकाएक एक प्राइवेट कार आकर फुटपाथ के पास खड़ी हुई। एक साफ-सुपरे युवक ने गाड़ी के अन्दर से उसककर कहा, “कोन, जयन्ती! यहा क्या हुआ है? किस चीज की भीड़ है?”

अब सबकी दृष्टि गाड़ी की तरफ गई।

“आनन्द दा, तुम? जान बचा दी तुमने!”

आनन्द ने पूछा, “यहां हो-हल्ला क्यों मचा है?”

जयन्ती बोली, “बाद में कहूंगी। अभी तुम किसी तरह मुझे घर पहुँचा दो।”

युवक ने जयन्ती को गाड़ी में बिठाया। उसके बाद इंजन स्टार्ट कर धुआँ उड़ाता हुआ सामने की ओर निकल गया।

जो लोग अब तक उस लड़की के गिदं जमा होकर वीरता का प्रदर्शन कर रहे थे, वे बेवकूफ की तरह उस ओर ताकते हुए खड़े रह गए। उसके दाद पर गाड़ी आँखों से ओझल हो गई, वे एक-दूसरे के मुँह की ओर ठाढ़े बने। आश्चर्य है! आजकल किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता, सन्देह:

“वह लड़की गृहस्थ घर की है?”

इस बात का कोई उत्तर न दे सका। अब सबके मन में सन्देह पैदा होने लगा—अब तक जिसकी सुरक्षा के लिए वे आगे बढ़कर आए थे, दरअसल वह कौन है ?

विजय तब लोगों के हाथों से मुक्त हो चुका था। तब उस पर किसी का आक्रोश नहीं था। इस बीच वह अपनी कमीज़ को ठीक करके अपने-आपको थोड़ा-बहुत संयत कर चुका था।

“मेरी बात पर तब आप लोगों ने यकीन नहीं किया।” उसने कहा।

भीड़ तब छंट चुकी थी। जो दो-एक व्यक्ति तब जाने-जाने को प्रस्तुत थे उनकी समझ में भी यह बात आ गई कि असल में इस युवक की कोई गलती नहीं है। हो सकता है कि यह लड़की ही आधी गृहस्थ हो !

एक आदमी ने कहा, “कैसे समझें कि किसके मन में क्या है ! आजकल चेहरा देखकर समझना मुश्किल है...”

सभी के चले जाने के बाद उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के दोमंजिले के किरायेदार हिमांशु सरकार का पुत्र विजय सरकार जैसे आसमान से गिरा। वह लड़की तीनमंजिले के हरिपद चक्रवर्ती की लड़की है, यह बात उसकी कल्पना में कैसे आ सकती थी !

छिः छिः ! आदमी इस तरह की गलती भी कर सकता है !

उस दिन सृष्टिधर ने आते ही अचानक कहा, “मेहमान साहब, मेरे मालिक आए हुए हैं।”

भवदुलाल ने कुल मिलाकर तब चाय को हाँठों से लगाया था। राधा बुआ सृष्टिधर के गले की आवाज़ सुनते ही बाहर निकल आई।

“ओ सृष्टिधर, सृष्टिधर...” उसने पुकारा।

सृष्टिधर तब जल्दवाज़ी में था। यह समाचार हिमांशु बाबू को भी सुनाना है। लेकिन बुआजी की पुकार सुनकर लौट आया।

“मुझे पुकार रही हैं, बुआजी ?”

राधा बुआ बोली, “अचानक तुम क्या कह गए और तुरन्त दौड़कर भागे

जा रहे हो, अच्छी तरह तुम्हारी बात सुन नहीं सकी। क्या कह गए ?”

सृष्टिघर ने अपने चेहरे पर भरपूर मुसकराहट बिखेरकर कहा, “यह बात दोमंजिले के चाचाजी से भी कहनी है न ! चाचाजी बहुत दिनों से कहते आ रहे हैं कि उनके जीने की रेलिंग कमजोर हालत में है। इसीलिए...”

“तो तुम्हारे लिए दोमंजिले के किरायेदार ही बडे है, सृष्टिघर ? हम लोग एकमंजिले में रहते हैं तो कुछ भी नहीं है ? हम लोग क्योंकि तीस रुपया किराया देते हैं इसलिए हम किरायेदार की गिनती में नहीं हैं ? हम लोग भेड-बकरी है ?”

सृष्टिघर ने दातों से जीभ काटकर कहा, “छि. छिः, बुआजी, आप क्या कहती हैं ! मैंने आपसे यह कब कहा ? मैंने यही कहा कि मेरे मालिक कल आ रहे हैं। यह कहकर ही मैं चला जा रहा था।”

इस बात को सुनते ही जैसे आग लग गई हो। राधा बुआ ने पूछा, “सच कह रहे हो ?”

“सच नहीं तो झूठ कह रहा हूं, बुआजी ?” सृष्टिघर ने कहा, “मैंने मालिक को लिखा था कि मकान की भरम्मत कराए बगैर अब नहीं चलेगा। सभी को बहुत परेशानी हो रही है—एकमंजिले के मेहमान साहब के आंगन में गड्ढा हो गया है और रसोईघर की चाल से बरसात में पानी टपकता है।”

राधा बुआ बोली, “तुमने सचमुच लिखा है ?”

“लियूंगा क्यों नहीं ? आप लोगों को तकलीफ हो रही है, इसे क्या अपनी भाँषों से नहीं देख रहा हूँ !”

“फिर बेटा सृष्टिघर, तुम जब इतना कर ही रहे हो तो हमारे पाखाने की सीढ़ी भी ठीक करने को कह दो। सीढ़ी की इंटें उखड गई हैं, कभी भी हाथ-पांव टूट सकते हैं, लंगड़ी होकर मौत के मुंह में पड़ सकती हूँ। बेटा, इसे ठीक करा दो।”

सृष्टिघर ने कहा, “मालिक के आते ही ठीक करा दूंगा। मालिक को लाकर सब कुछ दिखाऊंगा, वह बडे ही भले आदमी हैं, बुआजी ! मालिक एक बार आ जाएं, फिर तो यह मकान बिलकुल नया हो जायेगा। इस मकान को खरीदने के दिन से आज तक उन्होंने इसे देखा तक नहीं है।”

राधा बुआ सृष्टिघर की बात सुनकर बेहद खुश हुई, “तुम्हारे मालिक क्या आ रहे हैं ?”

सृष्टिधर ने कहा, “वारह वजे के अन्दर ही ले आऊंगा, ज्यादा देर न  
गेगी।”

“फिर तुम्हारे मालिक अगर रसोईघर में घुसना चाहें तो ?”

“अच्छी तरह दिखाने के लिए रसोईघर के अन्दर ले ही जाना होगा,  
आजी। मालिक को अपनी आंखों से देखना है, वरना उन्हें कैसे पता चलेगा  
न कहां-कहां टूटा हुआ है।”

शुरू-शुरू में इस तरह की बातों पर सभी किरायेदार विश्वास करते थे।  
दृष्टिधर को भी विश्वास की दृष्टि से देखते थे। सोचते थे, मकान-मालिक  
श्वरप्रसाद इनदनियां किसी दिन आएगा। आकर सभी के सुख-दुःख को  
समझेगा। उसके बाद राज-मिस्त्री लगाकर तमाम असुविधाएं दूर कर देगा।

लेकिन कहां कुछ हुआ ? न मकान-मालिक आया और न ही राज-मिस्त्री  
आया गया। किरायेदारों का तमाम दुख-दर्द, शिकवा-शिकायत, महीने के बाद  
महीने, साल के बाद साल जमा हो-होकर पहाड़ के रूप में बढ़ल गई। न किसी  
अन्याय या अभियोग का कोई प्रतिकार हुआ और न कोई हल ही निकाला गया।

फिर भी उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन की जीवन-यात्रा  
में कोई व्यतिक्रम घटित नहीं हुआ। एकमंजिले के भवदुलाल के घर में उसकी  
पत्नी साल-दर-साल बच्चे जनती रही, दोमंजिले के हिमांशु सरकार का लड़का  
विजय सरकार मुहल्ले में गुंडागर्दी करता रहा और तीनमंजिले के हरिपद  
चक्रवर्ती की लड़की रात गहराने पर घर वापस आती रही।

लेकिन उस दिन एक कांड घटित हो गया।

विजय ने मुहल्ले के अड्डे में यार-दोस्तों से इस प्रसंग को छेड़ा।

“इसका रिर्वेंज लेना है, पटला,” उसने कहा, “वरना हम लोगों की इज्जत  
धूल में मिल जायेगी।”

सड़क के नुक्कड़ पर यार-दोस्तों की जमात एक बार सुबह और एक बार  
शाम के वक्त अड्डे बाजी करती है।

पटला ने कहा, “तूने पहले क्यों नहीं बताया ? साली को ससुराल की संर  
करा लाता ! जानते हो, मुचिपाड़ा थाने का ओ० सी० मेरे मौसाजी का फ्रेंड  
है।”

विजय ने कहा, "तुम्हारी कसम, पहले इतनी बात मेरी समझ में नहीं आई। मैंने सोचा, यों ही कोई बाजारू थोरत है, चरने के लिए बाहर आई है, जैसा कि अमूमन उस मुहल्ले में होता रहता है।"

"उसके बाद तूने क्या किया?"

"मैं पीछे-पीछे फॉलो करने लगा। मैं जिनना ही आगे बढ़ता जा रहा था, लड़की भी उतना ही आगे बढ़ रही थी। सोचा, देखू, यह लड़की कहां जाती है। आधिर सर्कलर रोड के पास ज्योंही पहुंचा, लड़की मुड़कर खड़ी हो गई। सोचा, श्योर गॉट है! मगर कसम तुम्हारी, ज्योंही चेहरे पर बांग्य गई, दिमाग गरम हो गया।"

"क्यों?"

विजय ने कहा, "देखा, हमारे तीनमंजिले के किरायेदार की लड़की है..." पटला, केतो, चांदा—सभी बिहंका उठे।

"एँ, तेरे भवान के तीनमंजिले के किरायेदार की लड़की? सड़क पर गाहक की टोह में निकली थी?"

विजय बोला, "फिर क्या दूसरी बात कह रहा हूँ, यार! मैं जानता था, संगीत सीखने के लिए शायद किसी संगीत-विद्यालय में जाती है। इसीसे लौटने में देर होती है। मगर उमने सड़क पर कारोबार विछाया है, इसकी जानकारी मुझे कैसे हो सकती है!"

"उसके बाद?"

विजय बोला, "सोचा कि कहूँ: क्यों जी, तुमने कब से यह कारोबार शुरू किया? लेकिन कुछ कहने के पहले ही ससुरी ने चिल्लाना शुरू किया। बोली: देखिए, यह लड़का तय से मेरा पीछा कर रहा है..."

"उसके बाद?—उसके बाद क्या हुआ?"

विजय अपनी लज्जा की कहानी गोरव के गाय कहने लगा, "उसके बाद भैया, चारों तरफ से लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। उन लोगों ने मेरे गले को दबोच लिया।"

"यह क्या? बोर तूने क्या किया?"

"मैं क्या कर सकता था, भाई," विजय ने कहा, "अकेला था, इमति बोल नहीं सका। सालों ने सोचा कि सती-साध्वी भुवती है और..."





पटला ने अपनी तलहथी आगे बढ़ा दी। केतो ने अपनी तलहथी पटला की तलहथी पर पटक दी। बस, शर्त लग गई। एक पेंकेट सिगरेट से एक लड़की का मापदंड निश्चित कर लिया जाए। इस मुहल्ले के लड़कों के लिए इमते बढ़कर हार-जीत नहीं हो सकती है। दुनिया की दुःख-नकलीक, रातग में मिलने वाला घटिया चावल और अर्थाभाव उन्हें विचलित नहीं करता है। एक पेंकेट सिगरेट मिल जाने से ही वे एक लड़की के सर्वनाश को कल्पना को सागर कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस मुहल्ले के आज के युवक कुछ भी नहीं चाहते हैं।

अचानक उत्तर की ओर से एक लड़की तितली की तरह अपनी पांखों को पसारते इसी रास्ते की ओर आती हुई दिख पड़ी।

रास्ते के दूसरे मोड़ से केतो सकेतमूचक सिसकारी देने लगा : स्-म्-स्-स्-स्-म्...

इस मोड़ पर खड़ा विजय इस सिसकारी का अर्थ समझता है। वह भी अपने होंठों से जोर से सिसकारी देने लगा। यानी देख लिया है।

उसके बाद जब तक इस मुहल्ले के लड़के उस ओर आग्र टिकाए रहे तब तक वे अपलक सिर्फ एक ही बात कहने की चाह करने लगे :

पनिया भरन को जाने न दे  
जाये तो वापस आने न दे  
दइया रे दइया...

एक ही साथ गीत की शुरुआत कर सभी लड़की पर आंघों टिकाए तल्लीन थे कि एकाएक पीछे से जाल लगी पुलिस की बैन आकर पड़ी हो गई।

"यहां तुम लोग क्या कर रहे हो ?"  
विजय डर गया। केतो ने परधराती आवाज में कहा, "गीत गा रहे हैं।"  
"सड़क के मोड़ पर गीत गाए बगैर नहीं चल सकता ? गीत गाने की और कोई जगह नहीं मिली ? जाओ, अपने-अपने घर चले जाओ।"

पाने का ओ० सी० बेंत की मोटी छड़ी घुमाकर फिर से गाड़ी में ड्राइवर की बगल में जाकर बैठ गया। केतो, विजय, पटला तीनों जल्दी-जल्दी गली में डुबक गए और उन्होंने राहत की सांस ली।

लेकिन उस दिन पुलिस की बैन अकस्मात् उनतीस बटे तीन बटे छह नी

मणि हालदार लेन के मकान के विलकुल करीब ब्रेक लगाकर खड़ी हो गई ।

राधा बुआ तब तांवे की एक तषतरी में फूल-बेलपात लेकर शीतला मंदिर में पूजा करने जा रही थी । पुलिस देखते ही ठिठककर खड़ी हो गई ।

“ओ नेड़ी, नेड़ी, अरी घर के सामने पुलिस आकर क्यों खड़ी हुई ? ए भव, आओ, देख जाओ...”

भवदुलाल हर रोज की तरह फर्श पर बैठकर पत्नी की देख-भाल कर रहा था । सास की बात सुनते ही बाहर निकल आया । पुलिस ! जैसे इस शब्द पर उसे विश्वास ही नहीं हुआ ।

पत्नी बोली, “अजी, पुलिस क्यों आई है, जाकर देखो न ।”

जाने की इच्छा नहीं थी । लेकिन विना गए रहा भी नहीं गया ।

“जयन्ती चक्रवर्ती नाम की कोई लड़की इस मकान में रहती है ?”

थाने का ओ० सी० खुद आया था । वर्दी में लैस पुलिस अफसर । यमदूत की तरह चेहरा ।

राधा बुआ सहमती हुई बोली, “मुझे कोई जानकारी नहीं है, भैया, मेरा दामाद घर में है, बुला देती हूँ ।”

उसके बाद हड़बड़ाती हुई घर के अन्दर घुसकर बोली, “ए भव, तुम्हें पुकार रही हूँ और तुम सुन ही नहीं रहे हो ! उधर पुलिस आई है, क्या-क्या तो पूछताछ कर रही है । मैं क्या से क्या कह डालूंगी, तुम एक बार बाहर जाओ ।”

भवदुलाल ने काँध संभालते हुए कहा, “चल रहा हूँ माँ, आप जाइए ।”

ओ० सी० खड़ा का खड़ा था ।

भवदुलाल के आते ही पूछा, “जयन्ती चक्रवर्ती किस मंजिले में रहती है ?”

“हुजूर, हरिपद चक्रवर्ती की लड़की है । तीनमंजिले में । उधर से सीधे जीने से तीनमंजिले पर चले जाइए ।”

कोतवाल अब रुका नहीं । दल-बल के साथ एकवारगी जीने की ओर चला गया । तब पुलिस की गाड़ी देखकर सड़क पर कुछ आदमी इकट्ठे हो गए थे ।

“क्या हुआ साहब ? पुलिस क्यों आई है ? चोरी का मामला है ?”

एक आदमी बोला, “चले आइए साहब, इन झमेलों में न रहना ही अच्छा है । अंत में गवाही देने को कहेगा, तब कोर्ट-कचहरी करते-करते परेशान होइएगा ।”

लेकिन उत्सुकता बड़ी कठिन चीज होती है—एकदम कछुए की तरह । पकड़

लेगी तो तब तक नहीं छोड़ेगी जब तक कि मेघ न गटगड़ाए।

“क्यों साहब, इतना मजमा क्यों लगा रहे हैं ? तमाशा देखने आए हैं ? भागिए, भागिए यहाँ से...”

पुलिस के पहरेदारों ने सभी को हटाना चाहा। लेकिन लोग जाएं ही क्यों ? तुम्हारे घर में कौन-सी कलंकजनित घटना घटी है, अगर यह जान ही नहीं पाए तो जीवन जीना क्या ! जीवित रहने में कौन-सा सुख है ?

दोमंजिले के हिमांशु बाबू यह खबर सुनते ही चिहंक उठे।

“पुलिस ? पुलिस किसके मकान में आई है ?”

उनकी पत्नी ने कहा, “जाकर देखो न कि किसके मकान में आई है। तुम्हें दिख नहीं रहा है ?”

“ओह, मैंने क्या यह बात कही थी ? पूछ रहा हूँ, किस फ्लैट में आई है— हम लोगों के फ्लैट में या तीनमंजिले में या एकमंजिले में ?”

लेकिन और देर करना उचित न समझकर दुबल छाती का भार लिए उठ पड़े हुए और बोले, “विजय कहां है ?”

जवाब दे तो कौन ? मगर तभी सदर दरवाजे की जंजीर झनझना उठी।

ज्योंही दरवाजा खोला, थाने के ओ० सी० ने पूछा, “जयन्ती चक्रवर्ती नाम की कोई लड़की इस मकान में रहती है ?”

हिमांशु बाबू ने उत्तर दिया, “नहीं, साहब। तीसरी मंजिल में देखिए, ऊपर रहने वाले हरिपद चक्रवर्ती की लड़की है।”

ओ० सी० ऊपर चढ़ रहा था। हिमांशु बाबू अपनी उत्सुकता को दबाकर रख नहीं सके, “क्या हुआ है ? चोरी बर्गरह का मामला है क्या ?”

लेकिन थाने के ओ० सी० के पास उस बात का उत्तर देने का बख्त नहीं था। तब वह पुलिस के साथ टूटी सीढ़ी तय करता हुआ सावधानी से तीनमंजिले की ओर जाने लगा।

तीनमंजिले के सदर दरवाजे के पास पहुंचकर ओ० सी० ने जंजीर छट-पटाई।

“अन्दर कौन है ? दरवाजा खोलिए।”

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का वह मकान वास्तव में बड़ा ही अजीब है। नीचे के एकमंजिले में भवदुलाल के घर में जब नये लड़के के जन्म लेने की शुभ घोषणा के स्वरूप शंख बजता है, हो सकता है कि तब दोमंजिले में हिमांशु बाबू दिल के दौरे की यंत्रणा से उद्विग्न होने लगे और ठीक उसी तरह हो सकता है, कि तभी तीनमंजिले के हरिपद चक्रवर्ती के सदर दरवाजे पर पुलिस आकर उपस्थित हो।

एकमंजिले में शंख, दोमंजिले में डाक्टर और तीनमंजिले में पुलिस।

और उसके बीच सृष्टिधर का आविर्भाव वैसा ही लगता है जैसे हरमोनियम बजाते-बजाते वेसुरे पर्दे पर उंगली पड़ गई हो। कानों में चोट पहुंचती है। कलेजे में धक्का-सा लगता है। सभी ऊब का अहसास करने लगते हैं, लेकिन कोई उसे भगा नहीं पाता है। "तुम्हें और वक्त नहीं मिला, सृष्टिधर ? ठीक ऐसे ही वक्त में आए।"

किन्तु मालिक ईश्वरप्रसाद ढनढनियां...?

आनन्द राय ने एक दिन जयन्ती से कहा था, "तुम अपने मकान को पहले बदलो। वहां में गाड़ी लेकर जा ही नहीं पाता। उस वस्ती के आवारे इस तरह कीड़े की तरह घेर लेते हैं कि..."

शुरू में आनन्द एक या दो दिन जयन्ती की तलाश में आया था।

मुहल्ले के रास्ते के मोड़ पर खड़ा होकर पटला ने कहा, "क्यों जी विजय, तेरे घर के सामने किसकी गाड़ी खड़ी है?"

विजय ने भी देखा। केतो ने भी। भोलादत्त भी देखकर अवाक् रह गया।

देखा, एक युवक गाड़ी से उतरकर उंगली में गाड़ी की चाबी नचाता हुआ घर के अन्दर घुसा। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के सामने गाड़ी का आकर रुकना एक नई ही बात है ! बल्कि अपवाद ही कहना चाहिए। वह गाड़ी वालीगंज में दिखती है, न्यू अलीपुर में दिखती है, जोधपुर पार्क में दिखती है—यहां तक कि कभी-कभी भवानीपुर में भी दिखती है। लेकिन नीलमणि हालदार लेन में ?

“मौसीजी !”

उस आवाज को सुनते ही जयन्ती बाहर निकल आई ।

जयन्ती को देखकर आनन्द ने कहा, “मौसीजी कहां हैं ?”

“अरे, तुम बेटा ! एकाएक ? क्या हालचाल...?”

“बगीचे के तालाब में मछली आई है, इसलिए एक बंद मछली बेकर बन गया, मौसीजी !”

सचमुच हैरान होने की बात है ! दस मिनट की एक मछली आनन्द के हाथ में लटक रही थी । मुंह में रस्सी बांधकर और उसे हाथ में लटकाए वह तीन-मंजिले पर ले आया था ।

“सोचा, बाजार में मछली की जो कीमत है, कलकत्ते के आदमी बिना मछली खाये ही जी रहे हैं । इसीलिए मैं मौसीजी के लिए ले आया...”

मछली को देखकर जयन्ती भी हैरत में आ गई । मानो मछली के बदले कोई पाती देख रही हो । विवाह की कन्या की ओर भी आदमी इस तरह गौर से नहीं देखता है ।

“मछली कितनी चमक रही है, देख रही हो न, मा !”

मौसी बोली, “तालाब की ताजा मछली है न, इसीलिए अब तक चमक है ।”

इतना कहकर आनन्द के हाथ से जल्दी-जल्दी मछली लेकर रसोईघर के सामने चौखट पर रखी ।

“तुम्हारे अपने तालाब की है ?”

आनन्द ने कहा, “अपने कहने का मकसद है खानदानी । मेरे पास पंसा कहां है मौसीजी, कि इतना बड़ा चौदह बीघे का तालाब और बगीचा खरीदू ? पिताजी बड़े आदमी थे, बनवा गए थे, इसी से दो कौर नसीब होता है ।”

“बगीचा भी है ?”

“बगीचा भी कह सकती हैं । बगीचा बड़ा नहीं है, सत्रह बीघे का है । तलाशने पर एक सी हिमसागर आम और पचास कटहल के पेड़ मिल जायेंगे । मैं निहायत कपूत हूँ कि सब बर्बाद कर रहा हूँ । मेरे यहां कोई और खानेवाला आदमी नहीं है ।”

“क्यों, तुम्हारे भाई बगैरह ?”

आनन्द ने एक कहकहा लगाया ।

"फिर क्या बात थी, भाई-बहन रहते तो अब तक मामले-मुकदमे के मारे जर्जर हो जाता और तमाम पैतृक संपत्ति वकील-एटर्नी के पेट में समा जाती। टूठे कुछ भी क्या रहने देते?"

और आनन्द ने फिर से कहकहा लगाया।

उसके बाद हंसना बंद करके बोला, "बाबूजी मेरी यही एक भलाई कर गए हैं मौसीजी, कि भाई-बहनों की शंशत नहीं सौंप गए हैं। अपने लोग ही सबसे अधिक ईर्ष्यालु होते हैं।"

"और तुम्हारी मां?"

"एँ, जयन्ती ने आपको कुछ भी नहीं बताया है?" आनन्द मानो आसमान से नीचे गिर पड़ा हो।

"वह क्या बताएगी?"

आनन्द ने जैसे जयन्ती को ही दोषी ठहराया, "तुमने मौसीजी से कुछ भी नहीं बताया?"

जयन्ती तब चुपचाप खड़ी एकाग्र होकर मछली पर आंख फैलाए थी।

"नहीं मां, इसकी मां जिन्दा नहीं है।" वह बोली।

"अहा-हा..."

अनजाने ही मां के मुंह से शोकसूचक 'च्य-च्य' शब्द निकल गया।

मौसीजी की समवेदना पाकर आनन्द ने कहा, "आप 'अहा-हा' मत कहें, मौसीजी! जिन्दगी-भर आदमी से 'अहा-हा' शब्द सुनते-सुनते मेरी जान निकल गई है। क्यों, कोई क्या हमेशा रहता है? फिर आप लोग क्यों हैं? आप लोगों के रहते मुझे किस बात की तकलीफ है? आप लोग क्या मुझे पराया समझते हैं?"

"तू खड़ी क्यों है? तुझसे कोई काम नहीं हो सकता है? आनन्द के लिए एक प्याली चाय तो बना सकती हो..." मौसीजी ने जयन्ती को डांट सुनाई।

"नहीं मौसीजी, अभी किसी चीज की ज़रूरत नहीं है।"

मौसीजी बोली, "यह हो नहीं सकता, तुम खाली पेट नहीं जा सकते। तुम चाय पीनी ही है।"

आनन्द हाथ जोड़कर दो कदम पीछे हट गया।

"मुझे क्षमा करें, मौसीजी! अभी-अभी पार्क स्ट्रीट में एक मित्र ने दो क

लेट जबरदस्ती खिला दिए। अभी मेरे पेट में तिल रखने की भी जगह नहीं है। सच कह रहा हूँ...”

उमके बाद बोला, “मौताजी कहाँ हैं, मौमीजी? उन्हें देख नहीं रहा हूँ।”

मौसी बोली, “उनकी बात मत पूछो, बेटा! वह वहाँ रहते हैं, जिस घण्टे में मशगूल रहते हैं... इस मकान के चलते तो भारी परेशानी है। इस मकान की शक्ल देख रहे हो न! जाने कब धरासाई हो जाए...”

“तो इस मकान को छोड़ दीजिए न! मैं जयन्ती से यही बात कह रहा था...”

“मकान छोड़ने पर मकान मिलेगा कहाँ?” मौमी ने पूछा।

“यह मकान किम्का है, बताइए तो? क्या नाम है? पता क्या है?”

मौमी बोली, “मकान-मालिक का पता मानूम रहता तो जी जाती।”

“उमका पता एक बार बताती तो मैं उससे निवट लेता। मेरे मित्र के बाबूजी हार्डकोट के जज हैं। मैं ही मकान-मालिक के नाम से मुकदमा दायर कर देता। यह भी कोई बात मे बात है कि मकान की मरम्मत नहीं कराएगा। सीढ़ी टूटी हुई है, पलस्तर झट गया है...”

“और छत से बारिश का पानी टपकता है। सार पर छाता डाले भीगते हुए रमोई बनानी पड़ती है। मकान-मालिक को क्या मोही कोसनी हूँ!”

“आप एक बार नाम बता दें, फिर मैं क्या करना हूँ, देख लीजिएगा।” आनन्द ने कहा।

मौमी ने कहा, “गृष्टिघर से मुनने में आया है कि ईश्वरप्रसाद इन-इनियां...”

“ईश्वरप्रसाद इनइनियां? मारवाडी है क्या? चरमघोर कहीं का! पता बताइए तो। मैं नोटबुक में लिख दूँ। कल ही इनइनिया के नाम से मुकदमा दायर कर दूँगा।”

और पैट की जेब से नोटबुक और सामने की जेब से कलम निकालकर लिखने के लिए तैयार हुआ।

मौसी बोली, “उसके पते का इन्तजाम करके रख दूँगी। तुम पहले चाय पी लो, बेटा!”

चाय की प्याली हाथ में लेकर आनन्द बोला, “मौमीजी, लेकिन मेरी एक बात है। आप नाही मत कहें। कहिए, मेरी बात खिजिए न।”



“कहो, क्या बात है वेटा !”

“जयन्ती को अभी मैं न्यू मार्केट ले जाकर उसके लिए एक साड़ी खरीदना चाहता हूँ।”

“क्यों भैया ? साड़ी क्यों ? उसके पास बहुत-सी साड़ियाँ हैं। तुम्हारे मौसाजी ! उसे बहुत-सी साड़ियाँ खरीद दी हैं। उसे क्या साड़ी का कोई अभाव है ?”

आनन्द ने कहा, “सो ठीक है, मैं आज उसे एक साड़ी दूंगा ही...”

“मगर एकाएक आज ही क्यों देना चाहते हो ? उसकी आज सालगिरह भन नहीं है।”

आनन्द ने एक बार तिरछी निगाहों से जयन्ती की ओर देखकर कहा, “फिर आपसे खुलासा ही कहूँ, मौसीजी ! मार्केट में मैंने बीस हजार के शेरर खरीदे थे। जयन्ती ने शर्त बदी थी कि मैं हार जाऊँगा। उसने शेरर का फाटका खेलने से मना किया था। सो क्या बताऊँ, मौसीजी, शेरर की वजह से मुझे बीस हजार का फायदा हुआ...”

मौसीजी को जैसे विश्वास ही नहीं हुआ।

“कितना रुपया बताया ?”

“ब्यादा नहीं, बीस हजार।” आनन्द ने कहा।

“बीस हजार रुपया ! कितने रुपयों का शेरर खरीदा था ?”

आनन्द ने कहा, “पाँच हजार का। मैं गरीब आदमी हूँ, ब्यादा रुपया कहां से लाऊँ, मौसीजी ! सो पाँच हजार में पंद्रह हजार प्रॉफिट हुआ। कम तो नहीं है, इसीलिए उसको एक साड़ी...”

मौसी हंस दी, “लगता है, तुम उसे बिना खुश किए नहीं छोड़ोगे। अच्छा, तो फिर जाओ।”

आनन्द ने जल्दी-जल्दी मौसी के चरणों की धूल अपने मस्तक से लगाई। बोला, “आशीर्वाद दीजिए, मौसीजी, जिससे कि गुरुजनों के प्रति मुझमें भक्ति-भावना बनी रहे।”

एकमंजिले की वाशिन्दा होने से क्या होगा, राधा बुआ की पैठ मुहल्ले के हर मकान में है। सभी घरों के महिला-समाज की खबरों का संग्रह करने या खबरों को फैलाने की जिम्मेदारी जैसे एकमात्र उसी पर हो। जब वह पूजा के

फूल लेकर शीतला-मंढप जाती है तो लोटने के वस्तु मीघें पर लोटकर नहीं आती है। एफवारमी शंकरि लेन की फूल भाभी के घर में उपस्थित होती है। वहाँ हर पर की हांशी की खबर लेने के लिए फूल भाभी छटपटाती रहनी है। कभी फुम-फुमाकर, कभी बुढ़बुढ़ाकर और कभी जोर-जोर से दोनों बातचीत करती हैं।

“कल तुम लोगों ने मछली कैसे खाई, राधा बुआ ?”

राधा बुआ शुरू में हैरत में आ गई। “मछली ?” यह बोली, “दामाद मछली कहां से लायेगा ? मछली के बाजार में अकाल पड़ गया है। अब घर में मछली कहां आती है ! कल मेरा दामाद छोटी झींगा मछली ले आया था, उसे ही बंगन के साथ बनाया था।”

फूल बहू बोली, “वाप रे, क्या कहती हो, राधा बुआ ! मुहल्ले के सभी आदमियों ने देखा है कि तुम लोगों के घर में बीस सेर बजन की कतला मछली आई है...”

अब राधा बुआ की समझ में बात आई।

“ओह, यही कहो न !” राधा बुआ बोली।

“तुम लोगों के नीलमणि हालदार लेन में मछली तली गई, हम लोगों को इस रानी शंकरि लेन में बँठे-बँठे उसकी गन्ध महगूम हुई। तुम लोगों को एक-मंजिले में रहने के बावजूद कोई अता-भता नहीं चला ? यह क्या मुमकिन है ?”

राधा बुआ बोली, “देखा, लड़की उस लड़के के साथ ही फिर से बाहर निकली।”

“कब वापस आई ?”

“पता नहीं भाभी, मेरे दामाद ने बताया कि रात करीब एक बजे गाड़ी की आवाज सुनाई पड़ी थी। उन लोगों का कारोबार कुछ समझ में नहीं आता। मेरा कहना है कि लड़की अब जवान हो गई है, अब अगर उसका हाथ पीला नहीं करती तो तो पंदा ही क्यों किया ? जच्चाघर में ही नमक पटाकर मार डालती, लज्जा-शर्म का झमेला ही घरम हो जाता।”

फूल भाभी बोली, “तुम्हारे भैया ने बताया है कि उस लड़की को उन्होंने चौरंगी में बेहया की तरह घूमते देखा है।”

“यह मकान ही बेश्याघर है, बहू ! नेड़ी से मैंने यही बात कही थी कि तूरे कारण मेरे जीवन का अन्तिम पहर पापों से भरता जा रहा है। पता नहीं, पिछले

जन्म में कितना पाप किया है कि उस मकान में टिकना पड़ रहा है।”

“अपने मकान-मालिक से कहकर उसे भगवा नहीं सकती हो ?”

“हरामजादे मकान-मालिक की बात मत करो, वह ! उसके मुनीम से कब से कहती आ रही हूँ कि मकान-मालिक को बुलाओ, मगर वह पाजी कभी आया ही नहीं।”

फूल भाभी बोली, “मगर तुम्हारे मुहल्ले के लोग भी अजीब हैं, बुआ ! हर कोई बाल-बच्चा औरत लेकर गृहस्थी चला रहा है। यह बात किसी की आंखों में चुभती नहीं ?”

“किसको कहूँ और कौन सुनेगा ही, वह ! हमारे दोमंजिले के सरकार को पहचानती हो ?”

“वही न, जो छोकरा गांजे का दम लगाता है ?”

राधा बुआ बोली, “गांजे का दम लगाता है या चरस-भांग का, पता नहीं वह ! उस लड़के की शकल देखी है ? उस दिन नेड़ी नलघर में स्नान कर रही थी। नलघर के ऊपर छत नहीं है। एकाएक खयाल आया तो देखा सिर झुकाकर ऊपर से वह छोकरा नेड़ी की ओर ताक रहा है।”

“बाप रे, यह बात ! तुम्हारी लड़की की ओर ? वह तो सात बच्चों व मां है !”

राधा बुआ बोली, “यह सुनते ही मेरे वदन में आग लग गई। मैं अपना आपको रोक नहीं पाई, वह ! दोमंजिले पर पहुंची। जाकर लड़के की मां व मां व फजीहत की, वो फजीहत की, कि क्या कहूँ ! कहा : ऐसा लड़का पैदा कि है कि गले के लिए फन्दा नहीं जुटता है ?... सुनोगी उस छिनाल का कांड चौड़ां लगा हंसिया लेकर मुझे मारने दौड़ी...”

“बाप रे ! उस छोकरे का बाप उस वक्त कहां था ? बुढ़वा मरद क्या रहा था ?”

राधा बुआ बोली, “जैसा वह मरद है वैसी ही वह मौगी—दोनों के व शैतान की औलाद ! शैतान की औलाद न होते तो ऐसा बेटा जनते ?”

“उसके बाद ?”

राधा बुआ बोली, “उसके बाद मैंने वो जहर उगला...”

“उस छोकरे ने क्या कहा ?”

“छोकरे ने कहा : हमारा मकान है, जहाँ मर्जी होगी चढ़ें होंगे; जिधर मर्जी होगी, देखेंगे। ताकत है तो मकान-मालिक को बुलाकर नलघर की छत धनया लो...”

फूल बहू बोली, “छोकरे ने वाजिव बात ही कही है, बहन ! गलती तो तुम्हारे पाजी मकान-मालिक की ही है। उम गरदूद के मुँह से झाड़ू क्यों गहीं लगाती हो ? अपने मकान के नलघर में नहाने का भी उपाय न रहे, यह कैसा अन्याय है !”

देर हो रही थी, इसलिए राधा बुआ को उठना पड़ा। तिरफें रानी शंकरी लेन की फूल भाभी के पास बँटने से काम नहीं चलेगा। दूगरे-दूगरे घरों में भी प्यर पहँचानी है, और-और लोगों को भी तो यह निन्दाजनक घटना गुनामी है। तब न मुष हासिल होगा !

रानी शंकरी लेन से निकलने के बाद नेपाल भट्टाचार्य लेन मिली। यहाँ भी राधा बुआ की संगी-भाषी हैं। किसी घर में नातिन बहू है, किसी में लड़की और किसी में बड़ी बहन। हर घर में राधा बुआ की इरजन की जाती है। राधा बुआ ज्योंही मिलती है, राभी को लगता है कि आराश का चांद जैसे हाथ में आ गया हो।

“कहो राधा बुआ, मुनने में आया है कि गुम्हारी फूल बहू के लइके की औरत को तीन सौ रुपये की नौकरी मिल गई है।”

राधा बुआ कहती, “वाह, क्या कहना ! ‘क’ लिपने में ही जिरका हाथ टेढ़ा हो जाता है, उम कौन नौकरी देगा, गुनू ? तग उल्लू जैसे पीहरे की सूब-मूरती देखकर ?”

“फिर मुनने में क्यों आया कि फूल बहू के बेटे की औरत गज-धजकर नौ बजे दफतर जाती है ?”

“बुप कर, यह नौकरी भी कोई नौकरी है ! दूध की दुकान में दूध की बोनलें बेचा करती है और कीमत लेने के समय मुगकरा देती है। उमने नू नौकरी कहना चाहती है तो वह मरनी है !”

जो लोग मुनते हैं वे शूरा होते हैं। पराई निन्दा मुनने से जिनकी तर्बीयत प्रसन्न होती है, वैसे लोगों के घर में राधा बुआ की भरपूर सम्मान प्राप्त होगा है। राधा बुआ एक बार मिल जाए, तो वे उम जाने देना नहीं चाहती हैं। बहूनी

हैं, "थोड़ी देर और बैठो, राधा बुआ, तुम्हारे घर में लड़की है, नाती हैं, इतनी जल्दबाजी किस बात की?"

राधा बुआ कहती, "नहीं-नहीं, अब चलूँ, नेड़ी की तवीयत फिर खराब हो गई है।"

वे कहती, "क्यों राधा बुआ, तुम्हारी लड़की को फिर लड़का होनेवाला है?"

राधा बुआ कहती, "मालूम नहीं, विटिया, मैं तो दामाद से कहा करती हूँ कि तुम दूसरे कमरे में अलग विस्तर पर सोया करो, भैया, मैं अपनी लड़की के पास सोया करूंगी..."

कुछ देर रुकने के बाद फिर कहती, "यही वजह है कि एक मकान की तलाश में हूँ, बेटी ! उस मकान को छोड़ दूंगी। तुम लोगों के मुहल्ले में कोई मकान खाली होनेवाला है?"

मकान कहीं भी खाली नहीं होता है। होता भी है तो चुपचाप खाली होता है और चुपचाप ही भर भी जाता है। दुनिया में खाना मिले या न मिले, सिर घुसेड़ने के लिए सिर के ऊपर एक छत की जरूरत तो है ही। उसी छत के नीचे जन्म-मृत्यु और विवाह का रास रचाने के लिए अनादिकाल से गृहस्थ-धर्म का निर्माण हुआ है। इसी गार्हस्थिक धर्म के लिए ही इस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के इस मकान का निर्माण हुआ है। इस मकान के निर्माण की शुरुआत से ही यहां परंपरागत वंशों में कलह और कलंक का शोर-शरावा मचा रहता है। मृत्यु यहां निश्चित पथ से ही आती है किन्तु जन्म आकर उसकी रिक्तता को अचानक पूर्ण कर जाता है। ये लोग कलह-विवाद करते हैं लेकिन उस कलह-विवाद को लांघकर किसी दिन फिर से विवाह के गीत मुखर होने लगते हैं, मंगल शंख बजने लगते हैं। ऊपर के लड़के नीचे की मंजिल के नलघर में झांकते हैं, दोमंजिले का लड़का तीनमंजिले की लड़की का सड़क पर पीछा करता है, मारपीट होती है, लोगों की भीड़ जमती है और उसके बाद किसी दिन एक खुशनुमा गाड़ी आकर खड़ी होती है और गाड़ीवाला लड़की को अपनी बगल में लिए मुहल्ले के लड़कों के सामने से ही दूसरे मुहल्ले में गायब हो जाता है। और इसके बाद हो सकता है कि कभी पुलिस आकर सदर दरवाजे की जंजीर खटखटाए और कहे, "घर में कौन है? दरवाजा खोलिए..."

यही नियम है। यही दुनिया है! उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में यही हुआ।

सदर दरवाजा खोलते ही हरिपद चक्रवर्ती अवाक हो गए। हरिपद चक्रवर्ती ने कभी कल्पना तक न की थी कि इस तरह साभान् पुलिम आकर हाथिर होगी।

उमने पूछा, "किसको खोज रहे है?"

"हरिपद चक्रवर्ती किसका नाम है?"

"क्यों, कहिए, क्या हुआ है? मैं ही हूँ हरिपद चक्रवर्ती..."

"जयन्ती चक्रवर्ती आपकी ही लड़की है?"

हरिपद ने कहा, "हां..."

"आप हम लोगों के साथ थाने में चलिए।"

हरिपद चक्रवर्ती का कलेजा घडकने लगा। पूछा, "जयन्ती को क्या हुआ है?"

"नियम नहीं है कि पुलिमवाले इन बातों का जवाब दें। उन्हें डेरों काम रहते हैं, बहुत सारी कम्पलेंट रहती हैं। तमाम दुनिया में तमाम लोगों की लडाई चल रही है। आपकी मामूली-सी बात के लिए मायापन्ची करने का वक्त हमारे पास नहीं है। चलना है तो चलिए, वरना वारण्ट इश्यू कराकर कॉन्मटेबुल भेजकर आपको एरेस्ट कराऊंगा और ले जाऊंगा।"

हरिपद चक्रवर्ती बोला, "उरा रुक जाइए, मैं कमीज पहनकर आता हूँ..."

उधर गाड़ी में बंठी जयन्ती का जूड़ा गाड़ी के हिचकोले से खुल गया। हाथों से उसे संभालती हुई जयन्ती बोली, "इतने जोर से गाड़ी क्यों चला रहे हो?"

"जोर से न चलाऊं तो गाड़ी चलाने से लाभ ही क्या है?" आनन्द ने कहा।

"मगर मेरा जूड़ा जो खुल-खुल जाता है। वही कोई दुर्घटना न हो जाए..."

आनन्द ने कहा, "लाइफ इज एक्सिडेंट, यह जो तुम पैदा हुई हो या मैंने

ही जो जन्म लिया है, यह भी तो एक एक्सिडेंट है....”

जयन्ती की समझ में यह सब बात नहीं आई। चुप्पी साधे समझने का वहाना करती रही।

आनन्द ने अपना कथन जारी रखा, “तुमसे अचानक एक दिन मेरी मुलाकात होना भी तो एक एक्सिडेंट ही है। वरना कलकत्ते में साठ लाख आदमी हैं, मगर कब किससे किसकी मुलाकात होती है ! हर रोज़ हम लोग हज़ारों आदमियों के आमने-सामने आते हैं लेकिन किसी से किसी की मुलाकात नहीं होती है। फिर भी तुम्हें देखते ही क्यों लगा कि तुमसे ही मिलना जैसे सबसे जरूरी है ? तुम्हें भी क्या ऐसा नहीं लगा था ?”

जयन्ती ने कहा, “मालूम नहीं; इतनी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं....”

आनन्द ने कहा, “तुम सोचती हो कि मैंने मौसीजी से इतनी झूठी बातें क्यों कहीं ? दरअसल वे सब झूठी बातें नहीं हैं। झूठी बात उसी को कहते हैं जिसके पीछे बुरा उद्देश्य हो। असल में मेरा कोई मतलब नहीं है....”

जयन्ती बोली, “सो तो मालूम है ही।”

आनन्द ने कहा, “तुम सोचती हो, मेरे बारे में तुम्हें पूरी जानकारी नहीं है। फिर तुम मुझसे शादी करोगी ही क्यों ? मगर शादी करनी ही होगी—ऐसी कौन-सी बात है ?”

जयन्ती ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

“सच-सच बताओ, तुम किस मकसद से सड़क पर निकली थीं ?” आनन्द ने पूछा।

जयन्ती बोली, “घर में रहना अच्छा नहीं लग रहा था, इसी से सड़क पर निकल आई थी।”

“उसके बाद ?”

“उसके बाद देखा कि सड़क पर निकलने के लिए अच्छी-अच्छी साड़ियों की जरूरत पड़ती है, गहनों की जरूरत पड़ती है और पैसा कमाने के लिए मैं सड़क पर निकलने लगी।”

“आखिर वही करने के कारण गुण्डों के हाथ में पड़ गई थी। और मैंने आकर तुम्हारी रक्षा की। लेकिन असल में चाहे जो कहो, तुम-मैं, हम लोग सभी गुण्डे हैं—कोई साफ-सुथरे कपड़े पहने हैं और कोई मँले-कुचैले।”

आनन्द कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद बोला, "तुम्हारे मुहल्ले के लड़के भलेमानस नहीं हैं।"

"क्यों?"

"तुम पूछ रही हो : क्यों? देखा नहीं, जब गाड़ी लेकर आ रहा था, उन लोगों ने सड़क के नुककड़ पर खड़े होकर किस तरह सिसकारी देना शुरू किया? वे लोग कौन हैं?"

जयन्ती बोली, "उनमें से एक आदमी हमों लोगों के मकान के दोमंजिले का किरायेदार है।"

"सबके सब बदमाश हैं, लोफर!"

जयन्ती बोली, "उन लोगों के पास रुपया-पैसा जायदाद बर्गरह नहीं है..."  
वातचीत के दरमियान ही गाड़ी एक मकान के सामने रुकी।

जयन्ती ने कहा, "यह कहा ले आए? तुम लोगों का मकान है?"

आनन्द ने कहा, "नहीं; चलो, खन्दर जाने पर ही समझोगी।"

बाहर से देखने पर कुछ भी समझना मुश्किल है। चारो तरफ भले लोगों का मुहल्ला है। गाड़ी ज्योंही सामने जाकर पड़ी हुई, एक दरवान ने आकर सलाम किया और दरवाजा खोल दिया। आनन्द जयन्ती के साथ उतरा। उसके बाद सीधे अन्दर जाकर जीने से ऊपर की ओर जाने लगा। सगमरमर की सीढ़ियां थीं।

जयन्ती ने पूछा, "मुझे कहा ले आए हो? यह तुम्हारा मकान है?"

आनन्द ने कहा, "मान लो, यह एक तरह से मेरा मकान है। यहाँ तुम्हारे लिए डरने की कोई बात नहीं है।"

दोमंजिले पर पहुँचते ही जयन्ती ने अपने इर्द-गिर्द दृष्टि दीवाई और वाश्चयं में डूबने-उतराने लगी। मानो, सजा-सजाया सिनेमा का कोई सेट हो। सिनेमा में उसने इसी तरह का सजा-सजाया कमरा देखा था।

जयन्ती बोली, "तुम्हारा कारोबार अजीब है। पहले ही बताना चाहिए था। मैं एक अच्छी-सी साड़ी पहनकर आती।"

"तुम्हारे साथ मैं जो हूँ, डरने की कौन-सी बात है?"

वातचीत के दरमियान ही सामने एक अपारदर्शी कांच का दरवाजा खुला और वहाँ एक सूटधारी सज्जन बैठा हुआ दिख पड़ा। उसने हंसकर अग्रेजी में



कुछ कहा और आनन्द ने भी हंसकर उसकी बात का उत्तर दिया ।

भले आदमी ने जयन्ती की ओर हाथ बढ़ाया और जयन्ती के हाथ को लेकर हँडोक किया ।

“हाउ डू यू डू, मैडम ?” उसने कहा ।

जयन्ती अचकचाकर आनन्द की ओर ताकती रही । आनन्द फरटि के साथ अविराम अंग्रेजी बोलता रहा ।

इसके बाद अन्दर से कांच के दरवाजे को ठेलकर एक नर्स बाहर आई । जयन्ती को लगा, नर्स मेम साहब है । बिलकुल मेम साहब की तरह ही उसका चेहरा-मोहरा । दोनों गाल सेव की तरह लाल । सिर पर नर्सों की तरह ही रुमाल बंधा हुआ ।

नर्स ने जयन्ती से कुछ कहा । जयन्ती उसकी बात समझ नहीं सकी ।

आनन्द ने कहा, “तुम्हें अपने साथ अन्दर जाने को कह रही है । जाओ ।”

“तुम नहीं आओगे ?”

जयन्ती का चेहरा भय-से बुझ गया ।

आनन्द ने कहा, “तुम उसके साथ अन्दर जाओ । डरने की कौन-सी बात है ?”

इसके बाद बातचीत का क्रम रुक गया । मेम साहब होने से क्या होगा, है तो असल में औरत ही । औरत को औरत के निकट जाने में डरकी कौन-सी बात है ? मद रहता तो अलग बात थी ।

जयन्ती कुरसी से उठकर नर्स के पीछे-पीछे अन्दर की ओर जाने लगी और उसके बाद दरवाजे की ओट में अदृश्य हो गई ।

उस दिन भी सृष्टिघर आया । वही निश्चल मुसकराहट । हाथ में छाता लिए एकवारगी भवदुलाल की चौखट के सामने जाकर हाज़िर हुआ । अन्दर से दरवाजा बन्द था । पहले दरवाजे पर दो कड़ियाँ लगी थीं, किन्तु हिलाने-डुलाने के कारण बहुत दिन पहले ही खुलकर निकल चुकी थीं ।

सृष्टिघर आहिस्ता-आहिस्ता खटखटाने लगा ।

“कौन ?”

“मैं सृष्टिघर हूँ, बुआजी !”

यह बात हरेक के कान में पहुंची। भवदुलाल तब दफ्तर जाने की जल्द-वाजी में था। आवाज सुनते ही दौड़ता हुआ आ रहा था। उद्देश्य यही था कि सृष्टिघर को खूब जली-कटी मुनाए। मगर सास ने कहा, "तुम छोड़ दो, भव, मैं देखती हूँ।"

उसके बाद दरवाजा खोलते ही राधा बुआ बरस पड़ी, "किराया मांगने में शर्म नहीं लगती है, सृष्टिघर? तुम मुझे क्या सोचते हो? हम लोग क्या बँल-बकरी हैं? या आदमी?"

"छि: छि:", आप क्या कह रही हैं, बुआजी! मुझे अब शर्मिन्दा मत करें। कल मेरे मालिक आ रहे हैं।"

"देखो भैया, तुम हम लोगों के साथ तमाशा क्यों कर रहे हो? हम लोग काम-काज वाले आदमी ठहरे, कल मेरे नाती हुआ है। मैं एक हाथ से जच्चा-घर संभाल रही हूँ और दूसरे से गृहस्थी चला रही हूँ। तुमसे हंसी-मजाक करने का अभी मेरे पास वक़्त नहीं है।"

सृष्टिघर ने कहा, "मालिक न आएँ तो मैं क्या करूँ! मैं तो हुक्म का बन्दा हूँ।"

"तुम अगर हुक्म के ही बन्दे हो तो हम लोगों को बुआजी, चाचीजी, मेहमान साहब कहकर मत पुकारा करो। सिर्फ किराया बसूली का ही रिश्ता रहे। इतनी आत्मोपता की कौन-सी जरूरत है?"

सृष्टिघर ने कहा, "कल मालिक आएंगे या नहीं, यही कहने के लिए मैं आया था।"

"कल आ रहे हैं, कल आ रहे हैं, करते-करते कितने माल गुजर गए, सृष्टिघर? तुम्हारे मालिक को क्या काल ने ग्रस लिया? तुम्हारे मालिक के अत्याचार से हम लोग क्या इस घर में टिक नहीं पाएंगे? यही करना है तो तुम्हारा मालिक हमें साफ-साफ कह दे। हमारे पाखाने की सीढ़ी की भरम्मत तो होगी ही नहीं, यह मालूम है। सो चाहे भरम्मत मत कराओ, मगर यह जो लड़की-दामाद, नतिनी लेकर गृहस्थी चला रही हूँ, यह भी नहीं करने दोगे?"

"क्या हुआ, बुआजी? बात क्या है?"

"तुमसे कहकर फायदा ही क्या होगा, सृष्टिघर? भले आदमी के मुहल्ले में यह जो लड़की का कारोबार चल रहा है, यह क्या किसी से अनदेखा है?"

“लड़की का कारोबार ! आप क्या कह रही हैं, बुआजी !”

राधा बुआ बोली, “ठीक ही कह रही हूँ ! दिन-दोपहर, सुबह-शाम दूसरे मुहल्ले के लड़के गाड़ी लेकर आते हैं, मछली ले आते हैं, और भी न जाने किस-किस चीज के पैसे ले आते हैं। इसके अलावा, कपड़ा उतारकर नहाना मुश्किल है, ऊपर से जवान लड़के झांकते हैं। यह सब हम लोगों ने किसी भी जमाने में नहीं सुना था। या तो तुम्हारा मालिक हम लोगों का मकान मरम्मत करा दे और उस किरायेदार को हटा दे या इससे बेहतर है कि हम लोग सड़क पर डेरा-डंडी जमाएं। इससे सरकारी सड़क कहीं अच्छी है ! वहां भी आदमी की इज्जत की रक्षा होती है...”

कहते-कहते राधा बुआ की आवाज भर गई।

सृष्टिधर जैसे अब सचमुच लंकाकांड मचा देगा, छाते की मूठ को उसी तरह जमीन पर पटकता हुआ बोला, “ठीक है, बुआजी, मैं अभी जाकर चाचाजी से कहता हूँ।”

एकमंजिले की शिकायत जिस तरह दोमंजिले के खिलाफ है, दोमंजिले की शिकायत तीनमंजिले के खिलाफ है। एकमंजिले, दोमंजिले और तीनमंजिले में जिस तरह किसी भी दिन मेल-मिलाप नहीं होगा, सृष्टिधर का मालिक भी उसी तरह किसी दिन भी नहीं आयेगा।

दोमंजिले की हिमांशु सरकार की पत्नी भी वैसी ही है। वह कहती, “तुम उन लोगों से क्यों नहीं कहते हो, सृष्टिधर, कि हम उन लोगों की तरह नीच नहीं हैं। जो नीच होती हैं वे ही साल-दर-साल बच्चा जनती रहती हैं।”

सृष्टिधर कहता, “सो तो ठीक ही है, चाचीजी, आप विलकुल ठीक कह रही हैं।”

“तुम भैया, राधा बुआ से कहो कि उसकी ब्रेटी मेरे घर के जवान लड़के को दिखा-दिखाकर नंगे बदन मत नहाए।”

सृष्टिधर ने कहा, “अबकी मालिक आएँ। उनके आने पर नलघर की छत पर टीन का छाजन डलवा दोगे।”

“हमेशा से ही सुनती आ रही हूँ, सृष्टिधर, कि तुम्हारे मालिक कल आ रहे हैं ! सचमुच तुम्हारे मालिक को काल ग्रस गया है।” चाची कहती।

“नहीं चाचीजी, अबकी सचमुच कल आ रहे हैं। मुझे दिल्ली से चिट्ठी

भेजी है।”

चाची कहती, “आए तो मेरे जीने की रेलिंग [ठीक करा देना, भैया, कहीं किसी दिन तुम्हारे चाचाजी गिरकर मर न जाएं...”

किन्तु इसके बाद जब वह तीनमंजिले पर जाता तो सृष्टिघर को कोई और ही शिकायत मुननी पड़ती थी।

हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी कहती, “एकमंजिले की किरायेदार राधा युआ से कह देना, हरिपद, कि मेरी लड़की के बारे में अगर मुहल्ले-मुहल्ले में कहानी कहती फिरेगी तो मैं पुलिस को इत्तला कर दूगी। हां, कहे देती हूं...”

सृष्टिघर कहता, “अब कहानी-वहानी कहना नहीं चलेगा, मौसीजी, मालिक कल आ रहे हैं।”

“सचमुच आ रहा है, सृष्टिघर?” मौसी सुनकर थोड़ा आश्वस्त होती।

सृष्टिघर कहता, “हां मौसीजी, अब कोई गडबड नहीं होगी, मुझे दिल्ली से चिट्ठी आई है। मालिक ने लिखा है : मैं बुधवार को कलकत्ता पहुंच रहा हू, पहुंचते ही अपने किरायेदारों की तमाम गडबडियों को दूर कर दूंगा।”

“तुम्हारे मालिक चाक दूर करेंगे। अपने पुराने सभी किरायेदारों को इस मकान से हटाने की कहो। सभी पुराने किरायेदार कम किराया देते हैं, इसके चलते तो तुम्हारे मालिक को ही नुकसान हो रहा है।”

“हा, मौसीजी,” सृष्टिघर ने कहा, “पुराने किरायेदारों को अब मालिक रहने नहीं देंगे। मुकदमा दायर कर सबको हटा देंगे।”

“जानते हो, सृष्टिघर, वे लोग कितने नीच हैं, मेरी लड़की के नाम से मुहल्ले-मुहल्ले में खबर उड़ा रहे हैं।”

सृष्टिघर ने कहा, “आपकी लड़की के बारे में। आपकी लड़की तो देवी की अवतार है, मौसीजी! आपकी लड़की की लोग निन्दा किए चलते हैं? धक्कार है...”

“अपने मौसाजी को देखे हो न! किसीके सात-पांच में नहीं रहते हैं। सो तो तुमने अपनी ही आंखें देखा है। देखा है न?”

“आपकी लड़की भी तो किसी के सात-पांच में नहीं रहती है, मौसीजी।”

“मेरी लड़की! मेरी लड़की अगर किसी के सात-पांच में रहेगी तो उसे काटकर दो टुकड़े कर दूगी!”

यह दुनिया भी जैसे अजीब ही है ! यह उनतीस बटे तीन बटे छह, नील मणि हालदार लेन का मकान ! जैसे हर लमहे कोई न कोई विरोध चलता रहता है । हर लमहे सभी जैसे झगड़े के बीच वास कर रहे हों ।

मुहल्ले के नुककड़ पर विजय खड़ा होकर दोस्तों से हंसी-मजाक करता रहता है । दोस्तों की जमात उसके इर्द-गिर्द इकट्ठी होकर ताल-मेल मिलाती रहती है ।

भोलोदत्त कहता, “तेरे घर में रहती है, और तेरे सामने ही वह लड़क उड़ती फिरती रहती है ?”

केतो कहता, “उस छोकरे को कहां से जुटा लाई ?”

विजय कहता, “उस खुशनुमा गाड़ी को देखा है न ?”

पटला कहता, “साला दूसरे-के मुहल्ले में आकर गाड़ी का रौब गालिव करता है । मुचिपाड़ा के थाने का ओ० सी० मेरे मौसाजी का फ्रेंड है, सारा रौब किस दिन खत्म कर देंगे !”

विजय ने कहा, “जानते हो, कल तालाब से एक मछली ले आया था ।”

“कितनी बड़ी मछली थी ?” भोलोदत्त ने पूछा ।

“बीसेक सेर ।”

“तुझे कैसे पता चला ? तुम लोगों को खाने पर बुलाया था ?”

विजय बोला, “साला ! मछली की चोइयां देखकर समझा । सामने के कूड़े दान में तीनेक सेर मछली की चोइयां थीं—रूपये-भर साइज की चोइयां ! रास्ते के हर आदमी ने देखा है ।”

शुरू-शुरू में इसी तरह चल रहा था । किसी दिन मछली, किसी दिन रस गुल्ले की हांडी और किसी दिन रवड़ी ।

युवक गाड़ी लेकर मकान के सामने खड़ा होता था । गाड़ी के खड़े होते ही चारों तरफ के खिड़की-दरवाजे पटापट बन्द हो जाते थे । उसके बाद खिड़की के सूराख से हर कोई झांककर देखता रहता था । जब मकान के अन्दर चला जाता था तब वह युवक दिखाई नहीं पड़ता था । लेकिन कभी न कभी तो बाहर आएगा ही, तब उस पर नज़र पड़ेगी ।

और सचमुच तब वह दिख जाता था ।

हरिपद चक्रवर्ती की लड़की को अपने साथ लिए युवक गाड़ी पर बैठता था और धुआं उड़ाता हुआ आंखों से ओझल हो जाया करता था । लेकिन लौटता

कब था, इसका पता किसी को भी नहीं चलता था ।

भोलादत्त कहता, “बताओ तो, वे लोग कहां जाते हैं ?”

केतो कहता, “साला ! एक दिन फॉलो करूंगा...”

विजय कहता, “मैं मौके की तलाश में हूँ, एक दिन पता लगाकर छोड़ूंगा ।  
साला जाएगा कहा ?”

मिस्टर पराशर चतुर व्यक्ति है । उसका यह कारोबार आज का नहीं है । कारोबार की शुरुआत लड़ाई खत्म होने के बाद से ही हुई । बंगाल में १९४३ ईस्वी में अकाल पड़ा और मिस्टर पराशर सुदूर पंजाब से गिद्ध की तरह उड़कर आया और कलकत्ते के पार्क स्ट्रीट में जमकर बैठ गया ।

तब ऐसी हालत थी कि कूड़ेदान में एक रुपया फेंक देने से वह अशरफी होकर हाथ में लौट आता था । उसी पुण्य की बात है ।

मिस्टर पराशर कहता, “तब समय कुछ और ही था, मिस्टर राय ! तब आप आते तो आपको मैं फिफ्टी-सिक्सटी कमीशन दे सकता था । तब अंग्रेजों का राज्य था । वे लोग हमारी भलाई करेंगे या अपनी ? तब इनकम टैक्स का भी इतना झमेला नहीं था । दोनो हाथों से रुपया कमाया था और तमाम इंडिया में चोरी-चुपके फँला दिया था । तब आप क्यों नहीं आए ?”

आनन्द राय हंसता और कहता, “तब मेरा जन्म ही कहा हुआ था, सर ! या इन सबों की समझ ही मुझमें कहां थी ?”

मिस्टर पराशर कहता, “फिर जब कांग्रेस का राज्य आया, उस सन्न के मुनाफे में कोई कमी नहीं आई । मगर अब मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है ।”

आनन्द राय कहता, “मगर आजकल भुवकिल का कोई अभाव तो है नहीं ; आजकल तो और भी वृद्धि हो गई है ।”

“दुत, कहां वह जमाना और कहां आज का जमाना ! उस तरह के पैसे कहां हैं ? कंपिटलिसट तो अब ‘शाइ’ हो गए हैं । सारा पैसा उन्नीस के बन्दर गया है । पहले उसमें से कुछ पैसा फिल्म-इंडस्ट्री में लगाया जाता था, कुछ जमीन-जायदाद-मकान में और कुछ इस तरह की मौज मस्ती में —”

“अब भी तो सिनेमा, प्लैट बनाने और मौज-मस्ती में बर्बाद करने लगे हैं”

है, सर !”

मिस्टर पराशर भिन्न व्यक्ति की तरह मुसकरा देता था ।

सिगरेट का कश लेकर और धुआं उड़ाता हुआ कहता, “कमी आई है; आई है मिस्टर राय, मैं नब्ब ज टटोल सकता हूं। अब वैसे कितने कैप्टेन क्लाइंट हैं ?”

“फिर वे कहां चले गए ?”

“सब ठंडे पड़ गए हैं ।”

आनन्द राय ने कहा, “मुझे कुछ रुपयों की जरूरत है, सर !”

“उसी दिन तो आप तीन सौ रुपये ले गए थे !”

आनन्द राय ने कहा, “वह तो खर्च के मद में था । आपके आर्टिस्टों के पीछे खर्च करने में ही सारे रुपये खत्म हो गए ।”

“क्यों, इतने रुपये क्यों खर्च हो गए ?”

“वाह, मैंने तो आपको इसका एकाउंट दिया है ।”

“क्या हिसाब दिया है ?”

आनन्द राय ने कहा, “एकाउंट बुक देखिएगा तो आप समझ जाइएगा ।”

“कौन-सी आर्टिस्ट है ?”

“आर्टिस्ट नंबर फिफटी सेवेन—सत्तावन !”

मिस्टर पराशर ने खाता वाहर निकाला । मोटी जिल्द मड़ा खाता ! जल्दी-जल्दी नम्बर मिलाकर पन्ना निकाला और नाम और पते को देखा ।

“क्या नाम है ?”

“जयन्ती चक्रवर्ती ! उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन । एक दिन ड्रेकॉन-की एक साड़ी खरीद दी थी । उसी की कीमत तीस रुपया थी । उसके बाद डेढ़ सौ रुपये की सोने की कान की वाली । होटल में जो खिलाया है उसका बिल हुआ सत्तर रुपया । यह देखिए न, सब कुछ लिखा हुआ है । उसके बाद यह देखिए, गड़ियाहाट के मार्केट से बीस सेर वजन की एक कतला मछली खरीदकर उसकी मां को दे आया हूं । उनसे बताया था : यह मेरे तालाब की मछली है । मछली की कीमत ही एक सौ चालीस रुपये लिया है ।”

“एक सौ चालीस रुपये की मछली ! कौन-सी मछली है, साहब—सोने की ?”

आनन्द ने कहा, “सोने की मछली क्यों होगी ? वैसे ही मछली, जसी

कि हुआ करती है।”

मिस्टर पराशर ने कहा, “मछली देने से आर्टिस्ट को क्या फायदा हुआ ? इससे तो अच्छा रहता कि सोने का कोई गहना खरीद देते जो उसके काम में आता।”

आनन्द राय मुस्कराकर बोला, “आप क्या कहते हैं, मर ! आप बंगाली होते तो मछली की कद्र आपकी समझ में आती। बंगालियों को मछली खाने को मिल जाए तो आपके पैरो पर मस्तक टेक सकते हैं। साडी-गहना देने से जो काम नहीं हो सकता है, वह मछली देने से हो जाता है।”

मिस्टर पराशर ने कहा, “अच्छा, मह बात है !”

आनन्द राय ने कहा, “आर्टिस्ट नम्बर फिफ्टी सेवेन का आप मकान देखते तो हैरान हो जाते। वहां हर रोज आपकी यह खुशनुमा गाड़ी लेकर जाने पर सभी झांक-झांककर देखते हैं...”

“झांकने का मतलब ?”

“झांकेंगे नहीं ? उस गाड़ी की शकल देखकर लोगों के मन में सन्देह होता था। सोचते थे, लडकी फुमलाने वाली गाड़ी है। अबकी कोई दूसरी गाड़ी दीजिए जिससे कि भले मुहल्ले में आ-जा सकूँ।”

मिस्टर पराशर ने कहा, “भला आदमी बहुत देख चुका हूँ, मिस्टर राय, पाक स्ट्रीट में विज़नेस करने के बाद कलकत्ते के भले आदमियों को बखूबी देख चुका हूँ !”

“लेकिन यह कहने से तो नहीं होगा, मिस्टर पराशर ! मुझे ही भले आदमी के मुहल्ले में जाना पड़ता है, अगर लोग वेइज़त करेंगे तो मुझे ही करेंगे।”

उसके बाद अचानक प्रसंग बदलकर कहा, “मुझे इस महीने का कमीशन दीजिए।”

मिस्टर पराशर हंस दिया।

“अभी तो महीने की पहली तारीख है, और आप कमीशन माग रहे हैं ! अभी एकाउंट तैयार नहीं हुआ है।”

“सो आप समझिएगा, यह आपका निजी काम है। अभी कम से कम पार्ट-पेमेंट तो कीजिएगा। मैंने एक नया सूट बनवाया है, उसके बिल का अभी तरु भुगतान नहीं किया है।”



“फिर अभी डेढ़ सौ रुपये ले जाइए।”

आनन्द राय को गुस्सा आ गया। बोला, “डेढ़ सौ रुपये ? आप कह क्या रहे हैं ? डेढ़ सौ रुपये में कहीं सूट बनता है ? कम से कम चार सौ रुपये मुझे देना ही पड़ेगा।”

मिस्टर पराशर ने दराज से चेक की वही निकाली। उसकी मुद्रा इस प्रकार दिख रही थी जैसे निकालने में बड़ी तकलीफ का अहसास हुआ हो।

बोला, “आज तीन सौ दे रहा हूँ, बाकी कल दूंगा।”

“नहीं-नहीं, तीन सौ में मेरा काम नहीं चलेगा, मिस्टर पराशर, कम से कम साढ़े तीन सौ दीजिए। कल आपको फिर से तीन सौ देना होगा, वरना मेरी तो जान ही निकल जाएगी। अभी तो मछली की कीमत बाकी ही है।”

अंततः साढ़े तीन सौ रुपये का चेक जेब में डालकर आनन्द बाहर निकला। तब एक गाड़ी आकर पोर्टिको में खड़ी हुई। गाड़ी से एक भला आदमी उतरा जिसके साथ जयन्ती जैसी एक लड़की थी।

जाना-पहचाना ही आदमी था। आनन्द राय ने हाथ उठाकर शुभकामना व्यक्त की।

उसके बाद वह सीधे सड़क पर आया। एक सिगरेट जलाई फिर सड़क पार करके दूसरी तरफ के फुटपाथ पर पहुंचा और विपरीत दिशा की गली के अन्दर चला गया। वहाँ एक होटल था। उस होटल में कवाव मिलता था। होटल में कई गन्दी मेज-कुर्सियां थीं और उन पर कई तहमद पहने व्यक्ति बैठे थे।

आनन्द एक कुरसी पर जाकर बैठ गया।

“गोश्त-रोटी है ?” उसने पूछा।

यह पहले दिन की बात है।

पहले दिन जयन्ती थोड़ा-बहुत सहम गई थी। सुबह घर से निकली थी, दोपहर हो गई, फिर भी वापस नहीं आई। दोपहर बीतने के बाद तीसरा पहर आया, फिर भी वापस नहीं आई। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान में हरिपद चक्रवर्ती दफ्तर से वापस आया।

“जयन्ती कहां है ?” उसने पूछा ।

पत्नी बोली, “उस मुहल्ले में सिनेमा देखने गई है । अब आ चली ।”

“कब गई थी ?”

“दोपहर में ।”

उसके बाद रात हुई । हरिपद दिन-भर दफतर में बेहद खट चुका था, उसे भूख लगी । “खाना दो, खा लू !” उसने कहा ।

खाने के लिए बैठा तो हरिपद चक्रवर्ती ने अचरुचाकर पूछा, “इतनी मछली कहां से आई जी ?”

“आनन्द आया था, वही दे गया है ।”

“आनन्द ! आनन्द कौन ?”

पत्नी बोली, “आनन्द को तुम पहचानते नहीं हो । वह जयन्ती का मित्र है ।”

“जयन्ती का मित्र ! मित्र का मानी ?”

हरिपद चक्रवर्ती मानो आकाश से जमीन पर गिर पडा हो ।

“पुरुष-मित्र या महिला-मित्र ? कभी उसका नाम सुनने में नहीं आया ।”

पत्नी बोली, “तुम अपने धधे मे लगे रहते हो, जयन्ती किस-किससे हिलती-मिलती है, यह बात तुम कैसे जानोगे ? तुम्हारे पास उतना वक्त कहा है ? काम के अतिरिक्त तुम्हारे पास सुनने को कुछ भी नहीं है ।”

हरिपद चक्रवर्ती उस समय भी मछली की प्रचुरता देखकर आश्चर्य में खोया हुआ था । कतला मछली के बड़े-बड़े टुकड़े । हरिपद ने बहुत दिनों से ऐसी मछली नहीं खाई थी । बचपन वारिशाल में व्यतीत हुआ । वहा तालावों में बड़ी-बड़ी मछलियां पाई जाती थीं । वे दिन कब के गुजर चुके हैं । हरिपद को इतने दिनों के बाद जैसे देस की बातें दुवारा याद आने लगी ।

पत्नी तब बेरोकटोक कहे जा रही थी, “कब से तुम्हे कह रही हू, दूसरे मकान का इन्तजाम करो । इस बात पर तुमने कभी ध्यान दिया है ? सीडी कमजोर है, किसी भी दिन टूट सकती है । लेकिन तुमने किसी दिन मकान-मालिक से यह बात कही ?”

“मकान-मालिक से मुलाकात ही कहां होती है ? उस बेटे की शकल आज तक नहीं दिख पड़ी है । मैं क्या करूं ?”

पुष्प बोली, “अब तुम्हें कुछ कहना न होगा, आनन्द ने कहा है कि वही सब कर देगा।”

“कर देगा का मानी ?”

पुष्प बोली, “वह कोई दूसरा मकान ठीक करा देगा।”

हरिपद चक्रवर्ती बोला, “वस, तुम भी जैसी हो ! आजकल घर का इन्तजाम करना क्या आसान है ! अगर कोई भगवान की कामना करे और भगवान को ला दे, ऐसा कौन माहिर लड़का है, सुनू तो ज़रा !”

पुष्प गुस्सा हो गई, “अपने आप तो तुम किसी भी काम के नहीं हो ! जयन्ती ने फिर भी एक मित्र बनाया है, उसी पर भरोसा है। तुमने कभी इतनी बड़ी मछली हमें खिलाई है ?”

मछली वास्तव में अच्छी थी। हरिपद चक्रवर्ती ने बहुत दिनों से इतनी बड़ी मछली नहीं खाई थी। क्या ही स्वाद था ! कितना मीठा ! जैसे एक-एक टुकड़ा राजभोग हो।

पुष्प बोली, “आनन्द के अपने तालाव की मछली है।”

हरिपद बोला, “तालाव की मछली ? उसके अपने तालाव की ? कितना बड़ा तालाव है ?”

“मैंने देखा थोड़े ही है !”

रात में सोने के वक्त हरिपद ने दुवारा पूछा, “जयन्ती तो अब तक लौटकर नहीं आई।”

पुष्प भी लेटी हुई थी। बोली, “अभी आएगी, तुम इतनी फिक्र काहे करते हो ?”

“वाह जी, लड़की जवान हो गई है ! भला सोचू क्यों नहीं ?”

पुष्प बोली, “नहीं, सोचो मत, आनन्द के साथ निकली है, ज़रा घूम-फिर रही है, सो घूमे। मोटर पर चढ़ाकर सैर कराओ, तुम्हारी ऐसी औकात नहीं है।”

“लेकिन तुम्हारी लड़की क्या गाड़ी पर चढ़ने से ही रानी हो जाएगी ?”

“क्यों नहीं होगी ? तुम मुझे कभी मोटर पर लेकर सैर-सपाटा करने निकले हो ? तुम्हारे हाथ में पड़कर मैं सारी जिन्दगी तड़प-तड़पकर मरती रही। तुम्हारी लड़की भी तड़प-तड़पकर मरती रहे, तुम क्या यही चाहते हो ?”

हरिपद चक्रवर्ती ने अब एक भी शब्द नहीं कहा। करवट बदलकर सोने की जी-जान से कोशिश करता हुआ आंखें मूढ़े पड़ा रहा।

वह पहला दिन था। आनन्द बाहर काउंटर पर बैठा एक विलायती पत्रिका के पन्नों को उलट-पुलट रहा था। मिस्टर पराशर काम-काजी आदमी है। काम-काजी कहने का मतलब है जिम्मेदार। इतने एजेंटों को संभालने से लेकर इतनी-इतनी लड़कियों की व्यवस्था करनी पड़ती है। उसके बाद आर्थिक व्यवस्था। आर्थिक व्यवस्था ही मिस्टर पराशर के लिए सबसे कठिन काम है। हर कोई रुपया ऐंठना चाहता है। सभी को मालूम है कि इस कारोबार में पैसा है, इसलिए सभी रुपया ऐंठना चाहते हैं।

विशाल फ्लैट ! इस फ्लैट में दिन के वक़्त बंसी कोई घटना घटित नहीं होती है। निस्तब्धता तीरती रहती है। तब सिर्फ़ अजनबियों का आना-जाना लगा रहता है। जो पहले-पहल इस क्षेत्र में आती हैं, उन्हें शुरू में दोपहर के वक़्त लाया जाता है। उस वक़्त वे यहाँ के हाव-भाव से अभ्यस्त होती हैं, उनका संकोच दूर होता है। खाने के लिए उम्दा खाना दिया जाता है, भौंमाज किया जाता है, हाथ-पैर दवाएँ जाते हैं।

आनन्द पत्रिका पढ़ रहा था और बार-बार अन्दर के काच के दरवाज़े की ओर ताक रहा था।

“मिस्टर पराशर, मेरी आर्टिस्ट तो अब तक लौटकर नहीं आई...?”

मिस्टर पराशर ने कहा, “आज पहला दिन है न, अब आ ही चली।”

“देखिएगा, मिस्टर पराशर, किसी दिन यह बड़ी ही अच्छी आर्टिस्ट साबित होगी। किसी दिन मेरी आर्टिस्ट बहुत नाम पैदा करेगी। सब मेरा कमीशन आपको बढ़ाना होगा।”

तभी जयन्ती आती हुई दिख पड़ी।

आनन्द ने उसकी ओर वेधक दृष्टि डाली। नर्स जयन्ती को काउंटर तक ले आई।

आनन्द जयन्ती की मुख-मुद्रा की भलीभाँति परीक्षा करने लगा : खुश है या नाखुश, क्रोध में है या ऊब में ? उसका पूरा चेहरा जैसे आग की तरह लाल हो। मानो, देह का तमाम रक्त चेहरे पर आकर ठहर गया हो।

सीधे आकर आनन्द से सटकर खड़ी हो गई। उस वक्त उसकी देह से मीठी-मीठी इत्र की खुशबू निकल रही थी।

आनन्द ने चाहा कि वह खड़ा होकर जयन्ती के कंधों को झकझोर दे। जैसे हिलाने-डुलाने से उसके मुंह से सारी बातें बाहर निकल आएंगी।

“क्या हुआ ? चेहरा इतना लाल क्यों दिख रहा है ? लाज लग रही है ?”

जयन्ती के मुंह से कोई शब्द नहीं निकला। उसके बाद आनन्द के साथ जाती हुई बोली, “सचमुच मुझे बड़ी शर्म लग रही थी।”

“शर्म क्यों लग रही थी ?”

“शर्म नहीं लगेगी ? मेरी साड़ी-ब्लाउज सब उतारकर मेरे पूरे जिस्म को सहलाने लगी।”

आनन्द हंस पड़ा, “उससे क्या हुआ, मैंने तो सहलाया नहीं है। वह तो नस है—औरत !”

“औरत होने से क्या होगा ? लेकिन वैसा क्यों कर रही थी ?”

“तुम्हें अच्छा नहीं लगा ?”

“हां, बड़ा ही अच्छा लग रहा था।”

“फिर ? उसे माँसाजिग कहा जाता है।”

तब वे दोनों उतरकर पोर्टिको में आ चुके थे। गाड़ी वहीं खड़ी थी। दोनों गाड़ी के अन्दर जाकर बैठ गए। आनन्द ने गाड़ी को स्टार्ट किया। गाड़ी सड़क पर तीव्र गति से भागने लगी।

जयन्ती ने कहा, “अच्छा, इसके लिए तुम्हें पैसा खर्च करना पड़ा ?”

“वाह, पैसा खर्च नहीं होगा ? वेवजह कोई आराम पहुंचाता है ?”

“लेकिन, बगल के कमरे में भी मेरी ही जैसी एक लड़की की आवाज सुनाई पड़ी। तब समझ में आया कि और भी बहुत-सी लड़कियां यहां आती हैं। क्या करने आती हैं वे ? माँसाज कराने ?”

आनन्द एकाएक पूछ बैठा, “तुमने खाना खा लिया है ?”

जयन्ती ने कहा, “हां; मगर वह कौन-सी चीज दी ? शरबत ?”

आनन्द ने पूछा, “कौन-सी चीज ?”

जयन्ती बोली, “वही जो बड़ी ही मीठी और तीखी जैसी लग रही थी।”

आनन्द ने पूछा, “पीने में अच्छी नहीं लगी ?”

जयन्ती ने कहा, "हां, पीने में बड़ी अच्छी लगी।"

"शरबत था। अभी जो तुम इतनी खूबसूरत दिखती हो, इसका कारण उसका पीना ही है।"

"लेकिन पीने से बड़ी नींद आती है।"

"नींद तो लगेगी ही। अच्छी चीज पीने से नींद आती ही है। हां, तो अब घर लौटोगी या कहीं और जाओगी?"

जयन्ती बोली, "तुम घाना नहीं खाओगे?"

आनन्द ने कहा, "मैंने बही खाना खा लिया है। मेरे लिए चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं। बताओ, कहां चलोगी?"

जयन्ती ने कहा, "तुम्हारा घर मैंने अब तक नहीं देखा है, अपने घर पर से चलो।"

"गरीब के घर पर चलकर क्या करोगी? वह विल्कुल मरुभूमि है।"

"मरुभूमि का मानी?"

"यानी वहां कोई नहीं है, कुछ भी नहीं। एक घाट है। जरूरत पड़ने पर वहां जाकर सो रहता हूं। इसके सिवा मेरा अपना कोई नहीं है।"

"बाप रे, तुम्हारे पास इतने पैसे हैं और परिवार में कोई नहीं? फिर तुम्हारे इतने पैसे को कौन भोगेगा?"

आनन्द बोला, "और कौन भोगेगा, भोगेगी मेरी पत्नी..."

"तुम्हारी पत्नी? तुम्हारी पत्नी कहां है?"

"आज नहीं है, मगर कभी न कभी होगी ही।"

"तो यही कहो न!"

आनन्द की बातें सुनकर जयन्ती को जैसे निश्चिन्तता का बोध हुआ।

"तुमने तो यों बातचीत की जैसे तुम्हारी शादी हो चुकी हो। सब-मच बताओ, तुम कभी न कभी शादी करोगे तो?"

आनन्द ने कहा, "क्या बात है? शादी क्यों नहीं करूंगा? हमेशा कुंआरा ही रहूंगा? फिर बीमार पड़ने पर मेरी देख-भाल कौन करेगा? मेरी सेवा कौन करेगा?"

जयन्ती ने कहा, "आदमी सेवा पाने के लिए ही शादी करता है?"

आनन्द ने कहा, "सेवा नहीं तो और क्या? पत्नी से कोई प्रेम नहीं करता

है। चाहे प्रेम कहो, चाहे मौज—यह सब शादी के पहले ही होता है। जिस तरह अभी मैं तुमसे प्रेम करता हूँ...”

जयन्ती सिहर उठी।

“जानते हो, तुमसे मुलाकात होने से पहले मैं किसी के प्रेम के चक्कर में नहीं फंसी थी?”

आनन्द ने कहा, “प्रेम तुमने नहीं किया है, लेकिन रास्तों में क्या चक्कर नहीं लगाया है?”

“घर में रहना अच्छा नहीं लगता है। तुम मेरा मकान देख ही चुके हो—उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन! वहाँ आदमी कहीं वास कर सकता है? जानते हो, निचले मंजिले पर एक किरायेदार रहता है, उसकी औरत को साल-दर-साल वच्चा होता रहता है? मुझे बुरा लगता है...”

“लगता है, वह आदमी अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता है।”

“खाक प्यार करता है! ऐसे प्यार के मुँह में आग लगे। शर्म भी नहीं लगती है। मर्द औरत का पेट कभी खाली नहीं रहने देता है। कभी-कभी जी पें होता है कि उस मर्द की हत्या कर डालूँ...”

आनन्द हँसने लगा।

“तुम्हारी भी शादी होगी तो तुम्हें साल-दर-साल वच्चा होगा।” आनन्द ने कहा।

“कभी नहीं! हमारे दोमंजिले पर हिमांशु वावू नाम का एक आदमी रहता है। उसके ज्यादा बाल-बच्चे नहीं हैं। सिर्फ एक ही लड़का है।”

“जो लड़का तुम्हारा पीछा करता रहता है, वही न?”

“हां; तंग मोहरी की लंबी काली पैट पहनकर चक्कर काटता रहता है। सड़क के नुक्कड़ पर खड़ा होकर लड़कियों की ओर ताकता है और सिसकारी देता है।” जयन्ती ने कहा।

“तुम्हारा मकान एक अजीब चीज है! चाहे जो कहो।”

जयन्ती ने एकाएक कहा, “चलो, सिनेमा चलें।”

“सिनेमा? इससे तो अच्छा है कि कहीं दूसरी जगह चलो। गाड़ी है ही। चलो, जहां दो आंखें ले जाएं—चाहे वारासात, या वशीरहाट, या इटिण्डा घाट। और अगर यह अच्छा न लगे तो ग्रैंड ट्रंक रोड पकड़कर नतेरहाट, तोपचांची,

हजारीवाग चलो...”

पहला दिन ! पहले दिन ही जयन्ती को बड़ा अच्छा लगा । पहला दिन सभी को बहुत अच्छा लगता है । उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन से बाहर निकलकर यह जैसे स्वर्ग के सिंहद्वार पर पहुंचना है । एकमंजिले के जीने पर जाकर फटी कयरी और मैली तोशक से साक्षात्कार करना नहीं है और न तीनमंजिले पर जाकर अपने घर की लज्जाहीन दरिद्रता से साक्षात्कार करना ही । एक पैसा कही अधिक खर्च न हो जाए, मा की यह बुद्धिचन्ता यहा नहीं है । यहां है गाड़ी पर चढ़कर सैर-सपाटा करना, बदन में फरहरी हवा लगाना । मस्तक के ऊपर नीला आकाश और आनन्द की जेब में अपार पैसा है । खर्च करना है, करो; चाय पीनी है, पियो; घूमना है, घूमो । जैसे जयन्ती इसी आस्वाद की बहुत दिनों से कामना कर रही थी । चलो, जितनी दूर तक चलने की इच्छा है, चलो; आगे बढ़ते जाओ ।

हिमांशु बाबू का लडका रात दस बजे अड्डेबाजी करने के बाद उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान में वापस आ रहा था । एकमंजिले के किरायेदार के मकान से तब गली में रोशनी आकर तैर रही थी । आज मजलिस ठीक से जम नहीं पाई थी । भोलादत्त की जेब में चार आने पैसे थे ।

केतो को गुस्सा हो आया था और उसने कहा था, “तुझे शर्म नहीं आती, है, भोला ! माल भरपूर गटकोगे और जेब में लेकर आते हो चार आने पैसे ! हर रोज तुझे गांठ से पैसा निकालकर माल नहीं पिला सकूंगा, कहे देता हूँ...”

पटला यों मस्त आदमी है । झगड़े की भनक पाकर बोला, “चुप रह केतो, शाम होते न होते दिमाग गरम मत कर ।”

पटला इस तरह की बातें बहुत सुन चुका है । शुरू-शुरू में आपस में चदा करके शराब पीने का नियम था । हर कोई बराबर चदा देता था । कुल तीन रुपये ही में नशा आने लायक माल मिल जाता था । इसका मानी यह कि हर व्यक्ति को बारह-बारह आना पैसा देना पड़ता था । उसके साथ थोड़ा-बहुत चना-चूर और चाट की जरूरत पड़ती थी । बारह आने में ही इस तरह सस्ते में नशा



आ जाए, ऐसी चीज़ कलकत्ता शहर में क्या है ? मयूरभंज के अंधे फुटपाथ पर खड़ा होकर गिलास से गटागट पीने के बाद तुम्हें अलादी चिराग का पता चल सकता है। मान ले सकते हो कि तुम बहुत बड़े हुए हो। तुम्हारे पास एक अच्छा-सा मकान है, तुम दो हजार रुपये तनौकरी करते हो, तुम गाड़ी हांकते हुए कलकत्ता पार करके बहुत दूर हो—या तो जसोर रोड, या बारासात, या वशीरहाट, या इटिण्डाघाट ट्रंक रोड पकड़कर सीधे नेतरहाट, तोपचांची, हजारीबाग...

दस बजे के बाद नशा अपना रंग दिखाने लगा। विजय उस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान की ओर वापस जा "कौन?"

एकाएक गाड़ी की आवाज़ सुनकर उसकी हालत ऐसी हो गई जैसी हो गया हो। लगा, जैसे गाड़ी उसे अब कि तब धक्का लगा देगी। निरास्ते से हटकर फुटपाथ की ओर जाने लगा। लेकिन तब जो घटित घट चुका था। गाड़ी लड़खड़ाती हुई विजय की गरदन पर चढ़ गई।

गाड़ी का ब्रेक ठीक वक्त पर ही लगाया गया था, लेकिन संभवतः हो चुकी थी। धक्का लगते ही विजय ज़मीन पर लुढ़क पड़ा।

जयन्ती के मुंह से 'रोको-रोको' शब्द निकला।

आनन्द गाड़ी के दरवाज़े को खोलकर ज्योंही विजय को उठाने आने के लिए दौड़ा, "गाड़ी चला रहे हैं और आंख से दिख नहीं पाएंगे का वच्चा कहीं का!"

उसके बाद जयन्ती पर ज्योंही उसकी दृष्टि गई, उसका दिख गया।

"लड़की लेकर मौज मनाने निकले हैं इसलिए सड़क की तरफ देते हैं? अगर मैं दबकर मर जाता?"

आनन्द ने कहा, "इतना चिल्ला क्यों रहे हैं? आपको क्या हुआ"

"आप आंखें दिखा रहे हैं? गाड़ी से दबाकर आंखें दिखा रहे हैं, मैं आपके नाम से पुलिस केस कर सकता हूँ।"

"जाइए, जाइए..."

आनन्द भी बदमाशी में उन्नीस नहीं पड़ता था। बोला



आ जाए, ऐसी चीज कलकत्ता शहर में क्या है ? मयूरभंज के अंधेरे रास्ते में फुटपाथ पर खड़ा होकर गिलास से गटागट पीने के बाद तुम्हें अलादीन के अजीब चिराग का पता चल सकता है। मान ले सकते हो कि तुम बहुत बड़े आदमी हो गए हो। तुम्हारे पास एक अच्छा-सा मकान है, तुम दो हजार रुपये तनखाह की नौकरी करते हो, तुम गाड़ी हांकते हुए कलकत्ता पार करके बहुत दूर जा रहे हो—या तो जसोर रोड, या वारासात, या वशीरहाट, या इटिण्डाघाट। या ग्रैंड ट्रंक रोड पकड़कर सीधे नेतरहाट, तोपचांची, हजारीबाग...

दस बजे के बाद नशा अपना रंग दिखाने लगा। विजय उस वक्त उन्तीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान की ओर वापस जा रहा था।

“कौन ?”

एकाएक गाड़ी की आवाज सुनकर उसकी हालत ऐसी हो गई जैसे नशा दूर हो गया हो। लगा, जैसे गाड़ी उसे अब कि तब धक्का लगा देगी। विजय तत्काल रास्ते से हटकर फुटपाथ की ओर जाने लगा। लेकिन तब जो घटित होना था, घट चुका था। गाड़ी लड़खड़ाती हुई विजय की गरदन पर चढ़ गई।

गाड़ी का ब्रेक ठीक वक्त पर ही लगाया गया था, लेकिन संभवतः कुछ देर हो चुकी थी। धक्का लगते ही विजय जमीन पर लुढ़क पड़ा।

जयन्ती के मुंह से ‘रोको-रोको’ शब्द निकला।

आनन्द गाड़ी के दरवाजे को खोलकर ज्योंही विजय को उठाने आया, विजय ने के लिए दौड़ा, “गाड़ी चला रहे हैं और आंख से दिख नहीं रहा है ! अर का बच्चा कहीं का !”

उसके बाद जयन्ती पर ज्योंही उसकी दृष्टि गई, उसका दिमाग गरम हो गया।

“लड़की लेकर भाज मनाने निकले हैं इसलिए सड़क की तरफ ध्यान नहीं देते हैं ? अगर मैं दबकर मर जाता ?”

आनन्द ने कहा, “इतना चिल्ला क्यों रहे हैं ? आपको क्या हुआ ?”

“आप आंखें दिखा रहे हैं ? गाड़ी से दबाकर आंखें दिखा रहे हैं ? मालूम है, मैं आपके नाम से पुलिस केस कर सकता हूँ।”

“जाइए, जाइए...”

आनन्द भी बदमाशी में उन्तीस नहीं पड़ता था। बोला, “जाइए, जाइए,

ज्यादा शान मत दिखाइए । आनन्द राय को पुलिस का भय मत दिखाइए ।”

विजय तनकर खड़ा ही गया और आनन्द के सामने जाकर बोला, “मौज मनाने चले हैं और उस पर पराये मुहल्ले में आकर आंख दिखाते हैं ? खबरदार, जवान सभालकर बातचीत कीजिए !”

आनन्द राय ने जब देखा कि उसे कोई घास चोट नहीं लगी है तो जयन्ती से कहा, “चली आओ, ठर्रा पीने के कारण साले का दिमाग विगड़ गया है ।”

“क्या कहा, मैं पियक्कड़ हू ?”

“हां-हां, पियक्कड़ की पियक्कड़ नहीं कहूं तो क्या भला आदमी कहूं ? नरो में धुत होकर घर लौटने में शर्म नहीं आती ? विलायती शराब पीने का पंसा नहीं है तो ठर्रा क्यों पीता है ? चली आओ जयन्ती !”

विजय का खून खौल उठा । ठर्रे के साथ वार्ड्स साल का खून मिलकर दिमाग पर चढ़ गया ।

बोला, “साले, ठर्रा पिया है, तो ठीक किया है । तेरे बाप के पंसे से ठर्रा पिया है ?”

“साले !”

आनन्द अब खुद को संयत नहीं रख सका । बात करते-करते विजय के गाल पर कसकर थप्पड़ जमा दिया और विजय उसी क्षण जमीन पर गिर पड़ा ।

“साला फिर बाप के नाम से गाली दे रहा है ! ...”

तभी नीलमणि हालदार लेन की सड़क पर एक-एक कर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई । नीलमणि हालदार लेन की सड़क पर काफी रात तक लोगों का आना-जाना लगा रहता है । कोई तमाम दिन की संझटों के बाद घर लौटता है और कोई सिनेमा देखकर वापस आता है । इस तरफ के लोगों के लौटने का एकमात्र रास्ता यही है ।

शोर-शराबे से आस-पास के मकानों की खिड़किया फटाफट खुल गईं और लोग अंधेरे घरों से झाक-झांककर रास्ते की तरफ देखने लगे ।

राधा बुआ तब जगी हुई थी । नेड़ी को खाना खिलाने और नाती-नातनियों को मुला लेने के बाद ही उसे राहत मिलती थी । उसके बाद बहू दूसरे दिन के लिए गोबर लीपकर, दो-चार जो बरतन रहते थे, मल लेती थी । फिर रसोई घर को छोड़कर एक किनारे उपले और कोयला सजाकर रख देती थी । नीक जमी

वक्त रास्ते में शोरगुल मचने लगा ।

“ओ भव, भव, शोरगुल क्यों हो रहा है ? लगता है, हमीं लोगों की गली के सामने मारपीट हो रही है ।”

भव तब तहमत उतारकर विछावन के एक कोने में लेटा-लेटा वीड़ी का आखिरी कण खींच रहा था । मारपीट की आवाज़ उसके कानों में भी पहुंची थी ।

“रास्ते में कौन किसको मार रहा है, इसके लिए आप माथापच्ची मत करें ।” उसने कहा ।

राधा बुधा बोली, “हम लोगों के मकान के सामने हो रहा है, आवाज़ पहचानी जैसी लगती है ।”

उसके वाद भव उत्सुकता दवाकर रह नहीं सका और सदर दरवाजे की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आया ।

न केवल उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के एकमंजिले से ही आदमी बाहर आया बल्कि दोमंजिले के हिमांशु बाबू के मकान में भी तब हलचल मच गई थी । हिमांशु बाबू की पत्नी जागकर पुकारने लगी, “अजी ओ, उठो, उठो, लगता है जैसे हमारे विजय की आवाज़ हो...”

हिमांशु बाबू को दिल की बीमारी है । डॉक्टर ने शाम होने से पहले ही खा लेने को कहा है । डॉक्टर ने बार-बार हिदायत की थी, ‘कभी घबराइएगा मत, घबराने से परेशानी उठानी पड़ेगी...’

हिमांशु बाबू की पत्नी ने कहा था, ‘आप इन्हें अच्छी तरह समझा जाएं, मेरी बात पर कान नहीं देंगे ।’

डॉक्टर ने कहा था, ‘वे बयस्क आदमी हैं, बचपना करने से काम नहीं चलेगा । खुद भला-बुरा समझ सकते हैं ।’

‘सो होने से क्या होगा ! वे हर बात में माथापच्ची करते हैं, जैसे हर चीज़ में उन्हें दखलन्दाजी करनी चाहिए । मैं रसोईघर में क्या बना रही हूँ, यह भी उनसे अनदेखा नहीं रहना चाहिए ।’

‘क्यों, रसोईघर में जाकर देखने से उन्हें क्या लाभ होता है ? खाने बैठेंगे तो नज़र पड़ेगी ही ।’

पत्नी ने कहा था, ‘सो कहने से कौन सुनता है ! रसोईघर में मेरे पीछे-पीछे

बचकर काटे बिना उन्हें चैन नहीं मिलता है।'

डाक्टर ने झिड़कियां सुनाई थी, 'नहीं; वहां उन्हें जाने मत दें। आपका लड़का तो है ही, वह तो काम-काज कर ही सकता है। लड़का जय बड़ा हो जाता है तो हर काम में बाप की ज़रूरत नहीं पड़ती है। अब लड़के को ही गृहस्थी की देख-भाल करनी चाहिए।'

'लेकिन उसे भी तो कॉलेज जाना पड़ता है, काम-काज करना पड़ता है!'

'कॉलेज रहे, काम-काज भी रहे; काम-काज रहने से गृहस्थी की देखरेख नहीं करनी चाहिए? उस पर ही सारी जिम्मेदारी थोपकर आप इनकी थोड़ी-बहुत देख-भाल करें। लड़के की शादी हो ही चुकी है, उसकी पत्नी अब रसोई-पानी का इन्तज़ाम करे।'

'तब तो हो चुका! वह सिनेमा देखेगी, साज-सिंघार करेगी या मेरी रसोई की देखभाल करेगी? हम लोग बूढ़ा-बूढ़ी जब तक हैं, तब तक हमें मुक्ति नहीं मिलने जा रही है।'

मुहल्ले का डॉक्टर है, इस घर के बारे में उसे एक-एक जानकारी है। उसने अधिकांश बातचीत नहीं की। बंग को हाथ में सभालकर और फीम के पैसे जेब के हवाले कर चला गया था। लेकिन फिर भी पत्नी ने हिमांशु बाबू को बड़ी सावधानी के साथ रखा था। दिन-भर जोर-जबर्दस्ती लिटाकर रखती थी।

लेकिन उस दिन शोरगुल सुनकर पत्नी की नींद टूट गई।

वह फिर से पुकारने लगी, "अजी, उठो, उठो...अजी ओ, सुन रहे हो?"

हिमांशु बाबू की इतनी तकलीफ से आई नींद आकस्मिक पुकार से टूट गई। बोले, "कौन?"

"सुन रहे हो! बांख मलो, सुन रहे हो! बाहर शोरगुल हो रहा है? लगता है, हम लोगों के विजय के गले की आवाज़ है!"

हिमांशु बाबू ने कहा, "नीचे उतरूं?"

"नीचे उतरने को तुमसे कौन कहता है? मैं तो सिर्फ यही कह रही हूँ कि एक बार खिड़की से झाँककर देखो।"

हिमांशु बाबू कमजोर आदमी ठहरे, फिर भी कराहते हुए हिलने-डुलने की कोशिश की।

वह तब अपने कमरे में सोई हुई थी। उस कमरे के सामने भी जाकर सास

ने पुकारा, "गोपा, ओ व्ह, सोई हुई हो क्या ?"

जब उत्तर न मिला, दरवाजे की जंजीर खटखटाने लगी। "बाप रे, व्ह कितनी नींद में है ! विजय के आने के पहले ही वेखवर सो चुकी है ..."

खट से सिटकनी खोलने की आवाज सुनते ही सास ने मुंह घुमा लिया।

वोली, "तुम तो नींद में वेखवर पड़ी हो, उधर नीचे शोरगुल सुन रही हो ? विजय की आवाज सुनाई नहीं पड़ रही है ?"

इतना कहकर सास वहां रुकी नहीं। फिर से वरामदे को पारकर अपने कमरे में चली आई।

हिमांशु बावू खिड़की से झांक रहे थे।

"एक मोटरगाड़ी खड़ी दिख रही है। किस चीज की गाड़ी है ?" उन्होंने पूछा।

उधर हरिपद चक्रवर्ती तीनमंजिले से ही पुकारने लगा, "ओ जयन्ती... जयन्ती..."

उसमें नीचे उतरने का साहस न था। जयन्ती की मां ने भी कहा, "जयन्ती को पुकारो न, ऊपर चली आए ! वहां भीड़ में मुंहजली क्या कर रही है ?"

हरिपद बोला, "वह गाड़ी किसकी है ?"

पुष्प बोली, "वह बड़ी-बड़ी कतला मछली जिसने दी थी, उसी की है। आनन्द को सबने घेर लिया है जी, तुम ज़रा उन लोगों को ऊपर बुला लो।"

"इतनी रात तक वे दोनों कहाँ थे ?"

पुष्प गुस्साकर बोली, "गाड़ी है इसलिए दिन-भर घूमते रहे। वे लोग घूमते-फिरते हैं तो तुम्हें क्रोध क्यों आता है ? वाद में जो कहना होगा, उनसे कहना, अभी ऊपर बुला लो। कहो कि ऊपर चले जाएं।"

नीचे रास्ते में अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

नीलमणि हालदार लेन ने जैसे रातों-रात हाट का रूप ले लिया हो। तभी सिनेमा का आखिरी शो खत्म हुआ। औरतों और मर्दों की जमातें उनतीस बटे तीन बटे छह नंबर मकान के सामने आकर खड़ी होने लगीं।

"साला दूसरे मुहल्ले का लड़का मुझे पियक्कड़ कहेगा ?"

एकाएक कोई उधर से दौड़ता हुआ आया। भोलादत्त था। पता नहीं कौन उसके घर में जाकर खबर पहुंचा आया कि पराये मुहल्ले के एक लड़के ने विजय सरकार को मार-मारकर घराशायी कर दिया है। वह वहीं से चिल्लाता

हुआ था, "कौन साला विजय को मार रहा है, देख लूंगा..."

सिर्फ भोलादत्त ही नहीं, पटला है, केतो है। जो लोग मयूरभंज में एक साथ माल पीने जाते हैं, सभी आ गए। तमाशा शुरू हो गया। मुहल्ले में ही-हल्ला मच गया।

"विजय सरकार को पराये मुहल्ले का लडका मार रहा है, यह हम बरदारत नहीं करेंगे।"

विजय तब देह की धूल झाँककर खड़ा हो चुका था।

"आ साले, तुझे देख लूंगा, देख लू तुझमें कितनी हिम्मत है। आ मुझसे लड़..."

आनन्द राय कमीज की बाह मोड़कर मुकाबले के लिए खड़ा हो गया।

"अच्छी बात कही और उस पर गाली-गलौज करेगा?"

"गाली-गलौज पहले तूने किया है या मैंने?"

"मैंने कब पहले गाली दी? जयन्ती, तुम गवाह हो..."

कोई एक आदमी बोल उठा, "आपने उसे एकाएक धक्का क्यों दिया, साहब? गाड़ी चलाते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि हमें आदमी में गिनो ही नहीं। हमें आप गाय-बकरी-भेड़ समझते हैं?"

जयन्ती ने कहा, "चलो आनन्द दा, यहाँ से चलो, तुम्हें अकेले में पाकर ये लोग तुम्हें अपमानित करेंगे..."

आनन्द भी हटने वाला जवान न था।

उमने कहा, "अकेले पाकर अपमानित करेगा—इसका मानी? मैं इन लोगों से डरनेवाला जीव नहीं हूँ। देखना है कि कितने बदन में कितनी ताकत है!"

"देख नहीं रहे हो कि वह ठर्रे के नसे में है, उसका दिमाग काबू में नहीं है।"

ऊपर से हरिपद चक्रवर्ती के गले की आवाज तीरती हुई आई, "ओ जयन्ती, यहाँ क्या कर रही है, ऊपर चली आ..."

हिमांशु बाबू ने खिड़की से झाँककर देखा। लेकिन चिल्लाने की ताकत उनके कलेजे में न थी। डाक्टर ने उन्हें घबराने से मना किया है। फिर भी उन्होंने चिल्लाकर पुकारा, "अरे विजय, वहाँ क्या हुआ?"

राधा बुआ बाहर निकलकर सब देख-मुन रही थी। सीधे आकर बोली,



“तुम लोगों को शोरगुल करने की कोई और जगह नहीं मिली ? मेरी गर्भवती लड़की बगल के कमरे में लेटी हुई है, तुम लोग जरा उधर हटकर गाली-गलौज करो...”

भवदुलाल रास्ते पर खड़ा था ।

उसने अपनी सास से कहा, “आप चुप रहिए, मां ! आप चुप रहिए, आप उन लोगों के झगड़े के बीच मत कूदिए ।”

तभी भोलादत्त मैदान में कूद पड़ा ।

आते ही उसने दोनों व्यक्तियों को अलग कर दिया । बोला, “क्या हुआ है ? इतना शोर-शरावा क्यों ?”

आनन्द राय ने भोलादत्त की ओर ताककर कहा, “आप कौन हैं ?”

भोलादत्त बोला, “मैं चाहे कोई होऊँ, आप किसे गाली-गलौज कर रहे हैं ?”

“मैं आपको कैफियत देना नहीं चाहता ।” आनन्द राय ने कहा, “जहाँ तक गाली-गलौज की बात है, मैंने पहले शुरु नहीं किया है, उसी ने शुरु में मुझे गाली दी है...”

जयन्ती आनन्द का पक्षपात करती हुई बोली, “हां, मैं गवाह हूँ, जहाँ तक गाली-गलौज की बात है, हिमांशु बाबू के लड़के ने ही उसकी शुरुआत की है ।”

केतो ने जयन्ती को फटकारा, “आप इन दोनों के बीच क्यों टपकती हैं ? भोला ने आपसे थोड़े ही पूछताछ की है ? जिससे सवाल किया गया है, वह जवाब देगा ।”

आनन्द ने कहा, “मैंने तो बताया ही कि पहले उसने गाली-गलौज की शुरुआत की है । मैं गाड़ी चलाते हुए आया और यहाँ मैंने अपनी गाड़ी खड़ी की ठर्रा पीकर आया और लड़खड़ाकर गिर पड़ा...”

भोलादत्त ने आनन्द की नेकटाई पकड़कर झकझोर दिया, “खबरदार मुंह से गाली मत निकालो ...”

“मैंने कब गाली दी ? मैंने तो सिर्फ यही कहा कि शराब के नशे में रहने के कारण लड़खड़ाकर गिर पड़ा...”

“फिर ?”

भोलादत्त ने आनन्द राय को दुवारा बुरी तरह झकझोर दिया ।

जयन्ती फूट-फूटकर रोने लगी, "अजी, ये लोग मेरे आनन्द को मार रहे हैं..."

केतो ने कहा, "बुप रहिए, आप क्यों रो रही हैं ? उस्ताद ने आपसे तो कुछ कहा नहीं है।"

भोलादत्त तब आनन्द की ओर मुखातिव होकर कह रहा था, "अपनी खुशी से उसने शराब पी है, अपने पैसे से शराब पी है, कोई आपके पाप के पैसे से तो शराब नहीं पी है न ! हम लोगों का देश आजाद है, अपनी इच्छा के अनुसार काम करने के लिए हर कोई स्वतन्त्र है। आपकी गाठ में पैसा है तो आप भी शराब पीजिए, किसी साले को कुछ कहने का अधिकार नहीं है। शराब कौन नहीं पीता है ? जिसके पास पैसा नहीं है, सिर्फ वे ही लोग नहीं पीते हैं।"

आनन्द ने कहा, "मैंने तो यह नहीं कहा, मैं तो यही कह रहा था..."

"फिर वही बात। आपने उसे पियक्कड़ कहा है न !"

"तो शराब पीकर लडखड़ाकर गिर पड़े तो पियक्कड़ कहना भी अपराध है ? आप यहां के सभी से पूछ लें, हर कोई गवाह है, वे ही बतायें कि मैंने अन्याय किया है या इन्होंने ?"

जयन्ती रो दी, "आप लोग इसे छोड़ दें, क्यों पकड़े हुए हैं ?"

भोलादत्त ने जयन्ती की ओर मुड़कर कहा, "क्यों छोड़ दू ?"

विजय बगल से बोला, "नहीं उस्ताद; छोड़ना ही होगा तो बेइश्वरत करके छोड़ेंगे।"

राधा बुआ को मन ही मन बड़ा मज्जा मिल रहा था। अच्छा दृष्टा कि छोकरा पिट गया। ऊपर से नलघर में नेड़ी की ओर ताकना अब दूर करती हूँ।

मौका मिलते ही फिर बोली, "तुम लोग थोड़ी दूर जाकर चिल्लाओ। कहा न, कि मेरी गर्भवती लड़की बगल के कमरे में सोई हुई है..."

"आप फिर क्यों बातें कर रही हैं, मां ?"

भवदुलाल ने अपनी सास को खामोश रहने को कहा, "आप उनसे कुछ भी मत कहे," वह फुसफुसाया, "देख नहीं रही कि वे शराब के नशे में हैं !"

"बाप रे, यह बात है ! छिः छिः, किस तरह के महान में रह रहे हैं हम ! तभी न तुमसे कहा था : यह भकान अच्छा नहीं है। मृष्टिघर का कांड है

अजीव है ! हरामजादे मकान-मालिक के मुंह पर झाड़ू लगाऊँ—एक वा  
हरामजादे मकान-मालिक पर निगाह पड़ जाए तो उसकी नाक नोच लूँ...

एकाएक केतो ने सवाल किया, "आप किस मुहल्ले में रहते हैं ?"

"मैं चाहे जहां कहीं रहूँ," आनन्द ने कहा, "आपको इसकी जरूरत ?"

"साले, तुम दूसरे मुहल्ले से आकर हमारे मुहल्ले की लड़की के साथ मौ  
मनाओगे ? और कोई दूसरा मुहल्ला नहीं मिला ?"

वृद्ध मुखिया किस्म का एक आदमी इस बीच आकर खड़ा हुआ और बोला  
"क्यों भाई बेकार का झमेला बढ़ा रहे हो ? अपने-अपने घर जाओ, काफी रात  
हो चुकी है।"

पटला मयूरभंज से शराव पीकर आया था। उसने कहा, "अरे साले, गाड़  
में आग लगा दे। यह साला खुशनुमा गाड़ी लेकर कारनामे दिखाने आया है।"

अब ऊपर से हिमांशु वावू की पत्नी ने पुकारा, "अरे विजय, तू वहां क्या  
है ? गुण्डों से बातचीत मत कर..."

पास ही गोपा खड़ी थी। नयी-नयी शादी हुई है। एक साल भी नहीं हुआ  
है, लेकिन शादी के बाद से ही यह मकान उसे अजीब किस्म का लग रहा है।  
न केवल मकान, बल्कि विजय भी अजीब जैसा लग रहा है। दिन-भर कालेज में  
पढ़कर लोग घर आते हैं, लेकिन उसके साथ यह बात नहीं है। पता नहीं, कहां  
जाता है, क्या करता है और जब रात गहराने पर घर लौटता है तो उसके मुंह  
से तेज़ शराव की बू निकलती है। गोपा डर से एक किनारे सिकुड़ जाती है।  
बातचीत करने का अपने अन्दर साहस नहीं बटोर पाती है। उसके बाद जब  
विजय गहरी नींद में डूब जाता है, तब कहीं गोपा का भय दूर होता है।

उसके बाद जब सवेरा होता है तो विजय जैसे कोई और ही व्यक्ति  
होता है।

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के इस मकान में इस  
तरह की छोटी-मोटी गड़बड़ी हमेशा मौजूद रहती है। प्रारम्भ से ही यह  
सिलसिला चल रहा है। यहां के वाशिन्दे जब यहां नहीं रहते थे उस समय  
भी यही सिलसिला था। वाशिन्दों के बदलाव से आबोहवा में कोई परिवर्तन  
नहीं आया है। युग बदल जाता है लेकिन मन में किसी तरह का बदलाव नहीं

जाता है। वही ईर्ष्या-द्वेष, माली-मलौज, संघटन-विघटन, पारस्परिक अस्तिव-संहार का पड्यंत्र, यात्रना-दंशित जीवन जीने के निलंज्ज प्रदर्शन का मिल्सिला चलता रहता है। कौन किसके घर में झाँककर किसका सतीत्व कलंकित कर रहा है, कौन किस चीज के साथ भात खा रहा है, कौन अपनी लड़की को किराये पर रखकर गृहस्थी चलाने के सहज उपाय की तलाश कर रहा है— यह मानसिकता जैसे इस मकान की रक्त-मग्जा में समाहित हो गई है।

कब किस विस्मृत व्यक्ति ने एकांत में वास करने के लिए इस मकान का निर्माण कराया था, पता नहीं। उसका नाम-धाम, उसका जन्मपत्री आज इति-हास के सिरिखतेदार के रेकांड से मिट गया है। काल के महफूजखाने में दूढ़ने से हो सकता है, उसका फटा हुआ दस्तावेज मिल जाए। लेकिन महफूजखाने के मुहरिर अब उसकी जानकारी रखने की जरूरत महसूस नहीं करते। खोज करने पर हो सकता है, इस अनादि-अनन्त सृष्टि के रहस्यों का कोई सूत्र मिल जाए, लेकिन जरूरत ही क्या है? इसके बनिस्वत यही अच्छा है! हाँ, यही कि साल-दर-साल बच्चा पैदाकर उसकी सेवा-शुश्रूषा करना, दिल की बीमारी को पालना, उपहार में दी गई मछली खाना तथा कलह-कुत्सा का उच्छ्वास व्यक्तकर परम उत्साह से जीवन जीना ही तो जीना है! यही तो निर्वाण की प्राप्ति है!

सृष्टिघर मौके-बेमौके पहुँच ही जाता है। नियमपूर्वक घंटा-घडियाल बजा जाना है, शंख फूंक जाता है और मंत्र का उच्चारण कर जाता है। और चेहरे पर मुस्कराहट लाकर कहता है, “अबकी मेरे मालिक आ रहे हैं। मौसाजी, हर चीज ठीक हो जायेगी…” यानी ठीक हो जायेगी किसी के पाखाने की मीठी, किसी के रमोईघर की छत का सूर्या, किसी के जीने को रेलिंग और किसी के मकान की दीवार की बानू की आबरू। एक बार ईश्वरप्रसाद दनडनियां को किसी तरह इस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के इन मकान में अगर सगरीर ले आए…लाने से ही सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। भवदुलाल के आंगन में नये सिरे से सिमेंट लगाया जाएगा, टूटी मीठी को जोड़ दिया जायेगा, गलघर पर टीन की छत लगाई जाएगी; हिमांशु बाबू के जीने की टूटी रेलिंग को फिर से मजबूत बना दिया जाएगा, दीवार में सफेदी की जाएगी और तीन-मंजिले के हरिपद चक्रवर्ती का रसोईघर जहां बारिश की बूँदें टपकती हैं, उसे

ठीक कर दिया जाएगा ।

इतना ही नहीं ।

ईश्वरप्रसाद ढनढनियां जैसे उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के इस मकान का ईश्वर है ! परम मंगलमय, परम सृष्टिकर्ता । एक बार अगर आकाश के अदृश्य लोक से इस यथार्थ घरती पर उसका अवतरण हो जाए तो जैसे हरेक की तमाम समस्याओं का हल निकल आए । उस नेड़ी को साल-दर-साल बच्चा नहीं होगा, राधा बुआ और भवदुलाल की पालित-पोषित संतानों के वंशधरों का भविष्य अपनी महिमा से निष्कण्टक कर देगा । गोपा का पति तंब मयूरभंज की भट्टी में ठर्रा पीकर नशे में नहीं झूमेगा, हिमांशु वावू की दिल की बीमारी दूर हो जायेगी और वे फिर से स्वस्थ हो जायेंगे; हरिपद चक्रवर्ती को घटिया काम करके रोजी-रोटी कमाना नहीं पड़ेगी और जयन्ती की शादी हो जाएगी । वह स्वस्थ, बलवान और शिक्षित पाल के हाथ में अपनी पुत्री को समर्पित कर सकेगा । एक रेशमी साड़ी या मामूली स्तो, क्रीम, पाउडर के खर्च के लिए तब उसकी लड़की को मिस्टर पराशर के चेम्बर में किराये पर खटना नहीं पड़ेगा ।

ईश्वरप्रसाद ढनढनियां सारी चीजों का एक रास्ता निकाल सकता है— इस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का अदृश्य मालिक ईश्वर-प्रसाद ढनढनियां ।

मालिक अदृश्य है लेकिन उसका दलाल ? दलाल सृष्टिधर ? वह पहुंच के परे नहीं है । यही वजह है कि हर कोई सृष्टिधर को ही पकड़ता है, “एक बार अपने मालिक को ला दो, सृष्टिधर, अपने मालिक को लाकर हमारी हालत दिखा दो...”

लेकिन मालिक कहां है ? वह तो अदृश्य है ! विशाल ब्रह्माण्ड के उस मालिक ईश्वर की तरह ही उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान का मालिक ईश्वरप्रसाद ढनढनियां दृष्टि के परे है, अप्राप्य, अवाङ्मनसोचर (वाणी और मन की पहुंच से परे)...

वह मालिक कभी नहीं आया ।

आया नहीं, पर मालिक का दलाल सृष्टिधर हर महीने आकर किराया ले जाता है । विधाता-पुरुष अपना टैक्स नियमपूर्वक वसूल करके ले जाता है ।

और क्योंकि आया नहीं इसीलिए हो सकता है, इस अनतीस घंटे तीन घंटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के वाशिंगों की किसी समस्या का कोई निदान नहीं हुआ।

राधा बुआ उसी मकान-मालिक के खिलाफ तब अहर उगलती है, जब उसका दलाल सामने पड़ जाता है। हिमांगु बाबू उसी मकान-मालिक के प्रति तब शिकायत करते हैं जब उनकी छाती का दर्द बढ़ जाता है। भवदुलाल साल-दर-साल बच्चा पैदा होने का बदला सृष्टिधर को धरी-गोटी मुनाकर लेना चाहता है। और हरिपद चक्रवर्ती के मन में जब अपनी घटिया कमाई के प्रति वैराग्य जन्म लेता है, वह सृष्टिधर को पकड़कर इस सुयोग से अपना आक्रोश शान्त करना चाहता है। जयन्ती जब चौरंगी में एकाकी बककर काटती हुई मन की धेड़ेंनी दूर नहीं कर पाती है तब उसका सारा आक्रोश मकान-मालिक के दलाल सृष्टिधर पर केन्द्रित हो जाता है।

मिस्टर परागर ने उस दिन कहा, “बया हुआ मिस्टर राय, आपकी वह आर्टिस्ट कहां है? अब वह दिग्ग ही नहीं रही है...”

आनन्द राम पैसा मागने आया था। पैसा का मतलब उधार। कमीशन बर्गरह ले चुका था। कुछ पेशगी की जरूरत है। घोड़ी की दुकान में पैसे के अभाव में सूट नहीं ला पा रहा है।

उसने कहा, “नहीं सर, वैसे घटिया लोगों के मुहंले में अब नहीं जाऊंगा।”

“घटिया लोगों का मतलब?”

“नीलमणि हालदार लेन।”

मिस्टर परागर ने कहा, “लेकिन आर्टिस्ट तो घटिया लोगों के मुहंले में ही रहती हैं। हम लोगों को वहाँ से तो आर्टिस्टों को लाना है। भले आदमी के मुहंले में आएगी ही कौन और आए भी तो क्यों?”

आनन्द ने कहा, “हमारी भी पहले यही धारणा थी सर, लेकिन वह बड़ी ही घटरनाक जगह है, वहाँ उस दिन मार खाते-खाते दब गया।”

“क्यों?” मिस्टर परागर को आश्चर्य हुआ, “पुलिस की मदद की जरूरत है तो कहिए। पुलिस कमिश्नर से कह दूंगा।”

“नहीं; मिस्टर पराशर, पुलिस कमिश्नर के द्वारा नहीं होगा। वह तो एकवारगी पुलिस कमिश्नर का वाप है, सर !”

“सो कैसे ?”

“मेरी गाड़ी में ही आग लगाना चाहता है। मुहल्ले के छोकरे, ठर्रा पीना सीख गए हैं। अपनी आर्टिस्ट को पहुंचाने जा रहा था कि यह कांड हो गया।”

“सो हो, आर्टिस्ट तो कहीं बिगड़ नहीं गई ?”

आनन्द ने कहा, “बिगड़ेगी क्यों सर ? और बिगड़ेगी तो आर्टिस्ट का चलेगा कैसे ? उसको भी तो साड़ी-ब्लाउज का खर्च है, सिनेमा-गहना वगैरह की जरूरत है। उसके वाप के पास इतना पैसा भी नहीं है कि जवान लड़की की सारी जरूरतों को पूरा करे। मैं चूंकि था इसीलिए अच्छा या बुरा—जो हो, उन लोगों को खाना नसीब होता था, सर ! अच्छी साड़ी दी ब्लाउज दिया, फिर नकद कुछ पैसे भी दिए। उधर बीस सेर की एक मछली खरीदकर दी थी। एक दिन हिलसा मछली भी खरीदकर दी थी। हिलसा मछली मिलने से मुझ पर बड़ी ही खुश हुई थी !”

“इतना पैसा दे रहे हो, आखिर तक वसूल कर पाओगे या नहीं ?”

आनन्द बोला, “वसूली तो हो चुकी है, सर !”

“कैसे ?”

मिस्टर पराशर को थोड़ा आश्चर्य हुआ।

आनन्द बोला, “आपके चेम्बर में लाने के वाद से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ ही गई है। आपका चेम्बर बड़ा ही शुभदायक है। जिसको भी यहां लेकर आया हूं, उसकी तकदीर जग गई है। यही तो। उस दिन हैदराबाद से कांजीभाई देसाई कलकत्ता आए थे। खबर मिलते ही मैं उनसे मिला। मुझसे ज्यों ही कलकत्ते का हालचाल पूछा, मैंने कहा : मिस्टर पराशर के चेम्बर में एक्सक्लुसिव आर्टिस्ट है, चाहिए तो बताइए।

“उसके वाद एक दिन एंगेजमेंट हुआ। आर्टिस्ट को देखते ही कांजीभाई देसाई की जीभ से लार टपकने लगी।

“कांजीभाई देसाई बोला : रेट क्या है ?

“मैंने पूछा : एक्सक्लुसिव या पार्ट टाइम ?

“एक्सक्लुसिव !—देसाई बोला।

“ तब मैंने एकान्त में ले जाकर कहा : देसाई जी, आपसे दर-दाम नहीं करूंगा, आप मेरे पुराने फ्रेंड हैं, लेकिन आपको तो मागूम ही होगा कि आजकल बंगाल में अकाल का दौर है। पांच रुपया किलो चावल मिल रहा है, इसलिए आर्टिस्टों की दर भी बढ़ गई है ”

“ देसाई जी ने कहा : कितना चाहिए, यही बताओ। मैं सस्ती दर के बारे में थोड़े ही कह रहा हूँ।

“ कुछ क्षणों तक सोचने के बाद मैंने कहा : फिर निर्भय होकर कह रहा हूँ देसाई जी, आप आर्टिस्ट को अपनी आंखों से देख चुके हैं, एदमबलुसिव अगर करना चाहते हैं तो घंटे के हिमाव से कुछ कम ही दे दीजिए।

“ कितना, यही बताओ न ! मैं तीन दिनों तक कैलकाटा में रहूंगा—सेवेन्टी-टू आवर्स... ”

“ मैंने कहा : सेवेन्टी-टू आवर्स का मतलब हुआ घंटे के हिसाब से तीन हजार रुपया। आप ढाई हजार दे दीजिएगा। आपको पांच सौ कम कर रहा हूँ... ”

“ वस, यही तय हुआ। ”

मिस्टर पराशर आश्चर्य में खो गया, “ ढाई हजार कैश ? ”

“ हा, कैश डाउन, एडवांस... ” आनन्द ने कहा।

“ बहुत उम्दा कैश है ब्वाँय—बहुत ही उम्दा ! आर्टिस्ट को कितना दिया ? ”

आनन्द ने कहा, “ आर्टिस्ट को कितना देता ! दो सौ ! दो सौ में ही खुश हो गई। ”

“ ओनली टू हंड्रेड ? ”

“ हां सर, एक कैश ही में मुझे नेट प्रोफिट हुआ दो हजार तीन सौ रुपये ! ”

“ फिर तो तुम्हें इस महीने मोटा कमीशन मिला, मिस्टर राय, ” मिस्टर पराशर ने कहा, “ ऐसी हालत में तुम फिर कमीशन मागने क्यों आए हो ? ”

आनन्द राय के चेहरे पर उदास हंसी तिर आई, “ आपको मालूम ही है, मेरे पिताजी कैसर के मरीज हैं। महीने में पांच सौ रुपये वावूजी के पोछे ही खर्च बैठता है। उसके अलावा बहन को पोलियो है। हालांकि वह शादी के योग्य हो चुकी है लेकिन शादी नहीं करा पा रहा हूँ। इधर मकान-मालिक से



वकाया किराये की वावत मुकदमा चल रहा है। पांच सालों से आपसे जो कमीशन मिलता आ रहा है और इधर-उधर से जो ऊपरी आय हो जाती है, सबका सब डाक्टर-दवां, वकील-एटर्नी के पेट में चला जाता है...”

इस कारोबार में काम चाहे कम हो या अधिक, परन्तु वात बढ़ा-बढ़ाकर कहनी पड़ती है। एकाध हज़ार शब्दों को व्यय करने के बाद एकाध मुक्किल पकड़ में आता है। इसके बाद आर्टिस्ट का इन्तज़ाम करना पड़ता है। आजकल मन के लायक आर्टिस्ट पाना मुश्किल हो गया है। कलकत्ता शहर में जिस रफ्तार से आर्टिस्टों की संख्या में वृद्धि हो रही है उसी अनुपात से इस क्षेत्र में कमीशन-एजेण्टों की भी वृद्धि हो रही है।

यह जयन्ती ही क्या आनन्द के हाथ आती ? यह प्राप्ति सौभाग्य ही है जैसे।

जयन्ती तब उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान में छटपटाती रहती थी। तब वह युवावस्था में पहुंच चुकी थी। सिनेमा की पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने के कारण सिनेमा में उतरने का जुनून सवार हो चुका था। अकेली सिनेमा देखने जाती थी और सिनेमा से वापस आने के वक्त सीधे घर की ओर नहीं आती थी।

मां पूछती, “सिनेमा देखकर लौटने में इतनी देर क्यों हुई ? सिनेमा त कब का छूट चुका है !”

जयन्ती कहती, “एक सहेली से मुलाकात हो गई, मां, उसने छोड़ा ही नहीं खींचकर अपने घर पर ले गई।”

“तेरी वह कौन-सी सहेली है ?”

“तुम उसे पहचानती नहीं हो। उसका नाम है वासन्ती। मुझसे एक दर्ज पीछे थी। अब उसकी शादी हो चुकी है। राममय रोड में ससुराल है।”

अन्ततः ऐसा हुआ कि बिना कहे-सुने जयन्ती वासन्ती की राममय रोड की ससुराल में हर रोज़ आने-जाने लगी। किसी दिन जब वासन्ती के लड़के का अन्नप्राशन मनाया जाता, उस दिन रात ग्यारह बजने पर घर लौटती निमंत्रण में जाने के बाद उठने ही नहीं दिया। किसी दिन वासन्ती की शादी की सालगिरह मनाई जाती और वहां खान-पान चलता। हर रोज़ आने में रात

होने लगी ।

उसी समय आनन्द राय से एकाएक मुलाकात हुई ।

आनन्द राय ने देखा कि एक लड़की सिनेमाघर से निकलकर अकेली ही फुटपाथ से जा रही है । इस तरह अकेली बहुत-सी लड़कियां जाती हैं । मगर जो जोहरी होते हैं, पहचान लेते हैं । पहचान लेते हैं कि किस किस्म का जाना निरुद्देश्य हुआ करता है । पीछे-पीछे कदम बढ़ाता हुआ आनन्द ध्यान से देखने लगा । लड़की एक सड़क में घुसी और दूसरी से बाहर निकली । उसके बाद दूसरी सड़क पकड़कर एक साड़ी की दुकान के सामने पहुंची और शो-केस के सामने बेवजह ठिठककर खड़ी हो गई और बीच-बीच में इधर-उधर आँखें दौड़ाने लगी ।

जैसे सीधे जाकर साड़ी देख रहा हो, आनन्द भी ठीक उसी मुद्रा में अपलक शो-केस की ओर देखने लगा ।

उसके बाद ऐसा वक्त आया कि वे आमने-सामने खड़े हो गए ।

“मेरे लिए एक साड़ी पसन्द कर दीजिएगा ?”

जयन्ती गुरु में चौंक पड़ी, फिर पूछा, “किसके लिए ?”

‘किसीके लिए भी ।’

“बाह जी, बाह, जिसके लिए आप साड़ी खरीद रहे हैं उसका नाम नहीं है ?”

आनन्द ने कहा, “नाम मालूम रहे तब न बताऊँ । नाम नहीं बताया है ।”

तभी बात जयन्ती की समझ में आ गई । वह मुसकराती हुई बोली, “नाम मालूम नहीं है लेकिन उसके लिए साड़ी खरीद रहे हैं ?”

“आपका नाम ?” आनन्द ने पूछा ।

इच्छा न रहने के बावजूद जयन्ती ने बताया, “जयन्ती चक्रवर्ती ।”

“मेरे जयन्ती चक्रवर्ती के लिए ही साड़ी खरीद रहा हूँ ।” आनन्द ने कहा ।

तत्काल दोनों एकसाथ हंस पड़े ।

दुकानदार झांककर देख रहा था । अब बाहर आकर बोला, “आइए न, अन्दर चले आइए, कौन-सी साड़ी लेनी है, देखिए....”

उसके बाद आनन्द ने दुकान के अन्दर जाकर साड़ी खरीदी । खरीदकर जयन्ती के हाथ में पैकेट थमा दिया और कहा, “लीजिए....”

जयन्ती बोली, “आपकी साड़ी बेमतलब क्यों लूँ ?”

“अगर लेना नहीं चाहती हैं तो साड़ी की कीमत मुझे दे दें।”

“अभी मेरे पास उतना पैसा नहीं है।”

आनन्द ने कहा, “वाद में दे दीजिएगा, हड़बड़ी नहीं है।”

“आपको कैसे दूंगी ?” जयन्ती बोली, “आपका पता मुझे मालूम नहीं है।

रहता तो मनीआर्डर करके आपको भेज देती।”

“नहीं-नहीं, मनीआर्डर करके भेजने की कोई जरूरत नहीं। इससे तो अच्छा यही रहेगा कि आपके घर पर चलकर इसकी कीमत ले लूँ...”

“यही अच्छा रहेगा।” जयन्ती ने कहा, “मेरा पता है : उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन।”

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान से आनन्द उसी समय पहले-पहल परिचित हुआ। मिस्टर पराशर के चेम्बर में आकर आनन्द उससे एक गाड़ी मांगकर ले गया।

मिस्टर पराशर ने पूछा, “बढ़िया आर्टिस्ट है न, मिस्टर राय ?”

आनन्द ने कहा, “हां सर, फ्लैटक्लास आर्टिस्ट !”

“उम्र क्या है ?”

“अठारह साल—एट्टीन ! स्वीट सिक्सटीन नहीं, बल्कि टाइट एट्टीन !”

“एडवांस कितना चाहिए ?”

“दो सौ रुपये !”

“सो क्यों ? दो सौ एडवांस लगे और वाद में अगर माल भूसा सावित हो ?”

आनन्द ने कहा, “मैं तीस रुपये लगाकर एक साड़ी खरीदकर दे चुका हूँ।

मैं माल का जीहरी हूँ, मिस्टर पराशर। अगर माल भूसा सावित हो जाए तो कीमत वापस कर दूंगा। मैं आपको गारन्टी दे रहा हूँ।”

वस, वहीं से शुरुआत हुई। उसी दिन से घर के सभी व्यक्तियों को पता चला कि जयन्ती भवानीपुर के राममय रोड में अपनी सहेली की ससुराल में घूमने-फिरने जाती है।

हरिपद चक्रवर्ती पूछता, “जयन्ती कहां है जी ? वह नजर नहीं आ रही है !”

पुष्प कहती, "वह अपनी सहेली के घर गई है।"

"सहेली ! कौन उसकी सहेली है ? कौसी सहेली ?"

पुष्प बोली, "स्कूल की सहेली । बचपन में एक साथ पढ़ती थीं ।"

"मगर हर रोज उसके घर पर क्यों जाती है ?"

पुष्प को गुस्सा आ गया, "उसके घर नहीं, बल्कि ससुराल जाती है।"

"ससुराल ? क्यों ? सहेली के घर पर रोज-रोज जाना क्या अच्छा दिखता है ?"

"इससे तुम्हारा क्या बिगड़ता है ? तुम लड़की की शादी करोगे नहीं, फिर वह क्या चुपचाप घर में नजरबन्द होकर पड़ी रहे ? उसे क्या गपगप करने की इच्छा नहीं होती ? उसमें इच्छा-आनन्द नाम की चीज नहीं होनी चाहिए ?"

इसके बाद हरिपद चुप हो गया । इसके अतिरिक्त हरिपद के पास इतना वक्त भी नहीं है कि इन बातों पर सोचे-विचारे । दफ्तर का मुलाखिम होता तो लड़की की शादी की वास्तव सोचने का उसे वक्त मिलता । यह तो घटिया किस्म का काम है : दसियों जगह आर्डर सप्लाई करने का काम । सबेरे से शुरू करके रात नौ बजे तक बहुत-सी फर्मों में चक्कर काटकर जूते का तल्ला घिसना । इसी को तो घटिया किस्म की जीविका कहा जाता है ।

ठीक ऐसे ही समय यह कांड घटित हुआ ।

फुटबाल का खेल देखकर हिमाशु वात्रू का लड़का विजय चौरंगी के रास्ते के अंधेरे से पैदल आ रहा था और वहां जयन्ती को देखकर चौंक पड़ा था ।

भोलादत्त ने पूछा, "वह लड़का कौन है ?"

विजय ने कहा, "भालूम नहीं उस्ताद, कहीं से एक छुशनुमा गाड़ी लेकर आया और देखते न देखते उस लड़की को लेकर चंपत हो गया।"

केतो ने कहा, "मेने भी देखा है, चौरंगी की सड़क पर वह लड़की मडराती रहती है।"

"तब तो थयोर शाट है । ट्राई करूं ?"

लेकिन अन्ततः कोशिश नहीं हो पाई । भोलादत्त ने दल-बल के साथ कई दिनों तक चौरंगी मुहल्ले में चक्कर लगाए, लेकिन हरिपद पावनती की लड़की से

मुलाकात नहीं हुई ।

विजय ने कहा, “लेकिन वह लड़की अब भी घर से ठीक शाम के वक्त बाहर निकलती है ।”

“कहां जाती है ?” भोलादत्त ने पूछा ।

“सो मैंने कहां देखा है ? गोपा ने बताया कि शाम होने के कुछ देर पहले ही साज-सिंघार करके निकलती है ।”

“कहां जाती है, अपनी वेगम से क्यों नहीं पूछा ? फिर हम पीछे-पीछे जाकर पता लगा लेते...”

विजय ने कहा, “पूछा था । तीनमंजिले की उस लड़की की मां ने बताया है कि उसकी एक सहेली भवानीपुर के राममय रोड पर रहती है । वहीं जाती हैं । वहां छोकरी की एक सहेली की ससुराल है ।”

“धोखा है, विल्कुल धोखा दिया है ।”

“फिर कहां जाती है ? कहां जा सकती है ?”

“पता लगाना होगा । जैसे ही घर से निकलेगी, पीछा करना पड़ेगा । साल दाई से कोख छिपाने चली है । मजाल है कि कलकत्ता शहर में कोई लड़की भोलादत्त की आंख में धूल झाँककर गायब हो जाए ?”

उसी दिन से भोलादत्त की जमात ताक में रहने लगी : लड़की हर रोज़ उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान से कहां जाती है ?

एक दिन तीनों व्यक्तियों ने पीछे-पीछे चलना शुरू किया । लड़की आगे-आगे जा रही थी । इत्र लगाए, चोटी हिलाती-डुलाती, पीठ और कंधे को उघाड़कर जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा रही थी ।

नीलमणि हालदार लेन पार करने के बाद जयन्ती एक रिक्शे पर बैठी ।

भोलादत्त वगैरह भी दो रिक्शे लेकर पीछे-पीछे चलने लगे ।

जहां रासविहारी एवेन्यू का मोड़ है, ठीक उसी जगह चमचमाती कार खड़ी थी । उसके निकट, वाल पीछे की ओर संवारे हुए, एक युवक खड़ा था । जयन्ती के पहुंचते ही उसने गाड़ी के दरवाजे को खोला और उसे स्टीयरिंग के पास विठाकर धुआं उड़ाता हुआ आंखों से ओझल हो गया ।

भोलादत्त की जमात वेवकूफ की तरह मुंह बाये उस ओर ताकती रह गई

लेकिन बात थोड़ी-बहुत समझ में आ गई ।

गोपा उस दिन बोली, "वह लड़की चाहे जहां जाए, इससे तुम लोगों का क्या आता-जाता है ? उसके बारे में तुम लोग क्यों इतनी फिक्र करते हो ?"

विजय तब कुछ क्षण पहले मयूरभंज से लौटा था । उसकी आंखें चड़ी हुई थीं । किसी तरह घा-पीकर सो रहे तो आराम मिले ।

"सोचूंगा नहीं ?" उसने कहा, "गृहस्थ-घर की औरत जिसके-तिसके साथ बाहर निकलेगी ?"

"गृहस्थ-घर की लड़कियां कलकत्ते में कितनी ही हैं, उन लोगों के लिए कोई मायापच्ची क्यों नहीं करता ?"

विजय बोला, "तुम भले घर की वहू हो, तुम समझोगी कैसे ? तुम चुप रहो..."

"तुम भले घर की औरत के बारे में मायापच्ची करोगे और मैं चुप रहूं ? ..."

"अरे, तुम भी तो उजबक हो ! इस घर में पत्नी, मां और बाप के साथ रहता हू । इसी मकान को वेश्यालय बना देगी और हम कुछ भी नहीं कहे ?"

"तुम यह क्यों कह रहे हो ? वह लड़की क्या वेश्या है ?"

"वेश्या नहीं तो और क्या है ? जिसके-तिसके साथ इधर-उधर जाती है । ऐसियों को ही तो वेश्या कहा जाता है ।"

"वह वेश्या है या नहीं—इसके लिए उसके मां-बाप हैं । समझना होगा तो वे लोग समझेंगे ? तुम्हें इतना सोचने की कौन-सी जरूरत है ?"

तब नींद से विजय की पलकें झपक रही थी । वह बोला, "इसीलिए तो 'औरत' कहते हैं । ऐसी अक्ल न होती तो औरत बनकर पैदा होती ? पुरुष-योनि में जन्म लेकर हमारी तरह तुम कॉलेज में पढ़ती..."

"और तुम्हारी तरह शराब पीती !"

"क्या कहा ? फिर से कहो ?"

लेकिन गोपा तब तक कमरे से निकलकर बाहर चली गई । वह ज्योंही बाहर निकली उसकी सास उसके निकट आई ।

"क्या हुआ वहू, फिर झगड़ा हो गया ?"

"नहीं-नहीं; झगड़ा नहीं हुआ है ।"

"फिर कह रही हो कि झगड़ा नहीं हुआ ? तुमसे कहा है न, कि उससे



हजार रुपया। आनन्द राय मामूली कमीशन एजेंट है। उसका बाप कैंसर का मरीज है, हर महीने उसके लिए पांच सौ रुपये डाक्टर और दवा में खर्च करना पड़ता है। सोलह साल की विवाह योग्य बहन को पोलियो है। उसके पीछे भी मोटी रकम खर्च करनी पड़ती है। मकान-मालिक से भी बकाया किराये की आवत पिछले चार सालों से मुकदमा चल रहा है। बकील-एटर्नी मोटी रकम हड़प जाते हैं।

जयन्ती को हिस्से में दो सौ रुपये मिले।

कारोवारी होने से क्या होगा, काजीभाई देसाई में दया-भमता-प्रेम है। मिस्टर पराशर के चेम्बर में जो लोग आते हैं वे और ही किस्म के होते हैं। बड़ई की तरह वे केवल तछ्ता पकड़ते हैं और कांटी ठोकते हैं। लेकिन देसाई जी ने जयन्ती को साड़ी खरीद दी, गहना भी खरीदकर दिया। साथ में लेकर सिनेमा गए। अच्छी बंगला न बोल पाने के बावजूद बंगला में बातचीत करने की कोशिश की।

“तुम्हारा नाम क्या है?”

जयन्ती बोली, “जयन्ती चक्रवर्ती।”

“तुम इस कारोवार में क्यों उतरतीं? यह लाइन क्या अच्छी है?”

जयन्ती ने इस बात का उत्तर नहीं दिया। दे तो क्या दे? तीन दिन और तीन रातें एकसाथ एक ही होटल में एक ही कमरे में गुजारी। बड़िया ब्रेक-फास्ट, लंच और डिनर खिलाया। चाहे जो हो, लेकिन खातिर भरपूर की। उम पर दो सौ रुपये दिए।

इसकी जैसे कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जीवन में इतना सुख है— इसके बारे में अब तक उसे कुछ मालूम ही नहीं था। इतने दिनों तक सड़कों की ही धूल छानती आई है। किसी ने अगर एक प्याली चाय पिलाई है तो उसे हताशता का बोध हुआ है। रुपया तो दूर की बात है। जयन्ती को लगा, काजी-भाई देसाई जैसा आदमी होता ही नहीं है। काजीभाई देसाई उसके लिए जैसे स्वतास्वरूप है।

हाथ में रुपया थामकर जयन्ती विस्मित हो उठी। बोली, “सब मेरा है?”

देसाई जी ने कहा, “सब तुम्हारे लिए...”

जयन्ती की आंखों में पानी भर आया। मानो, वह विश्वास ही नहीं कर



पा रही है। हाथ से छूकर रुपये का अहसास करने लगी। इतने रुपये ! जिन्दगी में कहीं उसने एक साथ इतने रुपये नहीं देखे थे।

एकाएक जयन्ती ने कहा, "जानते हैं, इतना रुपया एक साथ मुझे किसी ने नहीं दिया था।"

देसाई जी ने कहा, "तुम अच्छी लड़की हो। तुम इस लाइन में क्यों आई...?"

जयन्ती ने कहा, "मेरे पिताजी ने मेरी शादी नहीं की। उनके पास शादी कराने के लिए पैसा नहीं है।"

पता नहीं क्या हुआ कि देसाई जी ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हारी शादी का पैसा दूंगा। कितने रुपये लगेंगे?"

जयन्ती कुछ पलों तक चुप्पी साधे रही, फिर सिर झुकाकर बोली, "कौन मुझसे शादी करेगा?"

"क्यों, शादी क्यों नहीं करेगा? रुपया मिलने से शादी करने के लिए सभी तैयार हो जायेंगे।" देसाई जी ने कहा।

जयन्ती बोली, "मैं किसी की जिन्दगी बरबाद करना नहीं चाहती..."

"उसमें कोई दोष नहीं है," देसाई जी ने कहा, "सभी देशों की औरतें ऐसा करती हैं। मैंने जापान जाकर देखा है, वहां लड़कियां विवाह के पहले इसी तरह पैसा कमाती हैं।"

जयन्ती को जैसे उम्मीद की रोशनी दिख पड़ी। "आप ठीक कह रहे हैं?" उसने पूछा।

देसाई जी जयन्ती का हाथ अपने हाथ में लेकर सहलाने लगे। "रो रही हो?" उन्होंने पूछा।

जयन्ती अब अपने-आपको संयत नहीं रख सकी। देसाई जी के सीने पर अपना सिर टिकाकर अनवरत आंसू बहाने लगी।

पहले दिन फिर उसी तरह हुआ। सुबह से शाम तक जी-तोड़ परिश्रम करने के बाद हरिषद चक्रवर्ती जब वापस आया तो पूछा "जयन्ती दिख नहीं रही है। कहां है?"

पुष्प ने गुरु में जाहिर करना नहीं चाहा। बोली, "घूमने निकली है।"

“ओह, अपनी उसी स्कूल की सहेली की समुराल गई है ?”

पुष्प ने उस बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

हरिपद ने इतना ही कहा, “सहेली की समुराल गई है तो जाए, उसके लिए मैं कुछ भी नहीं कह रहा हूँ। मगर इतनी रात होने पर क्यों लौटती है ? यह मुहल्ला अच्छा नहीं है...”

लेकिन दूसरे दिन हरिपद ने फिर पूछा, “क्यों क्या हुआ, जयन्ती कल लौटकर नहीं आई ?”

पत्नी बोली, “नहीं।”

“नहीं कहने का मतलब ? रात में भी वापस नहीं आई ?”

पुष्प ने इस बार भी कहा, “नहीं...”

“नहीं का मानी ? लड़की रात में वापस नहीं लौटी और तुम चुपचाप बंठी हो ? गई कहाँ है ?”

“वह परसों आयेगी।” पुष्प ने इतना ही कहा।

“परसों आयेगी ? तुमसे कहकर गई है ?”

“हां !” पत्नी ने कहा।

“कहा गई है ? किसके साथ गई है ?”

पुष्प बोली, “और रोटी लोए ?”

हरिपद को गुंसा हो आया। “रोटी की बात रहे,” उसने कहा, “घाना मेरे लिए हराम हो गया है। वह कहाँ गई है, यही बताओ।”

पत्नी अब झुंझला उठी। बोली, “अब लड़की के बारे में बहुत पूछताछ कर रहे हो, मगर लड़की जो बड़ी हो गई है इस तरफ ध्यान है ? कभी उसे एक अच्छी साड़ी खरीदकर दी है ? उसे अपने साथ लिए कभी कहीं धूमने-फिरने निकले हो ? कितनी ही लड़कियों के बाप बाल-बच्चों को लेकर कितनी ही जगहों का भ्रमण करते हैं। बाप के नाते तुमने कभी यह कर्तव्य निभाया है ? कभी इसकी खबर ली है, कि वह क्या सोचती है क्या करती है, क्या चाहती है ? तुम तो जिन्दगी-भर हम लोगों को इस कँदखाने में डालकर कलकत्ता शहर को जोतते रहते हो, रुपये की तलाश में चक्कर काटते रहते हो। हम जिन्दा हैं या मर गए—यह तुमने कभी जानना चाहा है ?”

पत्नी की बातों को सुनकर हरिपद को लगा जैसे वह आकाशसे गिर पड़ा हो।

खाना बन्द कर पत्नी के चेहरे पर आंखें टिका दीं।

पुष्प बोली, "मेरे चेहरे की ओर मुंह बाये क्या देख रहे हो ? खाकर उठो, बिस्तर बिछा दिया है, सो रहो..."

हरिपद ने टूटी आवाज में कहा, "मैं जो दिन-भर चक्कर काटता रहता हूँ, वह क्या आराम करने के लिए ?"

"हां, आराम के लिए ही। आराम नहीं तो और क्या ? वहां पंखे के नीचे बैठकर तुम रुपये-पैसों की बात सोचते हो। तुम क्या हम लोगों के बारे में सोचते हो ? जितना पैसा तुम गृहस्थी चलाने के लिए देते हो, उससे गृहस्थी चलती है या नहीं, उस पर कभी सोचा है ? यह जो तुम रोटी खा रहे हो, इसे कितनी तकनीफ से जिसकी-तिसकी खुशामद करके मंगाना पड़ता है, पता है ? जानने की तुमने कभी इच्छा जाहिर की है ? तुम तो होटल में वास करते हो। इससे तो अच्छा यही था कि बिना शादी किए तुम होटल में वास करते !"

अचानक पत्नी की बातें सुनकर हरिपद अचकचा गया। पत्नी को कभी ऐसा क्रोध नहीं आया था। कभी अपने स्वर में इतनी तीक्ष्णता लाकर उसने झगड़ा नहीं किया था !

"एकएक तुम्हें क्या हो गया है ?" उसने कहा।

"अब बात मत बढ़ाओ। तुम्हारा काम खाना खाना है, खाकर उठो। इसके बाद मुझे खाना है, बरतन मांजना है, रसोईघर घोना है। तुम्हारी तरह शरीर में हवा लगाए घूमती रहूं तो मेरा चलने वाला नहीं है..."

हरिपद बोला, "क्या हुआ है, यही बताओ न !"

"तुम्हें कहने से खाक होगा ! तुमसे कहना या रास्ते के पत्थर से कहना एक जैसा है। उठो, मैं जूठा बरतन ले जाऊं..."

पत्नी का तेवर तब सचमुच चढ़ा हुआ था। उसके बाद जब खाना-पीना समाप्त हो गया, हरिपद ने पूछा, "अब बताओगी, जयन्ती कहाँ गई है ?"

पुष्प बोली, "लड़की जवान हो चुकी है, आनन्द के साथ घूमने-फिरने निकली है..."

"आनन्द ? कौन है वह ? कभी नाम नहीं सुना..."

"नहीं सुना तो सुनने की जरूरत भी नहीं है..."

हरिपद बोला, "गुस्सा क्यों रही हो ? मैं उसका बाप हूँ, मुझे भी तो मुनने की इच्छा होती है।"

पुष्प बोली, "आनन्द तो 'मौसाजी' का उच्चारण करते ही गद्गद् हो जाता है। पूछता रहता है : मौसाजी कहाँ हैं ? मौसाजी पर तो एक दिन भी नज़र नहीं पड़ी।"

"मैं उसका मौसा लगता हूँ ?" मुनकर हरिपद चक्रवर्ती हैरान हो गया। बोला, "मैं अगर उसका मौसा लगता हूँ तो उसकी मा तुम्हारी बहन हुई।"

"हां बहन है, तुम चुप रहो। ऐसा बहन-बेटा मिले तो आदमी कृतार्थ हो जाए ! वह पुरी जा रहा था। मुससे कहा : मौसाजी, मेरी बड़ी इच्छा है कि जयन्ती, मेरे साथ जाए। ले जाऊँ ?"

"पुरी गई है ?"

"हां; आदमी अपनी तकदीर अपने साथ लिए पैदा होता है। सोचा, खर्च-वर्च तो लग नहीं रहा है, जरा धूम-फिर आए। जाएगी और लौट आएगी..." हरिपद क्या कहे, उसकी समझ में नहीं आया।

"फिर परसों वापस आ रही है ? परसों ज़रूर आ जायेगी न ? और अगर परसो न आई तो ?"

"तुम अशुभ बातें मत किया करो। परसो नहीं आयेगी तो तरसों आयेगी। जिस-तिसके साथ नहीं गई है, गई है आनन्द के साथ। डरने की कौन-सी बात है !"

हरिपद बोला, "मैं इसके लिए चिन्ता नहीं कर रहा हूँ। मुहल्ले के लोगों के बारे में सोच रहा हूँ। इस मकान के किरायेदार अच्छे आदमी नहीं हैं।"

"किरायेदारों से हम क्या डरें ? हम उनका दिया हुआ खाते हैं ?"

"नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं है, फिर भी एकमजिले की राधा बुआ है—भवदुलाल की सास—वह औरत इस मुहल्ले की गजब है। कही इसके बारे में चर्चा न करती फिरे।"

पुष्प बोली, "चर्चा करने दो, मैं किसी की परवाह नहीं करती। जैसा यह मकान है वैसा ही मकान-मालिक ! कितने दिनों से रसोईघर की छत की मरम्मत करने को कह रही हूँ। सो तो नहीं..."

"अबकी मकान-मालिक आ रहा है।" हरिपद ने कहा।

“किसने तुमसे कहा कि आ रहा है?”

“सृष्टिधर से उस दिन सड़क पर एकाएक मुलाकात हो गई, उसी ने बताया...”

पुष्प बोली, “हरामजादा मकान-मालिक आए तो सही, एक वार उससे निवटना है ! वेटा नम्बरी हरामी है, हर महीने नकद फरफराता नोट किराये में भरती हूँ, उसके वारे में कोई हिसाब ही नहीं । सोचता भी नहीं है कि एक वार देख जाऊँ कि किरायेदार जिन्दा है या मर गए...”

और उसके बाद फिर से दैनन्दिन गाली-गलौज की शुरुआत हो जाती है । गाली का लक्ष्य होता है वह मकान-मालिक जो हर रोज विराजमान रहने के बावजूद अदृश्य है । जो मकान-मालिक हर दिन वायदा करता है कि आयेगा लेकिन वायदे का पालन नहीं करता है । जिस मकान-मालिक को सभी अपनी-अपनी समस्या के निदान के लिए पुकारते हैं, परन्तु पुकारने पर जिसका उत्तर नहीं मिलता है । जो मकान-मालिक आकर समस्त समस्याओं का समाधान ढूँढ़ सकता है, पर जो आता ही नहीं है । जो मकान-मालिक अनादि-अनन्तकाल से अदृश्य है, अलभ्य और अवाङ्मनसोगोचर...

हर पल इन लोगों को मकान-मालिक की याद आती हो, ऐसी बात नहीं है । हर पल मकान-मालिक को गाली-गलौज करें, यही भी नहीं है । इसका भी कोई खास वक्त रहता है ।

जब इस मकान के लोग आनन्द में तल्लीन रहते हैं तब कोई भी मकान-मालिक की चर्चा नहीं करता । जिस दिन वह आदमी अपने तालाब की बहुत बड़ी एक मछली दे गया, जिस दिन राधा बुआ के नाती का अन्नप्राशन था और दो सौ आदमी घर के सामने मंडप के तले आकंठ भोजन कर गए उस दिन हंसी-मजाक, आनन्द-उत्सव में किसी को भी मकान-मालिक की याद नहीं आई ।

मछली खाते-खाते हरिपद चक्रवर्ती मकान-मालिक को गाली-गलौज करना भूल गया ।

राधा बुआ नाती को गोद में लिए ज्यों ही सामने आकर खड़ी हुई, फूल भाभी ने एक अशरफी निकालकर बच्चे को आशीर्वाद दिया ।

एक अरु अचरफी !

“बड़ा ही प्यारा बच्चा है-मुभाजी !”

आनन्द के आयेग में पाध्याने की दूरी सीढ़ी की भी याद गहीं आई । पाध्या-  
घर की टूटी छत की भी याद गहीं आई । तब मकान-भाँतिह को अभिमान  
देना भी भूल गई ।

विजय जब ममूरभंग से लगे में खुर होकर आता है और भिन्न पर निगाह  
पड़ जाता है, उत वरत उसे भी उतनीम मदे तीन मदे सत् सीलमणि सामान  
लेन के मकान की यातें याद गहीं रहनी हैं ।

और जयन्ती ?

जब तेज हय यदन में छिड़कर, भोटी छिमाती, पीठ अभाड़े, जयन्ती  
आनन्द की चमकमाती गाड़ी पर गमार लीगी है तब उसे उतनीम मदे तीन मदे  
छट नीलमणि हालदार लेन के मकान की वेद-मंग का अतमान मरीं लीगा है ।  
तब पीछे की यातों पर कोई भी मोष-निवार मरीं करना है, भाँतिह सामने की  
प्रतियोगिता के सामर में छलांग लमाने मोंग लमाना है । तब लमाना है, लीमन  
जीना गुण्य मे भरा-गुरा है, मोम लेना और उदीयता आगारवीयक है । तब निमा  
महमूय होता है जैसे सामने की आर पीड़ लमाना ही लीयन है ।

लेकिन फाँसीयाळ भाई यां ही उदावने याथा व्यक्त मरीं भा । तब न याई  
हठार रूपे ग्रभं किया है, हमके अर्थात्त, उपद्रव लीयन मेन में यादमे मे मोष  
सी रूपे । अतः फारीवांगी आदमीं हाँन के माने मुँद और कपान की भावण  
मीत्र का व्यात्र और लमान का लमान ममुळ करना लमाना है ।

कमीशन-ग्रेट ने त्रां जहा भा, अदरगः मलय भाँतिह दुली । मयपुन पीड  
एदीन है ।



है...मगर अब उस मकान में रहना मुझे अच्छा नहीं लगता है। सभी पीछा करते रहते हैं।”

“कौन-कौन पीछा करते हैं ?”

जयन्ती बोली, “मुहल्ले के लड़के...”

“वे लोग पीछा क्यों करते हैं ? उन लोगों की कौन-सी हानि हो रही है ?”

जयन्ती बोली, “क्योंकि मिस्टर राय मेरे घर पर जाता है, इसीलिए। मिस्टर राय की गाड़ी में मैं चढ़ती हूँ, यह बात उन्हें बरदान नहीं होती। वे लोग रडक करते हैं...आप हम लोगों के लिए कहीं किसी मकान का इन्तजाम कर दे सकते हैं ?”

“में ? मैं कलकत्ते में मकान की तलाश करूँ ?”

जयन्ती बोली, “आप बहुत बड़े व्यवसायी हैं, महा बहुत बड़े बड़े आदमियों से आपकी जान-बूझान है, आप कोशिश करें तो हो जाए...”

कांजीभाई देसाई बड़े सज्जन हैं। जयन्ती मिस्टर परागुर के वेम्बर में जितने व्यक्तियों से हिल-मिल चुकी है, देसाई जी उन लोगों की तरह नहीं हैं। उन लोगों के साथ महज पैसे का रिश्ता रहा है, लेकिन देसाई जी का व्यवहार काफी अच्छा रहा। इनके मन में दया-ममता नाम की चीज है। तीन दिन और तीन रात तक जयन्ती को कितना प्यार किया है ! सोने दिया है। उसके चलते काफी पैसे खर्च किए हैं। जयन्ती को यह पता था ही नहीं कि इस लाइन में भी इतने अच्छे लोग रहते हैं। जब पैसा चुकाया है तो कीमत बसूल कर लेना ही इस लाइन का रिवाज है। हर कोई तो अब तक यही करता आया है। लेकिन यह काजीलाल देसाई जैसे बलग ही तरह का व्यक्ति है।

देसाई जी ने हंसकर कहा, “बंबई होता तो कोशिश करता, यहाँ किराये के मकान का बन्दोबस्त नहीं कर पाऊँगा। यहाँ मेरी किसी से जान-बूझान नहीं है। इससे तो बेहतर यही रहेगा कि मिस्टर राय से कहो। वह तो जो आदमी है।”

“आनन्द ? आप आनन्द के बारे में कह रहे हैं। वह तो कोशिश कर रहा है। लेकिन मिल नहीं रहा है। मकान-मालिक जिसकी-तिसकी के लिए राजी नहीं हैं।”



“सलामी देने से भी नहीं देगा ? यानी जिसको बंबई में पगड़ी कहते हैं ?”

“सलामी कहां से दूं ? मेरे बाबूजी के पास पैसा है ही कहां ? मैंने अपन कुछ पैसा इकट्ठा किया है। आपने मुझे जो पैसा दिया है, वह है। इसने अलावा थोड़ा-बहुत जमा किया है। मेरे पास सात-आठ सौ रुपये हैं। उससे क्या सलामी देना हो सकता है। हर कोई दो हजार, तीन हजार एडवांस मांगता है।”

कांजीभाई देसाई ने एक उपाय सुझाया, “इससे अच्छा है कि तुम एक काम करो। न हो तो उसी पैसे से घर की मरम्मत करा लो। रसोईघर की छत से पानी टपकता है न, उसे मिस्त्री बुलाकर मरम्मत करा लो। रेलिंग टूट गई है उसे भी ठीक करा लो। दीवार में पलस्तर, प्लाइट-हार्जिसिंग वगैरह करा लो।”

जयन्ती बोली, “घर मकान-मालिक का है, मैं क्यों मरम्मत कराऊं ?”

“इसलिए कि मकान-मालिक मरम्मत नहीं कराता है। वह कोई इस मकान में रहने के लिए नहीं आ रहा है। रहोगी तो तुम्हीं लोग। और अगर उन रुपयों से पूरा न हो तो और कुछ रुपये दे रहा हूं। लो...”

और उसने बैग से नोटों का एक पूरा बंडल निकालकर उसमें से दस-दस रुपये के बीस नोट बाहर निकाले। उसके बाद नोटों को जयन्ती के हाथ में ठूस दिया।

“मैं इस ट्रिप में ज्यादा नहीं दे पा रहा हूं,” देसाई बोला, “बाद में जब अगली सरदियों में कलकत्ता आऊंगा तब तुम्हें अलग से ज्यादा पैसा दूंगा लो...”

जयन्ती ने नोटों को अच्छी तरह मोड़कर ब्लाउज के अन्दर ठूसकर रख लिया।

उसके बाद बोली, “असल में मेरी समस्या क्या है, जानते हैं ? मकान के वनिस्वत सारे किरायेदार ही बुरे हैं। मैं उन लोगों के आसपास अब रहना नहीं चाहती हूं। दोमंजिले पर एक लड़का रहता है, वह शराब पीकर रात में लौटता है...”

“वह चाहे शराब पिये, गांजा पिये, इससे तुम्हारा क्या आता-जाता है ?”

जयन्ती बोली, “एकमंजिले में एक दूसरा किरायेदार रहता है, उसके घर में एक विधवा बुढ़िया रहती है। वह मुंहल्ले की गजट है। मिस्टर राय अपने

तालाब से एक मछली लाकर हमें प्रजेंट कर गया था। हमें प्रजेंट किया तो इसमें उन लोगों का क्या विगड़ता है ? मगर उस बुढ़िया के लड़की-दामाद हैं। उसे साल-दर-साल बच्चा पंदा होता है, साल में एक बच्चा होना ही चाहिए...”

देसाई हंसता हुआ बोला, “उन लोगों को चाहे साल-दर-साल बच्चा हो, इससे तुम लोगों का क्या आता-जाता है ?”

जयन्ती के चेहरे पर दयनीयता रँगने लगी—“मुझे यह सब गन्दगी अच्छी नहीं लगती है। इच्छा होती है, चारों तरफ साफ-सुथरा रहे—जिस तरह कि आपका होटल है। चारों तरफ कितना सजा-सवरा है ! सब कुछ चमक रहा है ! और आप अंगर मेरे घर जाएं तो आपको अन्दर जाने की इच्छा नहीं होगी। जगह तो गन्दी है ही, लोग भी गन्दे हैं। वहा हरेक का मन गन्दा हो गया है। हम लोगो का मुहल्ला ही गन्दगी का पडाव है...”

काजीभाई देसाई और क्या कहे ! तीन दिनों के लिए कलकत्ता आया था। इस तरह की बहुत सारी जगहों में काजीभाई को चक्कर लगाना पड़ता है। इस तरह की कितनी ही अजनबी लड़कियों के साथ रात बितानी पड़ती है। हांगकांग, बेरुत, पेरिस, लन्दन, घाना, नाइरोबी, लेबनान—कारोबार के सिल-सिले में सारी दुनिया का चक्कर काटना पड़ता है। मगर कलकत्ते की इस लड़की जैसी किसी भी लड़की से उसका साक्षात्कार नहीं हुआ है। तीन दिनों से इस लड़की को देखता आ रहा है। यह किसी चीज की मांग नहीं करती है। पैसे के लिए भी इसमें अधिक लोभ नहीं है। और-और बार दूसरी-दूसरी लड़कियों ने दूकान चलकर गहना खरीदने को कहा है, साडी खरीदनी चाही है, होटल जाकर बुढ़िया खाना खाना चाहा है। लेकिन इस तरह किसी भी लड़की ने घर की मांग नहीं की।

तब अच्छी तरह सुबह भी नहीं हुई थी। नींद टूट चुकी थी और दोनों नरम बिछावन पर गपशप कर रहे थे। और कुछ घंटे बीतते ही काजीभाई देसाई हवाई जहाज से अपने देस के लिए रवाना हो जाएगा।

इस बात की याद आते ही जयन्ती की आंखों में पानी भर आया। अब फिर वही उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन लोटना है। अब वही, वही तीनमंजिला मकान। अब फिर वही टूटे जीने की रेलिंग। बाबूजी हर रोज टाट की एक घंली धामे घटिया किस्म की जीबिका के लिए बाहर

निकलेंगे । उसके बाद दोमंजिलें का बुड्ढा खांसना शुरू कर देगा, एकमंजिले की राधा बुआ अपना दैनिक शोर-चीत्कार शुरू कर देगी । अब न उसके बारे में सोचने में ही जयन्ती को अच्छा लगता है और न उस परिवेश को ही वह देखना चाहती है ।

“तुम फिर मत करो, मैं फिर सदियों में आऊंगा ।”

आहिस्ता-आहिस्ता नींद की जड़ता को परे ठेल कांजीभाई देसाई बगल से उठकर बैठ गया ।

जयन्ती को बड़ा ही आश्चर्यजनक लगा । मानो, वर-कन्या हों । बड़े आदमी सुबह के वक्त जिस तरह सोकर उठते हैं, ठीक वैसे ही । बड़े आदमी हूबहू इसी तरह के विस्तर पर, इसी तरह के कमरे में नींद की बांहों में खोये रहते हैं । इसके बाद कांजीभाई देसाई ने रूम-सर्विस में टेलीफोन किया । तुरन्त चाय आ जायेगी, टोस्ट और अंडे, कॉर्नफ्लेक्स मार्मलेड—जो भी मरजी हो, ऑर्डर दो । सब कुछ आकर तुम्हारे विस्तर के सामने हाजिर हो जाएगा, विलकुल तुम्हारे होंठों के पास । कहां से आ रहा है, कौन ला रहा है, चूल्हे में आग है या नहीं, बाजार में मंछली की दर क्या है—यह सब कुछ तुम्हें जानने की आवश्यकता नहीं है । इन कई दिनों के दरमियान सब कुछ उसके हाथों की पहुंच के दायरे में आ गया है ।

“सलाम सा'व !”

बड़े-बड़े तमगे जड़ी युनिफॉर्म में दो खानसामे हर रोज़ की तरह आकर खड़े हो गए । दोनों के हाथ में ब्रेकफास्ट था । गन्ध फैल रही थी, मीठी गन्ध । और वहां उस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में अभी कौबों का उपद्रव शुरू हो गया होगा । बाबूजी थैली लेकर बाजार की ओर निकल गए होंगे, मां चूल्हे में आग जलाने में व्यस्त होगी । तीनों मंजिलों के धुएं के बगूले से सारा मकान भर गया होगा । सांस घुट रही होगी । ठीक इसी समय जयन्ती को उठकर रसोईघर में घुसना पड़ता है । एकमंजिले से वाल्टी में पानी भर-भरकर रसोई के लिए लाना पड़ता है, क्योंकि तीनमंजिले में पानी नहीं आता है । थोड़ी देर के बाद पानी ढोने वाला आता है । एक खेप पानी लाने का पचीस पैसा लेता है । उसी पानी से बाबूजी और मां नहाते हैं, जयन्ती भी उसी पानी से नहाती है ।

उसके बाद कपड़े फींचने के लिए पानी की जरूरत पड़ती है।

उस मकान में हर रोज पांच रुपये के पानी का खर्च है। उससे भी मन के लायक नहीं हो पाता है। जब दिन का दस बजता है तो जीना पानी से तर-बतर हो जाता है। बाबूजी एक बार उसी पानी से फिसलकर गिर पड़े थे और दो महीने तक खाट पर पड़े रहे थे। डाक्टर आया था, दवा मंगाई गई थी और अस्पताल में एक्स-रे कराया गया था। उसके बाद चार महीने तक घर में पड़े रहने के बाद काम-काज करने लामक हुए थे।

सृष्टिघर देखने के लिए आया था। 'कैसे हैं चाचा जी?' उसने पूछा था। मां ने गुस्से में आकर कहा था, 'तुम अब बात मत करो सृष्टिघर, तुम्हारे खजते ही यह कांड हुआ। तुम्हारे मालिक नल नहीं बनवा दे सकते हैं? तुम लोगो के चलते किसी दिन जान गंवानी पड़ेगी।'

उम बार भी सृष्टिघर ने कहा था, 'मैंने मालिक को घिट्टी लिख दी है मोसीजी, अबकी बाबू आ जाएं तो नल अवश्य बनवा दूंगा।'

'तुम बनवा चुके नल! एक दिन हम लोग सभी जान से हाथ धो बैठेंगे। देखना है...' मां ने कहा था।

यहां वह सब नहीं है। तीन दिनों से कहा से वायरूम में पानी आ रहा है, कौन आकर खाना परोस गया है, इसे जानने की किसी को जरूरत नहीं पड़ी है। सिर्फ हुक्म करना है, सब हुक्म पर ही निर्भर करता है। काजीभाई देसाई को क्या चाहिए, रूम-सर्विस को इसका सिर्फ आदेश दिया है और तत्काल वह चीज आकर आंखों के सामने उपस्थित हो गई है।

एकाएक बाहर छट-छट आवाज हुई।

बिस्तर पर लेटे-लेटे ही जयन्ती ने रानी की तरह कहा, "कौन?"

"मैं!"

आनन्द ने निरीह स्वर में बाहर से उत्तर दिया। आनन्द राय इसी तरह सुबह-शाम कमरे में आता है और हाल-चाल पूछ जाता है।

"आओ, अन्दर चले आओ।"

इस कई दिनों के दरमियान बढ़िया भोजन खाकर और लाड़-प्यार पाकर जयन्ती आलसी बन गई है। बिस्तर पर उसी तरह लेटी हुई बोली, "आओ, अन्दर चले आओ..."

आनन्द ने कहा, "कैसी हो ?"

"अच्छी तरह ।" जयन्ती बोली ।

"रात में नींद आई थी न ?"

जयन्ती बोली, "उसने सोने नहीं दिया..."

"वहुत अच्छा, बेरी गुड !"

जयन्ती परितृप्ति की हंसी हंस दी । हंसकर पहले की तरह ही लेटी रही

"देसाई जी कहां हैं ?" आनन्द ने पूछा ।

"वहां ।" जयन्ती ने उंगली से वायरूम की ओर इशारा किया ।

आनन्द यह सुनकर मजे से सोफे पर बैठ गया । उसके बाद बोला, "आज रात ग्यारह बजे देसाई जी का प्लेन..."

"हां ।"

उसके बाद आनन्द ने आंख मटकाते हुए धीमी आवाज में कहा, "क्या हाल-वाल है ?"

"अच्छा !" जयन्ती ने छोटा-सा जवाब दिया ।

आनन्द ने कहा, "सिर्फ अच्छा ही क्यों, कहो बहुत अच्छा ।"

"हां, बहुत अच्छा ।"

"फिर यह तो बताओ, मेरा मुवकिल कैसा है..." आनन्द ने फुसफुसाते हुए कहा ।

जयन्ती बोली, "हां, सचमुच बड़ा ही अच्छा मुवकिल दिया है ।" कुछ देर तक खामोश रहने के बाद फिर बोली, "सदियों में देसाई जी फिर कलकत्ता आयेंगे ।"

"सच ? फिर यह क्यों नहीं कहती हो कि खूब पटा लिया है । और कुछ माल-पानी दिया ?"

जयन्ती बोली, "मैंने और कुछ मांगा ही नहीं । मैंने सिर्फ इतना ही कहा कि एक मकान का इन्तजाम कर दें ।"

"मकान ? पूरे मकान का ?"

जयन्ती बोली, "नहीं-नहीं; मकान नहीं बल्कि किराये का मकान । मैंने कहा : 'हम लोगों का मकान अच्छा नहीं है, रसोईघर की छत से पानी टपकता है, नल नहीं है ।' इसीलिए किसी अच्छे मुहल्ले में मकान का बन्दोबस्त करने के

लिए कहा।”

आनन्द अफसोस प्रकट करने लगा, “अरे, इससे तो अच्छा या कुछ नकद ही हथिया लेती .”

“नकद रुपये से तो मकान ही अच्छा होगा।” जयन्ती ने उत्तर दिया।

आनन्द बोला, “दुत, मकान क्या उसके हाथ में है? मोज करने के लिए काफी ब्लैकमनी पाकेट में लेकर आया है। काला घन उड़ाने ही तो ये लोग कलकत्ता आया करते हैं। ऐसा मोजा भी कोई हाथ से जाने देता है?”

उसके बाद कुछ दणों तक चुप रहने के बाद बोला, “घर, जो होगा था, हो गया है। अभी काफी बक्त है। साढ़े ग्यारह बजे प्लेन है, पट्टा दग बजे तक रहेगा, इसके पहले ही कुछ माल-पानी सहेज लो। मैं चला... मेरे रहने से सहूलियत नहीं होगी...”

और वह दरवाजे की तरफ बढ़ा। दरवाजे के पाग पहुंचने के बाद पीछे की ओर मुड़ा और बोला, “मैं यहा आया था, यह बात मत कहना। एकाध घंटे में मैं फिर आ रहा हूं।”

इतना कहकर बाहर निकला, निकलकर तिरछी निगाहों से देखा और फिर दृष्टबाध दरवाजे को भेड़ दिया।

लेकिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का इतिहास इनके आराम के रास्ते से चलना नहीं जानता है। उस इतिहास का पय बड़ा ही घुमावदार है। पृथ्वी के राजाओं की उन्नति-अवनति की तरह ही टेढ़ा-मेढ़ा है। इतिहास की सुआरानी जिस तरह एक दिन पटरानी के आसन पर बैठ गई, फिर जिस तरह किसी अदृश्य शक्ति के निर्देश से दुआरानी के रूप में हयान्तिग्न हो गई, इस मकान का इतिहास भी वैसा ही है—इस उन्तीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान का इतिहास।

अबानरु किसी दिन एकमंडिले के भवदुलाल की पत्नी एक बच्चे को जन्म देती है। एक झुण्ड वाल-बच्चों की भीड़ में फिर से एक अनिच्छित नवजात शिशु का आगमन होता है। उस दिन एकमंडिले के गन्दे आंगन की टूटी मीठी

की महफिल में राधा बुआ शंख बजाकर नवजात शिशु का स्वागत-सत्कार करती है। तब उस उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान की आकृति कुछ और ही हो जाती है। जो आता है वह जान भी नहीं पाता है कि वह कहां किस नरक में आया है। शंख बजता है, षष्ठीपूजा होती है और नेड़ी के चेहरे पर हंसी उभर आती है। भवदुलाल उस दिन तहमत पहने जल्दी-जल्दी वाजार जाता है। अच्छी मछली ले आता है, उस दिन गलती से भवदुलाल दो-चार अधिक पान खा लेता है। उस दिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का वह मकान कुछ देर के लिए खुशियों से सूमने लगता है।

उधर दोमंजिले पर संभवतः ठीक उसी वक्त हिमांशु बाबू का दिल का दर्द बढ़ जाता है। खबर मिलते ही पत्नी रसोईघर से दौड़ती हुई आती है। विजय पिछली रात मयूरभंज से ठर्रा पीकर आया है और गहरी नींद के कारण उसकी नाक से आवाज हो रही है। एकाएक उसका नशा दूर हो जाता है। तब वह जैसे-तैसे मुहल्ले के डाक्टर के पास दौड़ा-दौड़ा जाता है। एक ही पल में उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान का वातावरण खंडित हो जाता है। एक ओर शंख की आवाज और दूसरी ओर हिमांशु बाबू के कलेजे की घड़कन में तीव्रता। उसी के बीच उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के परिप्रेक्ष्य में जन्म और मृत्यु का द्वन्द्व छिड़ जाता है।

और तीनमंजिले पर ?

तीनमंजिले पर शायद तब हरिपद चक्रवर्ती के रसोईघर में उत्सव की शुरुआत हो चुकी है। तीन दिन और तीन रात कहीं गुजारकर लड़की उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान में लौट आई है। लड़की के चेहरे पर हंसी तैर रही है। देह में चिकनाई आ गई है।

मां कहती है, "ये कई दिन किस तरह गुजरे ?"

जयन्ती कहती है, "बड़े मजे में मां, आनन्द दा के देस के मकान में खूब मछली खाने को मिली।"

"मछली ?"

जयन्ती कहती है, "हां मां, इतनी बड़ी-बड़ी मछलियां थीं कि क्या कहूं !" मछली का नाम सुनते ही मां के मुंह में पानी भर आता है। "कौन-सी

मछली थी ?”

जयन्ती कहती है, “बड़ी-बड़ी रोहू और सिंधी मछलियां...”

मां उसे ओर बोलने नहीं देती है। “खैर, कहीं अब तक तुम जा नहीं पाई थीं, आनन्द के कारण कम से कम उसके घर तो हो आईं। मैंने तो उसी दिन कहा था कि वह अच्छा आदमी है।”

उसके बाद कुछ क्षणों तक चुप रहने के बाद बोली, “कितना बड़ा मकान है ?”

जयन्ती बोली, “मकान बहुत बड़ा है मां, विशाल मकान ! कितने ही कमरे, बरामदे ! इस मकान से दस गुना बड़ा !”

“कौन-कौन आदमी रहता है ?”

“कोई नहीं।”

“क्या कहा, कोई नहीं ? चाचा, मामा, ताऊ, भाई, बहन कोई नहीं ?”

जयन्ती बोली, “इतने रुपये की आयदाद है, इतने-इतने बगीचे तालाब हैं, लेकिन खानेवाला कोई आदमी नहीं है। है तो सिर्फ नौकर-चाकर और दरवान। वे ही लोग लूट-खसोटकर खा रहे हैं।”

मां बोली, “आनन्द ने बताया था कि उसका एक बगीचा और मकान बेहाला में है।”

जयन्ती बोली, “बेहाला में भी है और देस में भी। असल में कहां कितनी संपत्ति है उसे खुद भी पता नहीं। बहुत बड़े खानदान का लड़का है, खाने-पीने की कमी नहीं है, सिर्फ खर्च कर रहा है और दोनों हाथों से रुपया उड़ा रहा है...”

“बाप रे, ऐसा ? रुपया उड़ा रहा है ?”

“क्या करेगा, देखनेवाला तो कोई है नहीं। जो भी आकर हाथ फैलाता है, भरपूर दे देता है।”

“बाप रे, इतना पैसा ?”

जयन्ती बोली, “इतना पैसा है मा, कि तुम उसके बारे में कल्पना भी नहीं कर सकती हो।”

उसके बाद बोली, “यह देखो मा, आनन्द दा ने मुझे यह साड़ी दी है।”

और उसने नये सूटकेस से कांजीभाई देसाई की दी हुई साड़ी बाहर



निकालकर दिखाई ।

हाथ में साड़ी लेकर मां ने उसे उलट-पुलटकर देखा ।

“कितनी अच्छी साड़ी है ! कितनी कीमत लगी ?”

“सत्तर रुपये !”

“वाप रे, सत्तर रुपये की साड़ी तुझे यों ही दे दी । तूने मांगी थी ?”

“वाह, मैं क्यों मांगने लगी ? जोर-जबर्दस्ती मेरे हाथ में थमा दी । मैंने कहा : मुझे साड़ी मत दो, मां विगड़ेंगी । फिर भी वह नहीं माना । कहा : मौसीजी विगड़ेंगी तो मैं भी उनपर विगड़ूंगा...”

“बड़ा अच्छा लड़का है !”

जयन्ती बोली, “और क्या दिया है, देखो...”

“क्या दिया है ?”

जयन्ती ने बैग के अन्दर हाथ डालकर कान की बालियां बाहर निकालीं । जिन्हें जयन्ती ने कांजीभाई देसाई पर दबाव डालकर खरीदवाया था । लाचार होकर कांजीभाई देसाई ने नामी ज्वेलर की दुकान से खरीद दी थीं । कालेधन के मालिक ने कुछ रुपये मौज-मस्ती में खर्च कर मन के बोझ को थोड़ा हलका करना चाहा था । सो उतनी ही छोटी चीज की कीमत डेढ़ सौ रुपये दी थी ।

“वाप रे ! हीरे की है क्या ? बड़ी ही चमक रही है !”

जयन्ती उतना बतियाकर ही चुप न हुई बल्कि उसके वाद कहा, “और ये रुपये लो मां, अपने पास रख लो...”

“रुपया !”

मां नोटों के बंडल की ओर एक क्षण लोलुप दृष्टि से ताकती रही । उसके वाद बंडल को हाथ बढ़ाकर ले लिया और बोली, “कितने रुपये हैं ?”

जयन्ती बोली, “मालूम नहीं मां, न मैंने गिने है और न आनन्द दा ने ही गिनकर दिए हैं !”

“क्या कहती है ! तुझे रुपया क्यों दिया ? या तूने रुपया लिया ही क्यों ?”

और मां मनोयोगपूर्वक रुपया गिनने लगी । जयन्ती कितनी ही बातें कहे जा रही थी । कितनी ही सुख, खुशियों और आराम की बातें, स्वागत-सत्कार के संदर्भ में ढेर सारी बातें...लेकिन मां के कानों में एक भी शब्द नहीं पहुंच रहा था । मां तब तल्लीन होकर रुपया गिन रही थी । इतने रुपये एक साथ जयन्ती

की मां ने नहीं देखे थे। अहा, जयन्ती की आयु लंबी हो, आनन्द दीर्घजीवी हो !  
 कहां किम मां-बाप का लड़का है और कहा किस घटनाचक्र के कारण किसके घर  
 में आया है ! इसे भाग्यदेवता की शुभाशंसा ही कहना चाहिए ।

“मां, उसमें कितने रुपये हैं ?”

“ठहर बेटा, पहले गिन लेने दे...”

एक सौ दस, एक सौ बीस, एक सौ तीस...

एकाएक हरिपद चक्रवर्ती ने आकर कुंडी खटखटाई !

“बाबूजी आ गए मां !” जयन्ती ने कहा ।

जयन्ती हड़बड़ाकर दरवाजा खोलने जा रही थी, मां ने गिनना रोककर कहा,

“उससे रुपये की बात मत कहना और न माड़ी-गहने की बात ही...”

“क्यों मा, कहने में क्या दोष है ?”

मां, बोली “नहीं रहे, बाद में बतायेंगे ।”

और वह रुपया, गहना, साड़ी सब कुछ लेकर बगल के कमरे में जाकर छिप  
 गई । कहा छिपाये, कोई ठीक नहीं । वह हर चीज में हाथ लगाते हैं । अगर  
 आलमारी उलटते-पलटते नजर पड़ जायेगी तो रुपया ले लेंगे ।

बाहर फिर जंजीर खटखटाने की आवाज हुई ।

जयन्ती ने अन्दर से पूछा, “कौन...बाबूजी ?”

मनुष्य के जीवन में ऐमा-ऐसा नाटक मंचित होता है कि असली नाटक में  
 भी वसा देखने को नहीं मिलता । अन्यथा किसी को कैसे मानूम होता कि  
 होटल के बन्द दरवाजे के पीछे जो रहस्य छिपा हुआ है, एक दिन बाहर निकल-  
 कर लोगों के सामने प्रत्यक्ष हो जाएगा ?

लेकिन जो घटित होना ही है, उसे रोकने की सामर्थ्य शायद किसी में नहीं  
 है ।

सचमुच, ठीक वक्त पर ही पुलिस आई थी । पुलिस की क्षमता सचमुच  
 प्रशंसा-करने लायक है । शुरू में खबर मिलने में घोड़ी देर हो गई थी । जब  
 होटल में पहुंची तो चिड़िया उड़ चुकी थी ।

होटल के लाउंज में इनफारमर बैठा हुआ था ।

वह बोला, “आप लोग देर करके आए सर, वह भाग गया ?”

“कहाँ गया ?”

इनफारमर ने बताया, “सीधे एयरपोर्ट...”

सोना बड़ी कोमती वस्तु है। हांगकांग से आया था। कस्टम-ऑफिस की बांखों में धूल झाँककर किस तरह इतना सोना हिन्दुस्तान आता है, यह बात देवताओं तक को मालूम नहीं। पुलिस का स्पेशल डिपार्टमेंट है, खास-खास इनफारमर हैं, उसकी बाबत लाखों रुपये खर्च होते हैं। लेकिन कांजीभाई देसाई अलग-अलग नामों से विभिन्न बन्दरगाहों में बिना किसी बाधा-विघ्न के सर करता रहता है। उसके जैसे लोगों को पकड़ ले, ऐसा एक भी जाल किसी कारखाने में तैयार नहीं हुआ है।

इसलिए अब हवाई अड्डे पर चलो।

लेकिन पुलिस का दल जब तक पहुंचा, हवाई जहाज हवाई अड्डे से जा चुका था। केवल पीछे की लाल बत्ती टिमटिमा रही थी।

पुलिस फिर से होटल लौट आई। कलकत्ते का बड़ा होटल है। यहां रात-दिन अलग-अलग किस्म के लोगों का आना-जाना लगा रहता है। यहां पौंड, डॉलर, येन, फ्रैंक, स्विस सब आकर एक ही क्षण में एकाकार हो जाते हैं। दुनिया की अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा यहां आकर औरतों की टकसाल में छपती है और सोना-अक्षरफी बनकर निकल जाती है। यह कलकत्ता है !

एकाएक खाता उलटते-उलटते नाम पर नजर पड़ी।

“यह कौन है—यह लड़की ?”

मैनेजर बोला, “इस लड़की ने मिस्टर देसाई के साथ इस होटल में तीन दिनों तक रातें गुजारी हैं।”

“चेहरा कैसा है ?”

“गोरा, भरा हुआ, स्लिम एंड सॉफ्ट...”

“एंड स्वीट आलसो ! उम्र कितनी है ?”

“एट्रीन।”

इनफारमर ने कहा, “मैं इस लड़की को पहचानता हूँ सर ! मिस्टर पराशर के चेम्बर में आया करती थी। जहां तक याद है, उसका नाम है जयन्ती। जयन्ती चक्रवर्ती !”

“कहाँ रहती है ? घर कहां है, मालूम है ?”

इनफारमर ने कहा "मुझे मालूम है सर ! नीलमणि हालदार लेन में रहती है—उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में..."

"ठीक है, वहीं चलो।"

पुलिस वाले दल-बल के साथ उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन की ओर रवाना हुए। गाड़ी तीर की गति से आगे बढ़ने लगी।

उसके बाद सीधे यही आकर खड़ी हुई। एकमंजिले की राधा बुआ देख रही थी। उस वक्त वह मुहल्ले की परिक्रमा कर वापस आ रही थी। पुलिस पर दृष्टि पड़ते ही अचकचा गई।

"माताजी, इस मकान में जयन्ती चक्रवर्ती नाम की कोई लड़की रहती है?"

राधा बुआ बोली, "हम लोगों के ऊपर रहती है।"

"दोमंजिले पर?"

राधा बुआ बोली, "दोमंजिले पर हिमांशु बाबू सपरिवार रहते हैं और तीन-मंजिले के हरिपद चक्रवर्ती की लड़की का नाम है जयन्ती। वो पूरब की तरफ सीढ़ी है। एकदम सीधे तीनमंजिले पर चले जाइए।"

पुलिस जब ऊपर चली गई, राधा बुआ वहा खड़ी नहीं रही। सीधे अपने मकान के अन्दर चली गई।

बोली, "ओ नेड़ी, पुलिस आई है..."

नेड़ी तब लेंटी-लेंटी हाफ रही थी। बात सुनकर एक बार बांख उठाकर देखा। उसके बाद पूछा, "क्या हुआ है?"

"पता नहीं बेटा, क्या हुआ है, इतना देखने का मेरे पास वक्त कहा है ! मेरी गृहस्थी तो देखनेवाला कोई है ही नहीं, और मैं उन लोगो को देखने जाऊँ !"

लेकिन तब तक पूरे मुहल्ले को इसका पता चल चुका था। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में पुलिस आई है, इसकी जानकारी प्राप्त करने में एक मिनट का भी विलंब न हुआ। आसपास के आदमी, इम-उस मुहल्ले के आदमी सभी यहा दौड़े-दौड़े आए।

"यहां क्या हुआ है, साहब?"

पुलिस की जाल लगी वैन उस वक्त भी मकान के सामने खड़ी थी।

एक आदमी बोला, "सुनने में आया है कि चोरी का मामला है।"

“किस चीज की चोरी हुई है ?”

“सोने की ।”

“सोने की चोरी ? अयं, क्या कह रहे हैं ! किसने सोने की चोरी की है ?  
कहाँ से सोने की चोरी की है ?”

आहिस्ता-आहिस्ता नीचे जमघट बढ़ने लगा । सभी मुंह वाये ऊपर की ओर  
ताकने लगे ।

दोमंजिले के हिमांशु वावू ने कहा, “अजी, सुनती हो ? वहाँ क्या हुआ है ?”

पत्नी रसोईघर में थी । बोली, “तुम चुप रहो, हर चीज में दखल देना क्यों  
चाहते हो ?”

हिमांशु वावू बोले, “इतने लोगों का जमघट क्यों है ? शोरगुल क्यों मचा  
है ?”

गोपा बोली, “आप चुप रहिए वावूजी, डॉक्टर ने आपको चुप रहने को  
कहा है ।”

पत्नी बोली, “बूढ़े आदमी का स्वभाव यही होता है ! बाहर कौन शोरगुल  
कर रहा है, इससे इनका क्या आता-जाता है ? हम लोगों के घर में तो कुछ हुआ  
नहीं है...”

“इस मकान के सामने पुलिस की गाड़ी क्यों खड़ी है ?” हिमांशु वावू ने  
पूछा ।

पत्नी बोली, “इससे तुम्हारा क्या विगड़ता है ? पुलिस तुम्हारे मकान में  
नहीं आई है । तुम हर बात में झाँव-झाँव क्यों करते हो ? डॉक्टर ने तुम्हें  
चिल्लाने से बार-बार मना किया है । बूढ़े आदमी के चलते कहीं मैं ही न पागल  
हो जाऊँ...”

परन्तु यह सब कहने से ही आदमी कहीं चुप रह सकता है ? तब नीचे की  
भीड़ का आकार बढ़ चुका था, शोरगुल भी उसी अनुपात में बढ़ रहा था ।  
पुलिस कब तीनमंजिले से उतरे और सारी बातों की जानकारी प्राप्त हो, इसी  
इन्तज़ार में लोग मुंह वाये ऊपर की ओर ताक रहे थे ।

दरवाजा खोलते ही जयन्ती चक्रवर्ती आवाक़ हो गई ।

“आपका ही नाम जयन्ती चक्रवर्ती है ?”

पुलिस पर दृष्टि पड़ते ही जयन्ती का चेहरा बूझ गया । प्रश्न सुनते ही

और भी अधिक घबरा गई ।

“हां...”

“आप पिछले तीन दिन, तीन रात कहा थीं ?”

अब तक उसने जो बातें अपनी मां से कही थीं, वे बातें भी अटकी पड़ी रह गई ।

“बताइए, आप स्ट्रैंड होटल में थीं या नहीं ? होटल के छाते में आपका नाम लिखा हुआ है । मिस्टर काजीभाई देसाई के साथ आपने वहां कितने दिन गुजारे हैं ?”

जयन्ती गूंगे की तरह खड़ी रही ।

“मिस्टर काजीभाई देसाई को आप कितने दिनों से पहचानती हैं ?”

जयन्ती बोली, “इसके पहले कोई जान-पहचान नहीं थी, यह पहली मुलाकात थी...”

“आप उसके साथ क्यों थीं ? वह आपका कौन होता है ?”

“कोई नहीं...” जयन्ती ने कहा ।

“फिर क्या आप रात में उसके साथ सोया करती थी ?”

जयन्ती क्या कहे, यह समझ न पाने के कारण उसके मुह से ‘हां’ निकल गया ।

“इसके लिए आपने पैसा लिया था ?”

“हां ।”

“कितना ?”

“मैंने गिनकर नहीं देखा है ।”

“अभी आपके घर में कौन-कौन है ?”

जयन्ती बोली, “सिर्फ मां, और कोई नहीं...”

“बलिये, आपकी मां से हमें बतियाना है ।”

मां तब पोछे ओट में खड़ी सब सुन रही थी । पुलिस ज्यों ही अन्दर आने लगी, उसने वहां से हटना चाहा, लेकिन पुलिस की आंखें उस पर पड़ चुकी थीं ।

“भाताजी, सुनिए, आपके घर में सोना है या नहीं, हम नहीं देखने आ रहे हैं । इस मकान की हमें तलाशी लेनी है ।”

मां रोती-रोती बोली, “सोना हमें कहां से मिलेगा बेटा, इतना बड़ा घर है

नहीं हैं, वह आ जाएं...”

पुलिस वाले हंसने लगे ।

“ऐसा नहीं होता है माताजी, हमें आपके मकान की तलाशी लेनी ही है, हम लोगों के पास वारंट है । आप चाहे राजी हों या नहीं, मगर हम तलाशी लेंगे ही ।”

मां फूट-फूटकर रीने लगी, “हम लोग औरतें हैं, घर में गृहस्वामी नहीं हैं, आप लोग बाद में नहीं आ सकते हैं ?”

पुलिस के आदमियों ने कहा, “‘औरत’ कहने से काम नहीं चलेगा माताजी । आपकी लड़की इतने दिनों तक एक मर्द के साथ रात गुजार आई है, यह आपको पता है ?”

“होटल में क्यों कह रहे हो वेटा ? मेरी लड़की होटल में पराये मर्द के साथ रात गुजारेगी ? आप लोग क्या कह रहे हैं !”

“हां माताजी, होटल के खाते में आपकी लड़की का नाम लिखा हुआ है । हम लोगों की बात पर यकीन न हो तो आप जाकर होटल के खाते में देख सकती हैं ।”

मां चिहुंक उठी, “पराये मर्द के साथ क्यों कह रहे हैं ? वह आनन्द के साथ उसके देस पर थी । आनन्द मेरे लिए क्या पराया है ? आनन्द मेरे लिए लड़के की तरह है...”

“ठीक है, आपके घर की तलाशी लेकर हम देखना चाहते हैं कि सोना है या नहीं ।”

अंततः उन लोगों ने तलाशी लेना शुरू किया । एक गवाह की जरूरत है—थर्ड पार्टी का होना चाहिए । गवाह कौन बनेगा ?

पुलिस का आदमी ही बाहर से गवाह लाने गया । मां ने थोड़ी आपत्ति की, “हम लोगों के घर में बाहर का कोई आदमी क्यों घुसेगा ? हम उसे घुसने ही क्यों देंगे ?”

“सो तो करना ही होगा माताजी । अगर कोई चीज खो जाए तो गवाह कौन रहेगा ?”

गवाह कौन होगा ? सड़क पर तब लोगों की भीड़ उमड़ी हुई थी । ज्यादातर आदमी झमेला-झंझट में फंसना नहीं चाहते थे ।

“मोने की ?”

“हां साहब, मोने की। मोना यानी गोल्ड। आजकल गोल्ड-स्मगलर तो हर जगह हैं। सन्देह में पुलिस आपके घर पर आई थी।”

हरिपद चक्रवर्ती बोला, “मेरे घर तीनमंजिले पर ? मैंने देखा है कि दो मंजिले के हिस्से बाड़ू का लड़का शराब पीकर घर लौटता है...”

“नहीं साहब, मुझे मिला है कि तीनमंजिले पर आपके मकान में आई थी।”

हरिपद चक्रवर्ती तेज बदनियों से अपने मकान की ओर बढ़ा। यह कैसे हुआ ! जयन्ती तो घर में नहीं है। फिर यही क्या कुछ फांड कर बंदी ?

कौन जाने ! घटिया हिस्म की जीविका जीने-जीते आज जीवन के इस



भोलादत्त बोला, "नहीं भाई, साले वेवकूफ बन गए। कुछ भी हाथ नहीं आया।"

"फिर साले खेल खेलने आए थे?"

भोलादत्त बोला, "लड़की उस साले के साथ तीन रात होटल में रह चुकी है। वही साला सोने की तस्करी करता है। सोना है या नहीं, यही जानने के लिए पुलिस मकान की तलाशी करने आई थी।"

"वही साला न, जो चमचमाती गाड़ी में आया करता था?"

"हां; इतने दिनों तक साले के पीछे-पीछे चक्कर काटा, मगर एक दिन भी पकड़ में नहीं आया। अबकी साला उस छोकरी को लेकर होटल में ठहरा था।"

वात यहीं समाप्त न हुई। पुलिस जिस तरह आई थी, उसी तरह वापस चली गई। लेकिन उसकी चर्चा बहुत दिनों तक चलती रही। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन की घटना को केंद्र बनाकर मुहल्ले-मुहल्ले में मजलिस जमने लगी। घर, रसोईघर, सड़क, मोड़, बाजार हर जगह एक ही चर्चा।

दफ्तर से लौटने के वक्त ही हरिपद को सूचना मिली।

सब कुछ जानने के बावजूद वृद्ध पड़ोसियों ने पूछा, "चक्रवर्ती साहब आपके मकान में क्या हुआ था?"

"मेरे मकान में?"

"हां साहब आपके मकान में! उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान के तीनमंजिले पर पुलिस पहुंची थी। आपको अब तक खबर नहीं मिली?"

"नहीं तो।"

इतना कहकर उसने जल्दी-जल्दी अपने मकान की ओर कदम बढ़ाए। पुलिस! पुलिस तो उसके घर में कई वार आ चुकी है। मुहल्ले के लड़कों के अत्याचार के कारण कहीं भी पुलिस की अनुपस्थिति नहीं रहती है।

"देखिए जाकर क्या हुआ था।"

"आपको कुछ सुनने में आया है?"

उस आदमी ने कहा, 'मैं उस वक्त घर पर नहीं था। सुनने में आया कि पुलिस सोने की तलाश कर रही थी।'

“सोने की ?”

“हां साहब, सोने की। सोना यानी गोल्ड। आजकल गोल्ड-स्मगलर तो हर जगह हैं। सन्देह में पुलिस आपके घर पर आई थी।”

हरिपद चक्रवर्ती बोला, “मेरे घर तीनमंजिले पर ? मैंने देखा है कि दो मंजिले के हिमांशु बाबू का लड़का शराब पीकर घर लौटता है...”

“नहीं साहब, सुनने में आया है कि तीनमंजिले पर आपके मकान में आई थी।”

हरिपद चक्रवर्ती तेज कदमों से अपने मकान की ओर बढ़ा। यह कैसे हुआ ! जयन्ती तो घर में नहीं है। फिर वही क्या कुछ कांड कर बैठी ?

कौन जाने ! घटिया किस्म की जीविका जोते-जोते आज जीवन के इस अन्तिम पड़ाव में हरिपद चक्रवर्ती को इस स्थिति में पहुंचना पड़ा। कभी इस तरह की कलंकजनित बदनामी उसे ओढ़नी नहीं पड़ी थी। फिर यह उसके साथ क्या घटित हो गया ?

रास्ता चलते-चलते उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे बहुत-से लोग उसकी ओर उंगली से इशारा कर रहे हैं। उसकी ओर उंगली से इशारा करके कुछ दिखा रहे हैं, कुछ कह रहे हैं।

जब उसने नीलमणि हालदार लेन में पंर रखा, सड़क के मोड़ पर वे ही आचारा लड़के खड़े थे—वही भोलादत्त, पटला, केतो और दोमंजिले का वह हिमांशु बाबू का बदमाश लड़का।

हरिपद चक्रवर्ती मुह घुमाकर जा रहा था लेकिन भोलादत्त उसके सामने बढ़ आया।

“चाचाजी...”

चाचाजी ! क्या कह रहा है यह ! हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, “क्या ?”

भोलादत्त बोला, “देखिए हम लोग मुहल्ले के लड़के हैं, आप भी हमारे मुहल्ले के आदमी हैं। हम लोगों में आपके प्रति वैसी ही भक्ति है, जैसी गुस्सनों के प्रति होनी चाहिए। कुछ अन्यथा मत लें, हम आपकी भलाई के लिए ही कह रहे हैं।”

हरिपद चक्रवर्ती को गुस्सा ही आया, “इतनी बहानेवाजी की क्या जरूरत है, जो कहना है खुलासा कहो।”

“आपकी लड़की के बारे में कह रहा हूँ। आज पुलिस आपके घर पर आई। मुहल्ले के हर आदमी ने देखा है। आपकी लड़की उस लंपट लड़के के साथ सर सर-सपाटा करती है, अब तक हम सब देखते आए हैं, हालांकि कहा कुछ नहीं है, लेकिन अब हम बरदाश्त नहीं करेंगे। अबकी जब भी उसे आपकी लड़की के साथ देखेंगे उसकी खाल उधेड़ देंगे। कहे देता हूँ...”

“तुम आनन्द के बारे में कह रहे हो ?”

“जी हाँ, चाचाजी ! मुहल्ले की इज्जत हर व्यक्ति की इज्जत है। उस आदमी लड़के के साथ हमारे मुहल्ले की लड़की तीन रात होटल में बिताए और उसके कारण भले आदमियों के मुहल्ले में पुलिस आए, यह अच्छी बात नहीं है। आपकी लड़की की जिस तरह कोई इज्जत है, उसी तरह मुहल्ले की भी कोई इज्जत है। कहिए ठीक कह रहा हूँ न ?”

आक्रोश के कारण हरिपद चक्रवर्ती के पूरे शरीर में एक सिरे से दूसरे सिरे तक झुरझुरी रेंगने लगी।

भोलादत्त बोला, “जाइए, अभी आप दफ्तर से आ रहे हैं, अभी आप थके-मांड़े हैं। घर जाइए, अधिक गुस्से में मत आइए, इससे खून-खरावा हो सकता है...”

हरिपद अब वहाँ रुका नहीं। जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ नीलमणि हालदार लेन के अपने उनतीस बटे तीन बटे छह मकान की तरफ चल दिया।

हमेशा यही सिलसिला चालू था। उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का जीवन इसी प्रकार के उत्थान-पतन के जटिल पथ से आगे बढ़ रहा था। अब तक वे आपसी झगड़ा-झंझट, गन्दगी और कलंक में जीवन जी रहे थे। लेकिन अब लगता है कि पुराना सिलसिला चलने वाला नहीं है।

उस वार जब सृष्टिघर आया तो सभी ने उसे धर दबाया। राधा बुआ ने एकबारगी सीधे बढ़कर सृष्टिघर का गला जैसे दबोच लिया।

“तुमने क्या सोचा है सृष्टिघर—सोचा क्या है ? तुम क्या हमें घर से निकालना चाहते हो ? तुम्हारा मालिक यहाँ आयेगा या वह मर चुका है ?”

दो मंजिले की हिमांशु बाबू की पत्नी भी झुंझला उठी, “क्या चाहते हो ? बताओ, तुम क्या चाहते हो ? सुनू तो सही, तुम फिर किस वास्ते आए हो ? यह गृहस्थों का घर है या बस्ती का कोई भकान ? बस्ती में भी आदमी इसके बनिस्वत आराम से रहते हैं । तुम्हारा मालिक क्या हमें गाय-भेड़ समझता है ? इस तरह रोज-रोज पुलिस आवेगी और लोग-बाग चोर समझकर हम पर शक-शुबहा करेंगे ? हम लोग क्या दागी आसामी हैं ?”

तीनमंजिले में भी वही स्वागत-सत्कार हुआ । मृष्टिघर पर आंखें जाते ही हरिपद चक्रवर्ती ने खरी-खोटी सुनाई—

“भागो, भागो, सामने से हटो...अबकी तुम्हारा मालिक अगर खुद नहीं आवेगा तो मैं भी किराया नहीं दूंगा ।”

मानो, गरदन पर हाथ रखकर मृष्टिघर को बाहर निकाल दिया ।

लेकिन मृष्टिघर करे तो क्या करे ? वह तो कोई मालिक है नहीं । मालिक है वही अदृश्य, अलभ्य, अवाङ्मनसोगोचर ईश्वरप्रसाद ढनढनिया । न उसका क्षय होता है, न वह लय होता है । वह है अव्यय, अक्षय, निराकार, निरवयव विधाता पुष्ट्य । उसे न तो आंखों से देखा जा सकता है, न हाथ से पकड़ा जा सकता है । वह किसी नियम के अधीन नहीं है और न किसी शृंखला से बावद्ध है । वह है सच्चिदानन्द सोहं । उससे डरा जा सकता है क्योंकि वह भयंकर है; उसकी भक्ति की जा सकती है क्योंकि वह आनन्दस्वरूप है । वह हम लोगों का एकमात्र आश्रयदाता है, वही पतितपावन है । हम मन-प्राणों से उसी ईश्वर-प्रसाद ढनढनिया की कामना करते हैं, हम प्रार्थनारत हैं कि वह अपना मंगल-हस्त विस्तारित कर हमारा सारा दुःख, सारा अभाव दूर कर दे । समस्त अमि-योगों का प्रतिकार करे । लेकिन नहीं, वह आवेगा नहीं ।

जब उन्तीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान में सारी चीजें रवाभाविक गति से चलती हैं, तब ईश्वरप्रसाद ढनढनियां को लोग याद नहीं करते । तब वहां बच्चे पैदा होते हैं, अन्नप्राशन मनाया जाता है, रांछ बजता है, मास पकने की गन्ध आती है, घर की औरतें सिनेमा जाती हैं, पापा नलघर में जाकर सिनेमा के गीत गुनगुनाती है, राधा बुआ पूजाघर में धुसकर संध्या-आह्निक करती है, विजय सरकार अपने दोस्त-मित्रों के साथ मयूरभंज रोड की देशी शराब की दुकान में पेग पर पेग ढालता है और ईश्वरप्रसाद

दनदनियां तब अपने अदृश्य स्वर्ग में अदृश्य ही रहता है। उसके वारे में कोई आदमी मायापच्ची नहीं करता है। सृष्टिधर झंझट-झमेले के बिना माहवारी किराया वसूलकर रसीद दे जाता है।

लेकिन उनतीस वटे तीन वटे छह नीलमणि हालदार लेन में नियम से अधिक अनियम का ही बोलवाला रहता है। अपवाद की वजह से ही अधिक संकट पैदा होता है। तब कहीं कोई समाधान नजर न आने पर ईश्वरप्रसाद, दनदनियां को ही कोसा जाता है।

उस दिन भी लोग उसी तरह कोसने लगे।

वह एक कांड ही था।

बड़ा ही बीभत्स कांड !

पता नहीं, कैसे तो अचानक जानकारी प्राप्त हो गई। दुनिया में बहुत-सी गोपनीय वस्तुओं की कैसे तो एकाएक जानकारी प्राप्त हो जाती है !

शुरू में कित्ती को भी मालूम नहीं हुआ, लेकिन स्त्री से सम्बन्धित रहस्य हो तो फिर दवा का दवा कैसे रह सकता है ?

हरिपद चक्रवर्ती की लड़की को देखने के लिए डाक्टर आया था। और कोई बात होती तो हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी डाक्टर को नहीं बुलाती। लेकिन उसके वाद से ही वह बात जाहिर हो गई।

विजय दौड़ता हुआ भोलादत्त के अड्डे पर पहुंचा। भोलादत्त, पटला, कैती वगैरह तब बेकार बैठे थे। सड़क की ओर उड़ती निगाहों से ताक रहे थे और जोरों से सिगरेट का कश ले-लेकर धुएं के छल्ले उड़ा रहे थे।

विजय दौड़ता हुआ वहीं पहुंचा, "शुरू सर्वनाश हो गया ! साला सर्वनाश करके चलता बना।"

"कौन ? किसके वारे में कह रहा है ?"

"वही साला। वही जो खुशनुमा गाड़ी पर चढ़कर यहां आता था और छोकरी को लेकर संर-सपाटा किया करता था। वही साला..."

"क्या किया ?"

विजय बोला, "छोकरी का पांव भारी करके चलता बना... अब आ ही नहीं रहा है..."

“ऐं, क्या कह रहा है तू !”

भोलादत्त जैसा व्यक्ति भी जैसे आकाश से गिर पड़ा हो। कहां किम व्यक्ति की लड़की का सर्वनाश कर गया? परन्तु भोलादत्त को लगा जैसे उन लोगों का ही सर्वनाश हो गया हो। यह जैसे हरिपद चक्रवर्ती की लड़की का अपमान न हो बल्कि उन लोगों का अपमान हो। पराये मुहल्ले का लड़का इस मुहल्ले में आकर उन लोगों की आंखों के सामने जो अत्याचार कर गया, यह बरदाश्त करने लायक नहीं है। उसे जना के मारे हर किसी ने एक-एक सिगरेट जलाई।

केतो बोला, “तुमने किमने कहा?”

“डाक्टर ने।”

“डाक्टर ने किससे कहा है?”

“फिर पूछ रहे हो किसने कहा! हरिपद चक्रवर्ती से कहा—लड़की के बाप से। अब बाप इस-उसके पास दौड़-धूप कर रहा है।”

“कितने महीने?”

विजय बोला, “सुनने में आया है सात महीने का। सात महीने से खीचताम चल रही है। इतने दिनों से किसी से बताया नहीं, अब नष्ट कर देना चाहती है।”

पटला बोला, “नष्ट नहीं करने दूंगा। मेरे मौमाजी को फंड मुचिपाडा थाने का ओ० सी० है, उसके बाप को पकड़वा दूंगा। और उस साले को भी पकड़वा दूंगा। अगर नष्ट कर दिया तो सभी पट्टों को जेल की हवा खिलाऊंगा...”

बेकार आचारा मुयको की जमात को जैसे कोई महान् कार्य मिल गया हो। उस दिन सोचते-सोचते उन्होंने दम पैकेट सिगरेट फूट डाली। इनके बाद मयूरभञ्ज रोड जाकर चारों व्यक्तियों ने ठरों की चार बोतलें गटक डाली। फिर भी सोच-सोचकर हैरान होने के बावजूद उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझा।

और एक बोलल जब हलफ के नीचे उतरी, भोलादत्त के दिमाग में अबल आई। बोला, “यस, उपाय निकल आया।”

सभी चिहंक उठे, “क्या? कौन-सा उपाय निकला मुहल्ले?”

भोलादत्त बोला, “उस साले को खोज निकालूंगा। वही उस आचारा साले को। साले, मुझे बेइशत करने लायक और कोई नहीं मिली, हम लोगों के मुहल्ले में आकर कप्तान बनने चले हो।”

दनदनियां तब अपने अदृश्य स्वर्ग में अदृश्य ही रहता है। उसके बारे में को आदमी माथापच्ची नहीं करता है। सृष्टिघर झंझट-झमेले के बिना माहवार किराया वसूलकर रसीद दे जाता है।

लेकिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में नियम से अधिक अनियम का ही दोलंबाला रहता है। अपवाद की वजह से ही अधिव संकट पैदा होता है। तब कहीं कोई समाधान नजर न आने पर ईश्वरप्रसाद दनदनियां को ही कोसा जाता है।

उस दिन भी लोग उसी तरह कोसने लगे।

वह एक कांड ही था।

बड़ा ही बीभत्स कांड !

पता नहीं, कैसे तो अचानक जानकारी प्राप्त हो गई। दुनिया में बहुत-से गोपनीय वस्तुओं की कैसे तो एकाएक जानकारी प्राप्त हो जाती है!

शुरू में किसी को भी मालूम नहीं हुआ, लेकिन स्त्री से सम्बन्धित रहस्य हो तो फिर दवा का दवा कैसे रह सकता है ?

हरिपद चक्रवर्ती की लड़की को देखने के लिए डाक्टर आया था। औ कोई बात होती-तो हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी डाक्टर को नहीं बुलाती। लेकिन उसके बाद से ही वह बात जाहिर हो गई।

विजय दौड़ता हुआ भोलादत्त के अड्डे पर पहुंचा। भोलादत्त, पटला, केत तब बेकार बैठे थे। सड़क की ओर उड़ती निगाहों से ताक रहे थे औ सिगरेट का कश ले-लेकर धुएं के छल्ले उड़ा रहे थे।

विजय दौड़ता हुआ वहीं पहुंचा, "गुरु सर्वनाश हो गया ! साला सर्वनाश के चलता बना।"

"कोन ? किसके बारे में कह रहा है ?"

"वही साला। वही जो खुशनुमा गाड़ी पर चढ़कर यहां आता था औ छोकरी को लेकर सैर-सपाटा किया करता था। वही साला..."

"क्या किया ?"

विजय बोला, "छोकरी का पांव भारी करके चलता बना... अब आ ही नहीं रहा है..."

... पा, कर चुकी थी। लेकिन गुम्मा अब तक दूर नहीं हुआ था।

“सर्वनाशी, मुहज्जी, तूने अपने पर तो बलक लगाया ही, साप-माप हथ पर भी लगाया। तुझमें अबल का नामानिगान नहीं है। अब मुहल्लेवालों के सामने कैसे मुंह दिखाएँ ?”

जयन्ती एक बात का भी उत्तर नहीं देती थी। बेबल गुमगुम पटी रहती थी। जैसे वह बड़ी शान्त हो गई हो। जैसे उसका ममस्त ज्ञान, समस्त विवेक सुप्त हो गया हो। आनन्द ने उसे अमपदान दिया था। कहा था, ‘तुम्हारे लिए डरने की कोई बात नहीं है, मैं हूँ ही।’

“बता, वह हरामजादा कहाँ गया ?”

जयन्ती फिर भी चुप्पी साधे रही।

“बता, वह हरामजादा कहाँ गया ? उसकी या तो खबर भेज या उसका पता दे दे, वह उसके घर पर जायेंगे। जाकर बुला लायेंगे।”

इस पर भी जयन्ती ने कोई जवाब न दिया।

“पता बता न ! कई दिनों तक उसके देन में जाकर रही और पता तुझे मानूम ही नहीं है ? तेरे लिए इतना शरमाने की क्या बात है ? किम बाप का डर है ? हम न तो उसे मारेगे-पीटेंगे, न बृष्ट करेंगे ही।”

जयन्ती सिर्फ रोती रहती थी। तक्रिये में मुह छिपाकर सिर्फ रोती रहती थी। वह कैसे कहे कि आनन्द का पता उसे मानूम नहीं है। उसे सिर्फ मिस्टर पराशर के चेम्बर का पता मानूम है। वहाँ भी जाकर जयन्ती ने पूछनाछ की थी। मिस्टर पराशर ने बताया था कि उसके बाप की कमर का बीमारी बढ़ गई है और यही वजह है कि वह आ नहीं पा रहा है।

इसके बाद अब वह कहा जाए ? जिसके पाम जाकर आनन्द का पता पूछे ? आनन्द का घर कहा है, यह भी उसे मानूम नहीं है। आनन्द ने उससे बहुत बार कहा था कि वह जयन्ती को अपने घर पर ले चलेगा, परन्तु ले नहीं गया ! अब वह कहाँ मिलेगा ?

और एक व्यक्ति है जिसके पाम जाया जा सकता है और वह है कांजीभाई देमाई ! कांजीभाई देमाई में तीन ही रातों में वह तीन मुगों की घनिष्ठता में आवल हो गई थी।

लेकिन उसका असली नाम क्या यही है ?



पुलिस ने भाकर बताया था कि कांजीभाई देसाई सोने की तस्करी करता है और रात में वापस आता है। लेकिन इन दिनों के दरम्यान उसका जाना न हो पाया। इस डाक्टर, उस डाक्टर की तलाश में दौड़-धूप करता रहा। सभी के सामने हर बात खोलकर भी नहीं कही जा सकती है। डाक्टर कहते, "देखिए, यह सब रिस्क हम नहीं ले सकते। सात महीने निकल चुके हैं..."

जो लोग इस तरह का काम किया करते हैं, उनका पता हरिपद चक्रवर्ती को गानूम नहीं था।

सुबह से शाम तक घूमते-घूमते जब वह वापस आता था तो रात काफी गहरा चुकी होती थी।

पुष्प इन्तजार में बैठी रहती थी। हरिपद के वापस आते ही पूछती, "क्या हुआ?"

"कुछ भी नहीं..." हरिपद कहता।

पुष्प गुस्से में आकर कहती, "कोई भी किसी तरह की दवा न देता है?"

हरिपद कहता, "भैंसे सो तो कहा था, लेकिन डाक्टर ने बताया कि उ मुसीबत है। इतनी देर हो चुकी है कि उससे नहीं होगा..."

"अब क्या होगा, हर कोई यही प्रश्न उछालता है। अब क्या होगा जिन्दा रख सकता है?"

पुष्प कहती, "और तुम्हारा यह मकान ऐसा है कि किसी से कुछ कहा जा सकता, किसी से सलाह-मशवरा तक नहीं किया जा सकता। कहें! इच्छा होती है कि सिर पीट-पीटकर जान दे दू..."

इस तरह बात फैल जाएगी, यह बात इन लोगों ने नहीं सोची पर निकलते ही हर कोई हरिपद चक्रवर्ती की ओर वेधक दृष्टि से ताराधा बुआ हर जगह इस बात का प्रचार किए चल रही थी। कसबन नफरत हो गई है वहन, पाप के राज्य में अब रहा नहीं जाता।

दूसरा मकान खोजने को कहा है...”

फूल भामी के मन में बड़ा ही आग्रह बना रहता था। खीद-खीदकर एक-एक बात पूछती थी। कहती, “लड़की को उलटी बगैर रह होती है, वहन ?”

राधा युआ कहती, “मानूम नहीं वहन, नफरत के भारे मेरी जान निकलने लगती है। नेडी से कहती हूँ : तेरे कारण मेरा जात-धर्म सब बरबाद हो गया ! वहाँ मैं पूजा-पाठ में व्यस्त रहती और कहा तुम मुझे इन पाप के राज्य में ले आई ..”

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान में सचमुच संकट घिर आया है। सफ़्ट यहाँ पहले भी बहुत बार था चुका है, लेकिन कभी उसका रूप इतना प्रबल नहीं था।

हिमांशु बाबू को दिल की बीमारी रहने से क्या होगा ? डाक्टर ने उन्हें उद्विग्न रहने से मना किया है। लेकिन बिना उद्विग्न हुए आदमी इस युग में कहीं जीवन जी सकता है ? आज का युग क्या निरुद्विग्न होने का युग है !

हिमांशु बाबू की पत्नी कहती, “मकान बदल डालो, मैं अब इस पाप नगरी में नहीं रह पाऊंगी। इमसे तो अच्छा है कि झोंपड़े में किसी तरह पट्टी रहूँ, मुझे दोमजिले की इस पक्की इमारत के मुख की जहरत नहीं है। एक तो ऐमा गया-गुजरा मकान और उस पर यह पाप ..”

बिजय की वाणी में प्रखरता आ गई है।

वह कहता, “तब मैंने कहा था न, कि इस लड़की का स्वभाव-चरित्र ठीक नहीं है। अब हुआ न !”

मां कहती, “तो क्या करूँ, बेटा, तू तो किसी मकान की तलाश कर सकता है !”

“अबकी सृष्टिघर आया तो मैं उसकी जान ले लूँगा...सारा दोष साले मकान-मालिक का है, जिसको-तिसको किराये पर लगाता है...असके बाद पुलिस से जाकर कहूँगा कि मैंने एक आदमी की हत्या की है...”

उस दिन शाम के अंधकार में अचानक एक कांड घटित हो गया। केतो, भोलादत्त, पट्टला और बिजय नुक्कड़ पर अड्डेवाजी कर रहे थे। एकाएक लगा, उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के सामने एक टैक्सी

खड़ी हुई।  
भोलादत्त बोला, "अरे, लगता है, वह साला आया है, वही... वह आवारा  
।"

केतो के मन में संदेह पैदा हुआ : "टैंक्सी से क्यों आयेगा ? उसके पास  
है..."

"लोगों की आंख में धूल झोंकने के लिए। गाड़ी लेकर आने से कहीं पता  
चल जाए, इसीलिए..."

अब बातचीत बन्द रहे। साले को पकड़ना है। सभी एक ही दौड़ में आए  
पर आकर गाड़ी का घेराव किया। उन्होंने देखा, वह बात नहीं थी जो  
उन्होंने सोचा था। हरिपद चक्रवर्ती, उसकी पत्नी और लड़की गाड़ी में बैठे थे  
साथ में गठरी-पेटी वगैरह थी।

सबके सब सजग हो गए।

"आप लोग कहां जा रहे हैं ?"

हरिपद चक्रवर्ती झुंझला उठा, "चाहे हम कहीं जाएं, तुम्हें बताना  
जरूरी है कि हम लोग घर जा रहे हैं !"

"चले जा रहे हैं—इसका मतलब ? नया मकान मिल गया है ?"

"तुम्हें इसकी कैफियत देनी पड़ेगी ?"

"हां, देनी है। बताइए, आप अपनी लड़की को कहां ले जा रहे हैं ?"

"खबरदार ! जबान संभालकर बातचीत करो।"

"हम लोग पुलिस बुला सकते हैं, मालूम है ?"

पुलिस का नाम सुनकर हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी बोली, "क्यों, हम लोगों  
ने क्या किया है जो पुलिस बुलाओगे ?"

भोलादत्त बोला, "पुलिस को बताएं कि आप अपनी लड़की को क  
लेकर जा रही हैं। हम आप लोगों को जाने नहीं देंगे। देखें, आप हम लोगों  
क्या कर लेते हैं ?"

अब हरिपद की पत्नी चीख-चीखकर रोने लगी, "मुहल्ले के लोग वि  
शैतान हैं ! हम लोग अपनी मरजी से बाहर भी नहीं जा सकते..."

भोलादत्त बोला, "हम लोगों को सारी बातें मालूम हैं। हम लोगों से  
छिपाने की कोशिश मत करें। किसने यह कांड किया है, हम यह म

सकते हैं।”

“फिर तुम लोग हमें जाने नहीं दोगे ?”

टैक्मी-ड्राइवर बंगाली था। यह बोला, “नाहक शमेलो बड़ा रहे हैं। उनकी लड़की है, उनकी जो मरजी होगी, करेंगे। इससे आप लोगों का क्या विगड़ता है ?”

विजय तनकर पड़ा हो गया, “हम लोगों के मुहल्ले की लड़की पर पराये मुहल्ले का लड़का अत्याचार कर जायेगा और हम डर में भाग जाएं ? हम लोगों के बदन में ताकत नहीं है ? हम उसे सचक नहीं मिछाएंगे ?”

“आप उन्हे पकड़ें तो सबक सिखाएं। हम लोगों को छोड़ दें। मैं क्या तरक खड़ा रहूं ?”

भीड़-भाड़ देखकर और भी लोग इकट्ठे हो गए। कलकत्ता शहर घेराव के लिए प्रख्यात है। यहा हर काम के लिए घेराव किया जाता है।

“यहां क्या हुआ है, साहब ?”

“देखिए न, भले आदमी लड़की को लेकर नवद्वीप भागे जा रहे हैं, वहां जाकर लड़की का एवॉरेशन करायेंगे।”

किसी एक उत्साही व्यक्ति ने झांककर लड़की को भली-भांति देखना चाहा। जयन्ती ने तब घूँघट खींचकर अपना मुँह ढक लिया था। यह जितना ही अपना मुख ढक रही थी, लोगों का आग्रह भी उतना ही तीव्र होता जा रहा था।

“देखें, लड़की का चेहरा कैसा है ! शादी न होने के बावजूद गर्भवती हो गई है ! इस तरह की लड़कियां आमगौर ने दिख नहीं पड़ती हैं। देखें-देखें, बारा और मुँह से घूँघट हटाओ, अच्छी तरह देखें।”

टैक्मीवाला डर गया। आजकल कलकत्ते की जो हालत है, सब कुछ हो सकता है। हो सकता है, मुहल्ले के लड़के कहीं टैक्मी में आग न लगा दें।

“हमारे मुहल्ले की लड़की का सतीत्व नष्ट करेगा और हम चुप रहें !”

सब कुछ सुनने के बाद एक बूढ़ा-जैसा आदमी बोला, “आप लोगों में नाम मात्र की भी हिम्मत नहीं है साहब ? उस लड़के को पकड़कर ले आइए न। वह लड़का कौन है ? कैसे खानदान का है ?”

टैक्मीवाला बोला, “मुझे पैमेंजर की खबरत नहीं है साहब ! आप लोग उत्तर जाइए, दूसरी टैक्सी ठीक कर लीजिए।”

हरिपद चक्रवर्ती टैंकसी से उतरने जा रहा था। अपनी सफाई देते हुए कहा, "मैं अल्पवेतनभोगी बादमी हूँ, भाई ! मुसीबत में फँसकर जा रहा हूँ लड़की को यहाँ रखने से बात फल जाएगी और इसका शादी-व्याह नहीं हो पाएगा..."

एक आदमी ने कहा, "जानने को बाकी ही क्या रहा साहब ?"

बूढ़े आदमी ने कहा, "वह आसामी कहां है ? ... वही जो आपकी लड़की का सर्वनाश कर गया ?"

भोलादत्त बोला, "अब वह क्यों रहने लगा ? चूस-चूसकर शहद पिया और उड़ गया।"

बूढ़े ने कहा, "बात सीरियस है और आपको मजाक सूझा है ? आप लोगों की लड़की रहती तो समझते !" फिर कहा, "अब यहाँ से भागकर ही क्या करेंगे ?"

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "आप चतुर आदमी हैं, आप ही उपाय बताइए।"

हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी अन्दर से बोली, "तुम्हारे चलते ही यह सब हुआ। मैंने तब कहा था : यह मकान छोड़ दो, यह मुहल्ला छोड़ दो, सो तो उस वक्त सुना ही नहीं।"

"तुम खामोश रहो।"

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "देख रहे हैं न, इस औरत की बात सुन ली न !।हने से ही क्या मकान मिल जाता है ? आजकल पैसा देने से ही मकान मिल जाता है ?"

भोलादत्त ने कहा, "आप लोग घर छोड़कर क्यों जा रहे हैं ? इसी मकान की भरममत् कराकर रहिए। उस साले मकान-मालिक का हम घेराव करेंगे। बताइए, मकान-मालिक कहां रहता है ?"

बूढ़े ने कहा, "सो सब वाद में होगा, अभी आप लोग कहां जा रहे हैं, यही बताइए !"

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, "देस ?"

"फालतू बात है !" विजय ने कहा।

"सोचते हैं कि हमें मालूम ही नहीं है ?"

“मेरे साले नवद्वीप आए हुए हैं, वहीं जा रहा हूँ ?” हरिपद चक्रवर्ती ने बताया ।

“सारी फालतू बातें हैं । हम लोग जाने नहीं दोगे । उतर जाइए । आप लोग सभी उतर जाइए । आप लोगों को इमी मकान में रहना पड़ेगा ।”

भीड़ तब खासी तपड़ी हो गई थी । सभी तब जानने को आप्रहशील थे, “क्या हुआ है साहब ? यहाँ क्या हुआ है...?”

भोलादत्त ने बिगड़कर कहा, “यहाँ से हटिए... हट जाइए । क्या देख रहे हैं ? तमाशा है !”

हरिपद चक्रवर्ती ने कहा, “अब क्या करूँ साहब ? उफ, मैं बड़ी मुसीबत में फँस गया । मैं अल्पवेतनभोगी आदमी हूँ...”

भोलादत्त ने कहा, “उतर आइए और क्या कीजिएगा ! हम लोग आनको मुसीबत से उबारेंगे । हम लोग इस मुहल्ले के लड़के हैं । हम लोगों के रहते आपने पराये मुहल्ले के लड़के को घर में घुसने दिया...”

“लेकिन मेरी लड़की ? मेरी लड़की का क्या इन्तजाम होगा ?”

भोलादत्त ने कहा, “होगा; इन्तजाम किया जायेगा । हम लोग जब हैं तो कोई न कोई इन्तजाम कर ही देंगे ।”

“क्या इन्तजाम कीजिएगा ?”

भोलादत्त ने कहा, “हम लोग इतने आदमी हैं और कोई इन्तजाम नहीं होगा ? आप क्या कह रहे हैं ? आप किसके डर से भागें जा रहे हैं ? आदमी के डर से ? वहाँ भी तो लोग आपकी हानि कर सकते हैं । लोगों से आपको छुटकारा कैसे मिलेगा ?”

हिमाशु बाबू दिल के दोरे के धावजूद खिडकी से झाँककर सब सुन रहे थे । विजय की पत्नी गोपा भी दोमजिले की एक खिडकी के किनारे खड़ी होकर सब सुन रही थी ।

राधा बुझा सुन रही थी । भवदुलाल सुन रहा था । हर कोई सुन रहा था ।

एक-एक कर सभी फिर से टँकसी से नीचे उतर आए । पहले हरिपद चक्रवर्ती उसके बाद उसकी पत्नी । सबसे आखिर में हरिपद चक्रवर्ती की पत्नी संपूर्ण चेहरे को घूघट से ढके नीचे उतरी । सभी एक-दूसरे को धक्का देते हुए

देखने के लिए आगे बढ़ आए ।

बूढ़े आदमी ने जयन्ती की ओर देखते हुए कहा, "जाओ बेटी, अन्दर चली जाओ । डरने की कौन-सी बात है !"

भोलादत्त ने सभी को जोरों से झिड़का, "साले, तुम लोगों को मार डालूंगा । साले, अपनी मां-बहन की ओर आंख गड़ाकर नहीं देख सकते हो ?"

उसके बाद भोलादत्त बगैरह ने खुद गठरी-पेटी आदि चीजों को अपने-अपने हाथों में उठाया और तीनमंजिले पर ले आए ।

टैक्सीवाले ने कहा, "मेरा किराया ? इतनी देर का वैटिंग चार्ज ?"

"किराया-विराया नहीं मिलेगा । चले जाइए ।"

टैक्सी-ड्राइवर को और कुछ कहने का साहस न हुआ । इतने आदमी हैं । गनीमत है कि टैक्सी में आग नहीं लगाई । इसके बाद किराये की मांग करके उसने झमेला बढ़ाना नहीं चाहा । इंजिन स्टार्ट कर घुमा उगलता हुआ आंखों से ओझल हो गया ।

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन में संभवतः एक ऐसा आकर्षण है जिसे अलगाया नहीं जा सकता । पुण्य का आकर्षण है, पाप का आकर्षण है । विरह का आकर्षण है, मिलन का आकर्षण है । यहां रहने में जिस तरह सभी अनिच्छुक हैं उसी तरह से इसे त्यागने में भी अनिच्छुक । यह ठीक वैसे ही लगता है जैसे रहना और त्यागना दोनों तकलीफदेह है । हरिपद चक्रवर्ती और उसके परिवार के लोग बहुत सोचने-विचारने के बाद इस निर्णय पर पहुंचे थे वे यहां से निकलकर उस जगह चले जाएंगे जहां दोनों आंखें ले जाएं । लेकिन यह संभव नहीं हो पाया । उन्हें रुकना पड़ा ।

भोलादत्त बोला, "साला भागकर कहां जाएगा ! मैं देख लूंगा । साले की उस खुशामा गाड़ी को पकड़कर चूर-चूर कर डालूंगा । तभी मेरा भोलादत्त नाम सार्थक होगा ।"

लेकिन कलकत्ता शहर में किसको किसका पता चलता है ? यहां जितने मनुष्य हैं उससे ज्यादा अमनुष्य । यहां जितने अमनुष्य हैं उससे ज्यादा हराम-

छादे। यहाँ वैसे ही हरामजादों की भोज में वह आदमी खो गया है जिसकी हड्डियों में शैतानी भरी हुई है। किसकी तलाश करे? कहां तलाश करे? कौन बताएगा कि आर्टिस्ट-मप्लाइंग के कमीशन-एजेंट आनन्द राय का मकान कहा है?

एक आदमी पास आकर खो गया तो खो जाने दो। जयन्ती बहुत सस्ते में मिल गई थी, हालांकि उसे कुछ ज्यादा ही हपये मिल गए थे।

लेकिन एकाएक एक सहूलियत हासिल हो गई। सहूलियत हासिल न हो तो आनन्द राय का चले कैसे? उसे भी तो खाना-पहनना है।

काजीभाई देसाई दो महीने के बाद फिर कलकत्ता पहुंचा। कमीशन-एजेंट की पुकार हुई।

आनन्द फिर स्ट्रैंड होटल में आकर उपस्थित हुआ।

अबकी काजीभाई देसाई नहीं बल्कि दूसरा ही नाम है। अबकी दो सौ बारह नंबर रूम को मिस्टर रमणलाल पाटिल ने बुक कराया है।

“मैं आपकी ही तलाश में था। उन लोगों ने बताया कि काजीभाई देसाई नाम का कोई भी व्यक्ति नहीं आया है। मैं वापस जा रहा था सर, फिर भी सौबा दो सौ बारह नंबर रूम एक बार देख जाऊं।”

देसाई जी ने कहा, “अपने पाटनर के नाम से रूम बुक कराया है, इमीलिए खाते में मैंने यही नाम लिखा है। हां, तो मेरी आर्टिस्ट कहां है? मेरी बही आर्टिस्ट!”

आनन्द ने कहा, “अबकी आपको एक दूसरी आर्टिस्ट दूंगा, सर!”

“क्यों उस आर्टिस्ट को क्या हुआ?” देसाई ने पूछा।

“उसकी बात मत करे, सर। उस बार वह टाइट एट्रीन थी, अबकी आपको फाइन नाइटीन दे रहा हूँ—बिलकुल मुपरफाइन...”

“नहीं-नहीं; मुझे मुपरफाइन नहीं चाहिए वही टाइट एट्रीन अच्छी है।”

“मगर, सर, उसके साथ एक परेशानी है?”

“क्या?”

“वह प्रेगनेंट हो गई है। बिलकुल बेवकूफ लड़की है, ब्रिवांजन नहीं लिया, अब फ्लैट पड़ गई...”

“फ्लैट का मतलब?”





घलो । मैं खुद जाकर अपने हाथों से पैसा दे आऊंगा ।”

आनन्द बोला, “नहीं सर, यह नहीं हो सकता । आप ठहरे काम के आदमी, आर्टिस्ट के घर पर क्यों जाइएगा ? आपकी भी तो कोई प्रेस्टिज है !

क्या नहीं है ! इसके अलावा वे लोग क्या आदमी हैं सर ? आदमी नहीं

शर्मा बोला, “कहने का मतलब यही है कि मैं उसे कुछ रुपया दूंगा ही, इट गिव हर सर्माथिंग एंड कपेन्सेशन । मेरे विवेक को चोट पहुंची है... रुपया मिलेगा, राय, यह मत सोचना कि मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दूंगा ।”  
“उसे कितना मिलेगा, सर ?”

पछली बार मैंने कितना दिया था ?”

“ई हजार नेट । तीन दिनों के लिए...”

“ठीक है, अबकी वन-थर्ड दूंगा ।”

आनन्द ने मन ही मन हिसाब लगाया कि ढाई हजार का वन-थर्ड कितना

कि याद बोला, “ठीक है सर, मैं आज ही शाम को आर्टिस्ट को लाकर आने हाजिर करूंगा ।”

ना कहकर आनन्द राय स्ट्रैंड हांटल के दो सौ बारह नंबर कमरे से आहिस्ता बाहर आया और बायें हाथ से दरवाजे को धीचकर बन्द

प्राय का खाता लिए बैठे हैं ।

शु बाबू ने हिमाच में जीवन की शुरुआत की थी । और न केवल शु ने बल्कि हर किसी ने । काजीभाई देसाई ने हिसाब से शुरुआत की ? उसने भी हिसाब करके देखा है, किस दर में सोना खरीदकर में बेचने का क्या लाभ होगा । हिसाब करके देखा है, कितना रुपया रहेगा और कितना काला घन । हिसाब करके यह भी देखा है कि कितना कमाने से लड़कियों के पीछे कितना पैसा खर्च किया जा सकता है

लेकिन एकाएक यहां इस कलकत्ते में उसके हिसाब में भी कोई गड़बड़ी रह गई। अचानक उसे लगा, यह हिसाब क्यों नहीं मिल रहा है ! डेबिट-क्रेडिट का बैलेन्सशीट इस तरह क्यों गड़बड़ा गया ?

रणवीर के सामने उस वक्त भी वाउचर का पहाड़ खड़ा था। आंखों के आंसू का पहाड़ अगर हो सकता तो गणित का पहाड़ क्यों नहीं होगा ?

वाउचरों को अपने सामने रखकर रणवीर फिर से हिसाब करने लगा। जन्म, मृत्यु और विवाह का हिसाब। रणवीर के पिता, माता सभी ने एक दिन इसी तरह अपने सामने वाउचरों को रखकर हिसाब लगाया था। डेबिट-क्रेडिट का बैलेन्सशीट तैयार किया था। जब हिसाब नहीं मिल सका तो दुबारा हिसाब किया, फिर से वाउचरों को सामने रखकर बैठा और गिनना शुरू किया—पांच साते पैंतीस का पांच, हासिल रहा तीन...

लेकिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का विधाता निर्विकार है, निरंकुश, अदृश्य, अलभ्य, अवाङ्मनसोगोचर। वह जितना भयंकर है उतना ही आनन्दस्वरूप। उसके सामने जिस प्रकार मनुष्य की निरंतर प्रार्थना स्तुति के गीतों में गूंजती रहती है, उसी प्रकार वह अपनी इच्छा को व्यक्त करने में निरासक्त है—स्वयं के नियम के आनन्द से उदासीन। यही कारण है कि कोई उसे अत्यन्त दयालु कहता है, कोई भोलानाथ। विश्व की सृष्टि की अमोघ नीति के कारण वह सभी स्थानों में विराजमान है, सभी जीवों में निवास करता है लेकिन उसके साथ-साथ वह अव्यक्त भी है। उसे छुआ नहीं जा सकता, फिर भी उसका अस्तित्व है। उसे देखा नहीं जा सकता, फिर भी वह दृश्यमान है।

इसीलिए हरिपद चक्रवर्ती जब फिर से तीनमंजिले में लौट आया और दैनंदिन जीवन-यातना के आघातों से बेतरह परेशान हो उठा तब मालिक फिर से याद आया। मालिक यानी ईश्वरप्रसाद ढनढनियां। वह मालिक कहां है ? उस मालिक के आने से ही इशका हल निकलेगा। मालिक के आने से ही उन लोगों को चैन मिलेगा।

"साला, हरामजादा मकान-मालिक ! अबकी सृष्टिघर आया तो उसके मुंह पर झाड़ू न मारूं तो मैं ब्राह्मण की बेटी नहीं..."

लेकिन गुस्सा उतारा जाए तो किस पर ? गुस्सा करने से कौन सुनता है !

राधा चुप्पा कहती, "घर में पाप आकर समा गया; अब तकदीर में क्या लिखा है, कीन जाने..."

हिमांगु बाबू के सीने का दर्द फिर से बढ़ गया है। फिर भी दर्द की हालत में ही कहते, "सृष्टिघर आया?"

पत्नी कहती, "सृष्टिघर आए, चाहे न आए इसने तुम्हारा क्या? तुम रोभी आर्दमी ठहरे, सुपचाप लेंटे रहो।"

हिमांगु बाबू कहते, "सुपचाप कैसे पडा रहू? जरा बातचीत करना भी रोप है?"

"सुनू तो सही, तुम क्या बात करना चाहते हो? कहने में कहना इतना ही है कि मरान-मालिक आया या नहीं? मरान-मालिक के आते ही सब दुःख दूर हो जाएगा? मरान-मालिक के आ जाने से ही तुम्हारी दिल की बीमारी दूर हो जाएगी?"

हिमांगु बाबू कहते, "अगर मरान का जीना अच्छा रहना तो मुझे दिल की यह बीमारी नहीं होगी। यह मरान ही तमाम अन्तर्गतों का मूल है। मरान-मालिक आना तो उभे सारी बातें समाप्त कर देगा..."

यह न केवल हिमांगु बाबू की बात है बल्कि हर किसी की यही बात है। विद्वय भी यही कहता है, राधा चुप्पा और भवदुलाह भी यही बात कहते हैं। हरिपद चण्डर्वी, उगरी पत्नी, जयन्ती, नेत्री—सबके सब यही एक एक बात की दुहराते रहते हैं।

जिसे दिन में हरिपद चण्डर्वी बर्गेशहू टैंकमी ने उत्तरकर फिर से तीन-चिट्ठे पत्र लौट आए हैं, उसी दिन में उनतीस बटे तीन बटे छह मीलमनि हालदार लेन को बेन्द्र मानकर नये गिरे से पत्रों-वरिचों पत्र रही है। पहले गुरु जयन्ती गधेरे के वारा एकमचिट्ठे पर आकर पानी ले जाया करती थी। उस दिन में उसने आना बन्द कर दिया है। उस दिन में हरिपद चण्डर्वी की पत्नी भीष अती है और खुपके से नन्द में पानी ले जाती है। हरिपद चण्डर्वी की उद्यान में फले जो तेरी थी, यह कम हो गई है।

राधा चुप्पा कहती, "तेरी रहे तो बंसे? तेरी रहने के लायक मुह रह गया है? अब तेरी दिशाणा तो लोग हालत गराक कर देंगे।"

हिमांगु बाबू की पत्नी कहती, "हिमांगु बड़ा पडा गया था। दरिहारी

मधुमूदन आदमी का घमंड चूर कर देते हैं।”

फूल भाभी कहती, “राधा दी, अब वह छोकरी क्या करती है ?”

“करेगी क्या वह, सारा दिन मुंह लटकाए पड़ी रहती है।”

“अब सड़क पर निकलती है ?”

राधा बुआ कहती, “वैसा पेट लेकर कैसे निकलेगी। निकलने में शर्म नहीं मान्नुम होती है ?”

“तो हया-शर्म अभी तक है ? इधर उस शर्म के कारण हम अधमरी हो गई हैं राधा दी...”

रफता-रफता लोगों को और भी मजा आने लगा। मानी, उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के उस मकान के कारण मुहल्ले के लोगों को नींद ही नहीं आती है। छोकरी क्या कर रही है, क्या सोच रही है, क्या खाती है—इसकी मजेदार चर्चा मुहल्ले के लोगों के हर अड्डे में चलने लगी। बच्चा होने पर कहां-होगा, किस होटल में ?—यह चर्चा भी चली।

भोलादत्त वगैरह छिप-छिपकर दिन-रात पहरा दे रहे थे। कोई डाक्टर जाता हुआ दिखता तो ध्यान से देखते कि किस मकान में जा रहा है। कोई टैक्सी जाती तो गौर से देखते कि किस मकान के सामने जाकर खड़ी होती है। वे वारी-वारी से पहरा देते थे। रात में मयूरभंज रोड न जाकर उस नुक्कड़ पर ही वारी-वारी से ठर्रा पीकर लौट आते थे।

आकर अड्डेबाजी करते थे और हिसाब लगाते थे : जीवन का हिसाब, जवानी का हिसाब, अन्याय, अत्याचार, अपव्यय का हिसाब, मीज-मस्ती और आवारागर्दी का हिसाब। उन लोगों के हिसाब का फारमूला ही कुछ और था। तेजी ज़रा कम हो जाए, लहू थोड़ा ठंडा हो जाए, तब देखने में आएगा कि वे ही हिसाब कर रहे हैं : पांचसाते पैंतीस, हासिल रहा...”

उस दिन सवेरे-सवेरे सृष्टिधर पकड़ में आ गया।

सृष्टिधर और ही दिनों की तरह उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान में आ रहा था। रास्ते में भोलादत्त ने पकड़ा—

“कहां जा रहे हो बेटे सृष्टिधर ?”

“हुजूर, मालिक के घर में...”

“क्यों ?”

“और करने ही क्या जाऊंगा, किराये के लिए तकाजा करने जा रहा हूँ।”

“देखना, होगियार रहना, हम लोग यहां बंटे-बंटे पहरा दे रहे हैं, तीन-मंजिल से अगर कोई निकलकर भागना चाहेगा तो उसे घर दबाएंगे।”

सृष्टिधर अब कुछ जानता है, सब कुछ देख चुका है, सुन चुका है। वह बोला, “आप लोगों के लिए हरने की कोई बात नहीं है हज़ूर, किराया वमूल कर मालिक को भेज देने के बाद मैं निश्चिन्त हो जाऊंगा।”

“तुम्हारा मालिक कब आ रहा है? तुम्हारा मालिक बिल्कुल भगवान हो गया है क्या?”

सृष्टिधर के चेहरे पर मुमकराहट फँल गई, “अबकी सचमुच आ रहे हैं हज़ूर, यही बात कहने आया हूँ। देखिए, यह उनकी चिट्ठी है।”

धीरे सृष्टिधर ने एक चिट्ठी निकालकर दिखाई। चिट्ठी में क्या लिखा है, यह किसी ने नहीं देखना चाहा। इसलिए उसने चिट्ठी को फिर से जेब के अन्दर डालकर रख लिया।

“मालिक ने कहा है कि अबकी मकान को नये सिरे से मरम्मत करा देंगे। जीना मरम्मत करायेंगे, दीवार में पलस्तर लगवायेंगे, छिडकी, दरवाजे और पलस्तर को रंगवा देंगे, सब कुछ मरम्मत करा देंगे। अबकी किसी की कोई शिकायत नहीं रहेगी, हज़ूर!”

भोलादत्त ने पूछा, “तुम्हारे मालिक कब आ रहे हैं?”

“कड़

काजी आदमी है। सिर्फ़ उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान की देखरेख करने से उसका काम नहीं चल सकता। दुनिया में उसके और भी बहुत सारे मकान हैं। दुनिया के आदमी उत्सुकता के साथ ईश्वरप्रसाद ढनढनियां के इन्तज़ार में बैठे हैं। उससे मुलाकात होना क्या इतना आसान है! जप-तप-साधना करने से भी उसकी प्राप्ति नहीं हो सकती है।

सभी ने राहत की सांस ली थी और सोचा था कि मकान-मालिक आएगा। भोलादत्त, केतो, पटला सभी प्रतीक्षा कर रहे थे। त्रिजय भी तत्पर था।

दूसरे दिन अचानक एक टैक्सी उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान के सामने आकर रुकी। टैक्सी का किराया चुकाकर आनन्द चुपके-से नीचे उतरा। एकाएक भोलादत्त ने पीछे से उसके गले को धर दबाया।

“क्यों साले, फिर आए हो?”

आनन्द राय इसके लिए कतरई तैयार न था। पीछे मुड़ने पर इतने गुंडों पर दृष्टि पड़ते ही वह चिहंक उठा।

“मुझे क्यों मार रहे हैं? मैंने क्या किया है?”

दुनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन का यह मकान एक अजीब ही दुनिया है। यहा कोई न कोई हलचल हर रोज़ लगी ही रहती है।

“क्या हुआ साहब, इस मकान में फिर क्या हुआ ?”

भवदुलाल कुल मिलाकर तब दफ्तर से घापस आया था। उसकी पत्नी को फिर से बच्चा होने वाला है। डाक्टर के पास आना-जाना लगा रहता है। सातवें के बाद यह आठवां है। आठवीं बार भी पहली बार की तरह ही घोर चिन्ता लगी हुई है ? “क्या हुआ है वहा ? भोर-गरावा क्यों मचा है ?”

“उसी लड़के को वे लोग पकडकर ले आए हैं और तीनमजिले की तरफ ले जा रहे हैं।”

“भार-पीट रहे हैं ?”

“मानूम नहीं। गुडे हैं गुडे। इन मकान को छोडने पर ही जान बचेगी।”

हिमानु यावू के सीने का दर्द शान्त था। बरबट लेकर पृछा, “वहां भोर-मुल क्यों हो रहा है ?”

उधर जीने पर घबरा-मुबरा लगाता हुआ भोलादत्त आनन्द को तीनमजिले की तरफ ले जा रहा था, “चलो साले, मजा चखाता हू, पराये मुहल्ले का हाकर हमारे मुहल्ले की लडकी से ...”

पीछे-पीछे बहुत-से आदमी तमाशा देखने के लिए ऊपर की ओर गए। वे लोग भी देखेंगे कि भोलादत्त क्या करता है, ऊपर क्या वाक्या होता है ...

श्रमिम सीढ़ी पर पहुंचकर भोलादत्त दरवाजे की कुडी घटाघटाने लगा, “मोगीजी, मोगीजी...”

मुद्रा ऐसी थी जैसे किसी राज्य को जीतकर छोटा हो। जैसे हर कोई जयन्ती की शुभांशुता का अधिकारी हो। जैसे जयन्ती की भलाई किए बिना उन लोगों का घाना हजम नहीं हो रहा है, हिसाब नहीं मिल रहा है। हासिल कुछ भी नहीं बच रहा है।

रणवीर चाहे साध कोशिश करे, हिसाब किसी भी हालत में नहीं मिलेगा। हिसाब किसी का मिलना भी नहीं है। हिसाब मिलनेवाली चीज है ही नहीं।



रणवीर के बाप का हिसाब नहीं मिला था, फिर रणवीर का ही हिसाब क्यों मिलेगा ?

डेबिट-क्रेडिट अगर मिल ही जाता तो नीलमणि हालदार लेन के उनतीस बटे तीन बटे छह मकान की शकल कुछ और ही होती। उनतीस बटे तीन बटे छह मकान का डेबिट-क्रेडिट और ही तरह का होता। उसके हिसाब के खाते में लिखा हुआ होता—पांच साते पैतीस, पैतीस का पांच हासिल रहा...

मगर वह बात अभी रहे।

इधर दूसरे ही दिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन की शकल देखकर रास्ते के लोग विस्मय में डूबने-उतराने लगे। शाम होते ही मकान की छत पर रोशनियां जल उठीं। मंडप तैयार किया गया। भोलादत्त वगैरह ने विराट् आयोजन किया। वे कहीं से पुरोहित बुला लाए। मसालेदार कचौरियां छन रही हैं, शींगा मछली का फ्राइ हो रहा है। वँगन का भुजिया, कोंहड़े की सब्जी, मिठाई। कुछ भी छोड़ा नहीं गया है। हरिपद चक्रवर्ती अल्पवेतनभोगी आदमी है। शुरू में ज्यादा खर्च करने की उसे इच्छा नहीं थी। लेकिन अंततः उसे कर्ज लेना ही पड़ा और कर्ज के पैसे से ही सारा आयोजन किया गया है। विवाह-मंडप में एक ओर जयन्ती बंठी हुई है, दूसरी ओर आनन्द। भोलादत्त ने चिल्लाकर कहा, “बोलो साले, मंत्र का उच्चारण करो... यदिदं हृदयं तव, तदिदं हृदयं मम...”

सारी रात वर को अटकाए रखा तब शादी हो रही है। आनन्द ने कहा था, “मैं गरीब आदमी हूँ, शादी कर मैं खर्च नहीं चला पाऊंगा, पत्नी को खाना-कपड़ा नहीं दे पाऊंगा। मेरे पिताजी कैंसर के मरीज हैं, मेरी बहन को पोलियो है...”

तब छत पर मंडप के तले विजय गरम-गरम मसालेदार कचौरियां परोस रहा था, “आपको और मसालेदार कचौरी दूँ, भैया ?”

दोमंजिले के हिमांशु वावू के सीने का दर्द फिर से बढ़ गया। बोला, “अजी, सुनती हो, डाक्टर को जरा खबर भेजो, मेरी छाती घड़क रही है।”

नीचे एकमंजिले पर नेड़ी चिल्लाई, “मां, ओ मां...”

राधा बुझा बोली, “क्यों री, दर्द उठा है क्या ? दाईं बुलाऊं ?”

ऊपर मंडप बनी छत पर बग्यादान की रस्म पूरी हो गई। हरिपद चक्रवर्ती ने बग्यादान की रस्म की। उसके बाद है कोहबर, उसके बाद...

"वहां है! अरे, मृष्टिघर वहां है? मृष्टिघर?"

रणवीर तब भी बाठवर लेकर हिसाब लिए जा रहा है। गणित का पहाड़। बांघों के बांघू का पहाड़ हो सकता है तो गणित का पहाड़ क्यों नहीं होगा? रणवीर आज जिम तरह हिमाव कर रहा है, रणवीर का बाप भी एक दिन उसी तरह हिमाव करना था। रणवीर की मां ने भी हिसाब किया था। लेकिन कहां, किमी का हिमाव वहां मिला? फिर रणवीर का ही हिमाव क्यों मिलेगा?

फिर भी दुनिया में हिमाव का मिलमिला बन्द नहीं होगा। रणवीर, रणवीर का बाप, उसकी मां, हरिपद चक्रवर्ती, भवदुलाल, राधा चुआ, विजय, भोला-दत्त, पटला, काजीभाई देमाई, सभी हिमाव करने ही रहेंगे। चाहे हिमाव मिले, चाहे न मिले। हर कोई बहेगा: पांच माते पैनीम, पैनीम का पांच हागिल रहा।

मृष्टिघर तब एक बौने में बंटा हुआ बंगन के भूजिया के माय मगालेश्वर कचोरी या रहा था। "मैं यहाँ हूँ..." उमने कहा।

"तुम्हारा मालिक वहाँ है?"

"यदिदं हृदयं नव, तदिदं हृदयं मम..."

"देखिए, मैं मरीच आदमी हूँ, भादी कर घबं चलाना मेरे लिए मुश्किल है, पत्नी को घाना-कपटा नहीं दे पाऊंगा। मेरे पिताजी कमर के मरीच हैं, मेरी बहन को पोसियो है..."

"साले, तुम पराये मुहल्ले का होकर मोज करके चले जाओगे और हम लोग चुप रहें? बोल साले, मंत्र का उच्चारण कर..." यदिदं-हृदयं तव, तदिदं हृदयं मन...

"आपको और एक चाँप दू भैया?"

"साले, मेरे मौमाजी का दोस्त मुन्हीपाड़ा के घाने का ओ० नी० है! हम लोगों में चालाकी करने चला है!"

"दही, दही चाहिए?"

"देखिए, मैं भादी करके घबं नहीं चला पाऊंगा। मेरे पिताजी कमर के मरीच हैं, मेरी बहन को पोसियो है..."

“अरे सृष्टिधर, तुम तो भाई कुछ खा ही नहीं रहे हो; लो, और ए रसगुल्ला लो।”

‘यदिदं हृदयं तव, तदिदं हृदयं मम...’

‘पांच साते पैतीस, पैतीस का पांच, हासिल रहा तीन...’

‘बोल साले, मंत्र का उच्चारण कर...’

उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान का मालिक उस दिन भी नहीं आया। जन्म, मृत्यु, विवाह की जटिलता के बीच जब दुनिया संकटग्रस्त थी, सभी उसके आने की प्रतीक्षा करते-करते थक गए, तब भी वह नहीं आया। हो सकता है, वह कभी आए ही नहीं। सृष्टिधर ने खाते-खाते कहा “अचानक वह हांगकांग चले गए हज़ूर, मेरे पास तार आया है...”

मालिक भले ही न आए, परन्तु उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मकान की दैनंदिन जीवन-यात्रा में कभी कोई अवरोध पैदा नहीं हुआ है। ऊपर जब मंडप बनाकर हरिपद चक्रवर्ती की लड़की की शादी हो रही है शंख बज रहा है, सभी खान-पान कर रहे हैं, दोमंजिले पर तब हिमांशु बाबू के सीने का दर्द बढ़ रहा है। डाक्टर आ चुका है, कोरामिन और आक्सिजन दिया जा चुका है और नीचे के एकमंजिले में भवदुलाल के एक और लड़का हुआ है। यह आठवीं सन्तान है। किसी के किसी काम में अवरोध पैदा नहीं होता। ईश्वरप्रसाद उनदनियां चाहे कलकत्ते में रहे, चाहे हांगकांग में, उससे चलते जीवन-यात्रा के क्रम में कोई व्यतिक्रम नहीं आता। इसी तरह जब यह गड़बड़ी टल जाएगी, जिस दिन तमाम मनहूसियत की छाया हट जाएगी, उस दिन हो सकता है ईश्वरप्रसाद उनदनियां की फिर से खोज-पड़ताल हो, लेकिन उनतीस बटे तीन बटे छह नीलमणि हालदार लेन के मालिक के पास इतना वक्त नहीं है कि वह यहां आवे। आकर पाखाने की सीढ़ी की मरम्मत कराए, रसोईघर की छत का सुराख ठीक कराए, दीवार में सफेदी कराए और तमाम शिकवा-शिकायत और अभावों को दूर कर दे ताकि सभी राहत की सांस ले सकें

और रणवीर तब भी हिसाब करता रहेगा : पांच साते पैतीस, पैतीस का पांच हासिल रहा...

